₹ 15

हिन्दी भाषियों की साहित्यिक पत्रिका

क्रान्ति

सितम्बर 2012

- पूंजीवादी दानव की पहचान
  –अरुंधति राय
- आज़ादी का मंतव्य क्या है ?
  –डॉ॰ प्रीत अरोड़ा
- मुहम्मद (स॰) और बाज़ार-नियमन
  –डॉ॰ फ़रहत हुसैन
- आज के नेता और राजनीति
  –डॉ॰ रमाशंकर जैतली

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

KANTI Monthly

Mechanical Data

Over all size	24 x 18
Printed area	21 x 16
Length of the columns	21 cm
Width of the columns	7.5 cm
Number of columns in a page	2
Printing Process	offset

Subscription *(in India)*

1 year	₹ 160.00
2 years	₹ 300.00
3 years	₹ 450.00
5 years	₹ 700.00
Life membership	₹ 6,000.00

Overseas	1 year	60.00 (Saudi Riyal)

Advertisement Tariff Kanti Monthly

	Colour	B/W
Back Page Title	₹ 10,000.00	- N. A. -
Inner Title	₹ 8,000.00	- N. A. -
Inner Page	- N. A. -	₹ 5,000.00
Half Page (Inner)	- N. A. -	₹ 2,500.00
Quarter Page	- N. A. -	₹ 1,500.00

Advertisement Tariff Kanti Weekly & Kanti Monthly

(for special issues in magazine size)

Back Title	Colour	₹ 15,000.00
Inner Title	Colour	₹ 10,000.00
Inner Page	Colour	₹ 8,000.00
Full Page Inner	B / W	₹ 5,000.00
Half Page Inner	B / W	₹ 3,000.00
Quarter Page Inner	B / W	₹ 2,000.00

Payment: All payments are to be made in advance by cash, cheque & demand draft.

Material Deadline: Advertisment material should reach to us at least one week in advance and can be sent by email/CD. The advertisement will appear in Kanti print edition subject to acceptance and position availability. For further details contact manager KANTI Weekly/Monthly e-mail: kantimasik@gmail.com

cheques and Draft be made in favour of "KANTI"

Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi 110 025

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 22 अंक 3 सितम्बर 2012

ऐ नबी उनसे कहो क्या हम तुम्हें बताएं कि अपने कर्मों में सबसे अधिक असफल और घाटा उठाने वाले कौन लोग हैं। ये वे लोग हैं जिनका प्रयास सांसारिक जीवन में अकारथ गया और वे यही समझते हैं कि वे बहुत अच्छा कर्म कर रहे हैं। –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

फोन–(011)–26949430

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 15/- विशेषांक रु० 25/-

वार्षिक रु० 160/-, दो वर्ष 300/-, पांच वर्ष 700/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–60 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–25 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

वह करता उद्धार स्वयं की

जीने को तो जीते हैं सब जीव यहां ।
जीवन उसका ही, जो जग में जाग गया ।

श्वासों का आना-जाना ही जीवन क्या,
खाना-सोना मर जाना ही जीवन क्या
वह ही उसका सूर्योदय उल्लास भरा,
मोह-निशा का तम जिस जन को त्याग गया ।
जीवन उसका ही, जो जग में जाग गया ।

नहीं जलाशय सलिल स्वयं ही पीते हैं
जड़ हैं, फिर भी तरु का परहित जीते हैं,
सूर्य-चन्द्र क्या, तारे भी तो करते हैं,
नित्य-निरन्तर अखिल लोक हित त्याग नया ।
जीवन उसका ही, जो जग में जाग गया ।

होता है जयगान सदा बलिदानों का,
करते हैं सम्मान सभी अवदानों का,
मूल्य भला क्या उसका होगा जीवन में,
जो कायर कर्तव्य छोड़ कर भाग गया ।

जो प्रमाद से नहीं स्वयं को छलता है,
जो दीपक की भांति जगत में जलता है,
वह करता उद्धार स्वयं का पौरुष से
बन जाता धरती का सुखद सुहाग नया ।
जीवन उसका ही, जो जग में आग गया ।

भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'

'साहित्य मण्डप', चन्द्रलोक कालोनी,

शहज़ादपुर, अकबरपुर, अम्टेडकर (उ०प्र०)



कहां क्या है ?

वह करता उद्धार स्वयं की	–भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'	3
क़ुरआन ज्योति		5
हदीस मंजरी		6
अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण (संपादकीय)		7
ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण (आपके पत्र)		8
ग़रीबी रेखा नहीं, अमीरी रेखा बननी चाहिए	–रोशल लाल अग्रवाल	11
सत्य का विरोध (जीवन आदर्श)	–माहिरुल क़ादिरी	13
आज़ादी का मंतव्य क्या ?	–डॉ॰ प्रीत अरोड़ा	19
इस्लाम और पश्चिम जगत	–मरयम जमीला	21
आओ ऐसे दीप जलाएं (कविता)	–अभिराम सत्यज्ञ जयशील	23
चिड़चिड़े (कविता)	–ओम प्रकाश बजाज	23
नेता जी (कविता)	–डॉ॰ अर्चना रानी वालिया	25
पूंजीवादी दानव की पहचान (विशेष आयोजन)	–अरुंधति राय	26–27
आर्थिक जीवन के विविध पक्ष और इस्लाम	–मुहम्मद क़ुत्ब	33
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) और बाज़ार-नियमन	–डॉ॰ फ़रहत हुसैन	38
रात का सफ़र (कहानी)	–इक़बाल अंसारी	41
आज के कथित नेता और उनकी राजनीति	–डॉ॰ रमाशंकर जैतली	43
क्या लोगों की धार्मिक आस्था एवं विश्वास पर कुठाराघात 'देशद्रोह' नहीं है ?	–तीर्थ सिंह आर्य	45
संदेश प्रकृति (कविताएं)	–शील निगम	49
वहम (कविताएं)	–ओम प्रकाश बजाज	49
तरह-तरह की दौड़ (बालवीथी)		50

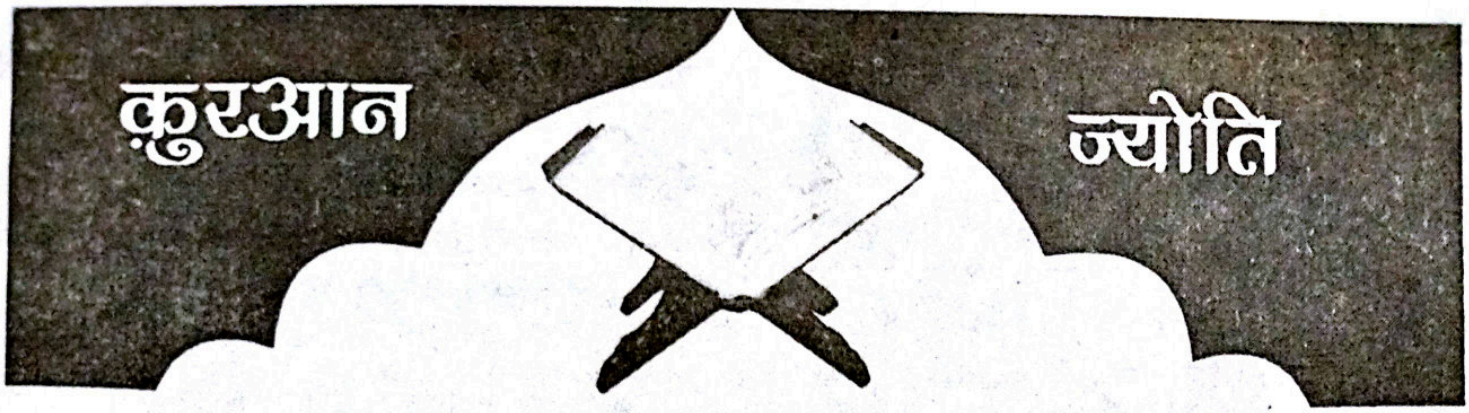

(70) ऐ नबी ! तुम लोगों के क़ब्ज़े में क़ैदी हैं उनसे कहो अगर अल्लाह को मालूम हुआ कि तुम्हारे दिलों में कुछ भलाई है तो वह तुम्हें उससे बढ़-चढ़कर देगा जो तुमसे लिया गया है, और तुम्हारी ग़लतियां माफ़ करेगा । अल्लाह माफ़ करने वाला और दयावान है । (71) लेकिन अगर वे तेरे साथ ख़ियानत का इरादा रखते हैं तो इससे पहले वे अल्लाह के साथ ख़ियानत कर चुके हैं, अतएव उसी की सज़ा अल्लाह ने उन्हें दी कि वे तेरे क़ाबू में आ गये । अल्लाह सब कुछ जानता और गहरी समझ वाला है ।

(72) जिन लोगों ने ईमान अपनाया और हिजरत की (घर-बार छोड़ा) और अल्लाह की राह में अपनी जानें लड़ाईं और अपने माल खपाये, और जिन लोगों ने हिजरत करने वालों को जगह दी और उनकी मदद की, वही वास्तव में एक-दूसरे के संरक्षक-मित्र हैं । रहे वे लोग जो ईमान तो ले आये मगर हिजरत करके (दारुल इस्लाम अर्थात इस्लामी राज्य में) आ नहीं गये तो उनसे तुम्हारा 'विलायत' (संरक्षण) का कोई संबंध नहीं है जब तक कि वे हिजरत करके न आ जाएं ।[50]

–क़ुरआन, 8 : 70-72

50. यह आयत इस्लाम के संवैधानिक नियम की एक महत्वपूर्ण धारा है । इसमें यह नियम बताया गया है कि 'विलायत' (संरक्षक-मित्र) का संबंध केवल उन मुसलमानों के बीच होगा जो या तो इस्लामी राज्य के निवासी हों या अगर बाहर से आयें तो हिजरत करके आ जाएं । बाक़ी रहे वे मुसलमान जो इस्लामी राज्य की भौगोलिक सीमाओं से बाहर हों तो उनके साथ धार्मिक भाईचारा तो अवश्य स्थापित होगा, लेकिन 'विलायत' का संबंध न होगा और इसी तरह उन मुसलमानों से भी विलायत का यह संबंध न रहेगा जो हिजरत करके न आएं, बल्कि 'दारुल कुफ़्र' (कुफ़्र का राज्य) का नागरिक होने की हैसियत से दारुल इस्लाम में आएं । 'विलायत' का शब्द अरबी भाषा में समर्थन सहायता, मददगारी, पृष्ठपोषण, मित्रता, नातेदारी, संरक्षण और इससे मिलते-जुलते अर्थों के लिए बोला जाता है, और इस आयत के संदर्भ में स्पष्ट रूप से इससे तात्पर्य वह नाता है जो एक राज्य का अपनी नागरिकों से, और नागरिकों का अपने राज्य से, और नागरिकों के बीच आपस में होता है । अतएव यह आयत 'संवैधानिक और राजनीतिक विलायत' को राज्य की भौगोलिक सीमाओं तक सीमित कर देती है और इन सीमाओं के बाहर के मुसलमानों को इस विशेष नाते से अलग कर देती है । इस विलायत के न होने के क़ानूनी नतीजे बड़े व्यापक हैं जिनका विवरण देने का यहां अवसर नहीं है । उदाहरण में इतना संकेत पर्याप्त होगा कि किसी विलायत के न होने की वजह से 'दारुल कुफ़्र' और 'दारुल इस्लाम' के मुसलमान एक-दूसरे के वारिस नहीं हो सकते, एक-दूसरे के क़ानूनी वली (Guardian) नहीं बन सकते, आपस में शादी-ब्याह नहीं कर सकते और इस्लामी राज्य किसी ऐसे मुसलमान को अपने यहां दायित्व का पद नहीं दे सकता जिसने दारुल कुफ़्र से नागरिकता का संबंध न तोड़ा हो । इसके अतिरिक्त यह आयत इस्लामी राज्य की विदेश राजनीति पर भी बड़ा प्रभाव डालती है । इसके अनुसार इस्लामी राज्य का दायित्व उन मुसलमानों तक सीमित है जो उसकी सीमाओं के भीतर रहते हैं । बाहर के मुसलमानों के लिए किसी दायित्व का बोझ उसके सर नहीं है । इस तरह इस्लामी क़ानून ने उस झगड़े की जड़ काट दी है जो प्राय: अन्तर्राष्ट्रीय पेचीदगियों का कारण बनता है, क्योंकि जब कोई सरकार अपनी सीमा से बाहर रहने वाले कुछ अल्पसंख्यकों का ज़िम्मा अपने सर ले लेती है तो उसकी वजह से ऐसी उलझनें पड़ जाती हैं जिनको बार-बार की लड़ाइयां भी नहीं सुलझा सकतीं ।



खान-पान के आचार

● हज़रत उमर बिन अबी सलमह (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने मुझसे कहा : ''अल्लाह का नाम लेकर अपने दाएं हाथ से खाओ और खाओ अपने सामने से ।''

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत आइशा (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहती हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : ''जब तुममें से कोई खाये तो उसे चाहिए कि अल्लाह तआला का नाम ले और यदि आरंभ में अल्लाह तआला का नाम लेना भूल जाए तो वह कहे 'बिस्मिल्लाहि अव्वलहू व आख़िरहू' (अल्लाह के नाम से इसका आरंभ भी और अंत भी) ।''

–अबू दाऊद, तिरमिज़ी । तिरमिज़ी ने कहा कि यह हदीस 'हसन सहीह' है ।

● हज़रत जाबिर (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को यह कहते हुए सुना : ''जब कोई व्यक्ति अपने घर में प्रवेश करे और प्रवेश करते समय और खाना खाते समय अल्लाह तआला को याद करे तो शैतान अपने साथियों से कहता है कि तुम्हारे लिए न तो यहां रात व्यतीत करने की जगह है और न रात्रि का भोजन है । और जब कोई व्यक्ति घर में प्रवेश करे और प्रवेश करते समय अल्लाह तआला को याद न करे तो शैतान (अपने साथियों से) कहता है कि तुम्हें रात व्यतीत करने की जगह मिल गयी । और जब व्यक्ति खाना खाते समय अल्लाह तआला को याद नहीं करता तो वह (शैतान) कहता है कि तुम्हें रात व्यतीत करने की जगह मिल गयी और रात्रि का भोजन भी ।''

–मुस्लिम

● हज़रत हुज़ैफ़ह (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि जब कभी हम अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के साथ खाने पर होते तो जब तक अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) खाना खाना आरंभ न करते और इसके लिए अपना हाथ न बढ़ाते, हम लोग खाने में हाथ न डालते । एक बार हम आपके साथ खाने पर थे कि एक लड़की आयी जैसे कि कोई उसको ढकेल रहा है, वह अपना हाथ खाने में डालने ही वाली थी कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने उसका हाथ पकड़ लिया । फिर एक ग्रामीण आया जैसे उसे भी कोई ढकेल रहा है, (उसने भी खाने में हाथ डालना चाहा) आपने उसका भी हाथ पकड़ लिया । फिर अल्लाह के रसूल ने कहा : ''शैतान उस खाने को अपने लिए हलाल समझता है जिस पर अल्लाह तआला का नाम न लिया जाए । अत: वह इस लड़की को लाया ताकि उसके द्वारा खाने को अपने लिए हलाल कर ले, तो मैंने उसका हाथ पकड़ लिया (क्योंकि यह लड़की बिना अल्लाह का नाम लिए खाने वाली थी) फिर वह इस ग्रामीण को ले आया कि उसके द्वारा खाने को अपने लिए हलाल कर ले, तो मैंने उसका भी हाथ पकड़ लिया । उस (अल्लाह) की क़सम जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं, उस शैतान का हाथ भी इन दोनों हाथों के साथ मेरे हाथ में है ।'' फिर आपने अल्लाह तआला का नाम लिया और खाना खाया ।

–मुस्लिम

('रियाजुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय
हिन्दी वेबसाइटें
www.quranhindi.com
www.islamdharma.org
www.islamicwebdunia.com
www.islamic-videos.com

अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण

मानव-जीवन में व्यक्तित्व की बड़ी महत्ता है । यह वह चीज़ है, जो जीवन को सफल बनाने में आधारभूत भूमिका निभाती है । परन्तु सवाल यह है कि अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण कैसे किया जाए ? प्लेटो, अरस्तू से लेकर वर्तमान काल के विशेषकर पश्चिमी विद्वान भी व्यक्तित्व निर्माण पर ज़ोर देते हैं और इसके विषय में अपने-अपने विचार प्रकट करते रहे हैं । यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं होने चाहिए कि व्यक्तित्व निर्माण के जो तरीक़े इनके द्वारा सुझाये गये हैं उनमें से कुछ ऐसे हैं जो व्यावहारिक होने के साथ स्वीकार्य भी हैं, लेकिन इनमें वे तरीक़े भी सम्मिलित हैं जो व्यावहारिक और अस्वीकार्य भी है । अत: ये तरीक़े सफल नहीं हो पाते हैं । इतिहास के पृष्ठ बताते हैं कि इनके प्रस्तावित तरीक़े अपने मूलभूत दोषों के कारण कभी व्यावहारिक नहीं बन सके । इस पर विडम्बना और अफ़सोस की बात यह कि वर्तमान काल में ऐसे ही विद्वानों एवं विचारकों द्वारा तैयार की गयी चरित्र अथवा व्यक्तित्व निर्माण की रूपरेखा को इसकी निरर्थकता को जानते-समझते प्रचारित-प्रसारित किया जा रहा है । ऐसे में लोगों को भ्रम और संशय में पड़ जाना सहज बात है ।

प्रत्येक व्यक्ति अपना व्यक्तित्व संवारना चाहता है । इसके लिए उसे इतना भ्रमित होते भी देखा गया है कि वह अपने आचार, व्यवहार और बर्ताव को विकृत कर डालता है अथवा अनैतिक बना लेता है । वह अपने चाल-ढाल में कृत्रिमता ले आता है । इस प्रकार मनुष्योचित गुणों से वह वंचित होने लगता हैं और एक समय ऐसा आ जाता है कि सही और ग़लत की भी पहचान करने की क्षमता खो देता है । इसका नतीजा यह होता है कि उसका रहा-सहा व्यक्तित्व भी ख़त्म हो जाता है और उसका जीवन पशुवत हो जाता है । पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति का मानव जीवन पर यह बड़ा उपकार है । आधुनिकता के नाम पर फैल रही इस अपसंस्कृति ने मनुष्य को उसके सहज स्वाभाविक गुणों से वंचित कर डाला है । यह अच्छी बात है कि लोग अब इसके कुप्रभावों से परिचित हो रहे हैं । व्यक्तित्व का संबंध आध्यात्मिकता, नैतिकता और मानवीय गुणों से होता है । नैतिक मूल्य और गुण अपने आप में आध्यात्मिकता समाहित किये होते हैं । अत: यथार्थ आध्यात्मिक मूल्य एवं शिक्षाएं नैतिकता का आधार बन जाती हैं । व्यक्तित्व के सकारात्मक विकास के लिए ज़रूरी है कि इन्सान अपने अन्दर नैतिक और आध्यात्मिक मूल्य पैदा करे । नैतिकता के द्वारा आध्यात्मिक, भौतिक और सौंदर्य विषयक मूल्यों में सामंजस्य पैदा किया जा सकती है । इसी के द्वारा समाज में पाये जाने वाले अन्तर्विरोधों को परस्पर समन्वित किया जा सकता है ।

इस मामले में जब हम इस्लाम का अध्ययन करते हैं तो हमें उन सारे प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर मिल जाता है, जो व्यक्तित्व निर्माण और नैतिकता के विषय में उभर कर सामने आते हैं । यहां हमको भलाई, बुराई, अच्छी-बुरी, सही और ग़लत चीज़ें स्पष्ट रूप से अवगत हो जाती हैं । यहां स्पष्ट शब्दों में बता दिया गया है कि ज्ञान का मूल स्रोत अल्लाह की हिदायत और पवित्र क़ुरआन है । अल्लाह ने जो नैतिकता का क़ानून प्रदान किया है उसके पालनीय होने के लिए सही आधार पर्याप्त है कि वह अल्लाह की ओर से है । मनुष्य के लिए जो चीज़ अपेक्षित है, वह अल्लाह की ख़ुशनूदी और उसकी प्रसन्नता के अतिरिक्त कोई दूसरी चीज़ नहीं हो सकती । अल्लाह की प्रसन्नता की प्राप्ति और अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण इस्लामी शिक्षाओं पर चलकर ही किया जा सकता है । इससे हटकर कोई और उपाय नहीं । इन्सानों को हुक्म दिया गया है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के श्रेष्ठ चरित्र का अनुपालन करें और अपनी ज़िन्दगियों में आप (सल्ल०) के पवित्र जीवन से रहनुमाई हासिल करें । क़ुरआन में है : "वास्तव में तुम लोगों के लिए अल्लाह के रसूल में एक उत्तम आदश है, प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और अंतिम दिन की आशा रखता हो और अल्लाह को अधिक याद करे (अल-अहज़ाब : 21)।" अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अल्लाह ने मुझे नैतिक गुणों और अच्छे कामों की पूर्ति के लिए भेजा है (शरहुस्सुन्नह)।" आइए, अपने समय को व्यर्थ न गंवाकर इस्लाम की शिक्षाओं को जीवन में उतारें और जो लोग इनसे वंचित हैं, उन तक पहुंचाएं ताकि वे भी अपने व्यक्तित्व को बना-संवार कर लोक-परलोक की सफलता सुनिश्चित कर सकें ।

ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण

शरणागति से आशय है खुदा रब्बुल आलमीन में अपने संपूर्ण अस्तित्व का होम । हवन में दी जाने वाली आहुतियां हवन की आग का निवाला बनकर उसी आग में समा जाती हैं । अपने संपूर्ण अस्तित्व को सागर में घोलकर उसी रूप में प्रतिष्ठित हो जाना शरणागति का स्वरूप होता है । खुदा रब्बुल आलमीन अपनी शरण में आने वाली हर शय (वस्तु) को पनाह देता है । पनाह की प्राप्ति ही शरणागति कही गयी है । खुदा का अज़ाब जब कभी अंजाम को प्राप्त होता है तो कोई भी पनाह देने वाला नहीं होता है । यह खुदा ही है जो इस नश्वर जगत की समस्त वेदनाओं से मुक्ति प्राप्त करा सकता है ।

इस मुक्ति की प्राप्ति हेतु बन्दे खुदा की शरण लेने में क़ायल होते हैं । शरणागति का स्वरूप कैसा होना चाहिए यही इस रचना का मुख्य विषय है ।

सूरह 72 की आयत 22 में खुदा रब्बुल आलमीन ने पैग़म्बर (सल्ल॰) से कहा है ''यह भी कह दो कि खुदा के अज़ाब से मुझे कोई पनाह नहीं दे सकता और मैं उसके सिवा कहीं भी पनाह की जगह नहीं देखता हूं । इस पवित्र आयत से यह संदेश भेजा गया है कि इस संसार इमें यदि कोई पनाह की जगह है तो वह है खुदा की शरण । खुदा की शरण चाहने वाला बन्दा दूसरी पनाहगाह में सुरक्षा न प्राप्त कर सकेगा । सुरक्षा उसे खुदा की शरण में जाने से प्राप्त हो सकती है । इसी वजह को स्पर्श करते हुए ऊपर वर्णित पवित्र आयत नाज़िल करने की आवश्यकता महसूस की गयी थी ।

खुदा के दरबार में बुद्धि के साथ-साथ भावना की भी क़ीमत है । शरणागति या पनाह भावना का विषय है । सृष्टि के समस्त पदार्थों का पोषण खुदा ही करता है । पेड़-पौधे, फ़सलें ऊपर की ओर उठते और बढ़ते हैं । इनका ऊपर की तरफ़ मुख होने का उद्देश्य प्रभु की पनाह प्राप्त करने के अलावा अन्य होता नहीं है । वही मेंह वर्षा कर इन्हें पोषित करता है । वही इनमें सूर्य ऊर्जा से बल प्राप्ति कराता है तथा पनाह के लिए उससे उत्तम स्थान और हो भी क्या सकता है । इस पनाह का स्वरूप ही इसका पैमाना हो सकता है ।

शरणागति से प्रयोजन है खुदा की शरण में प्रवेश करना और स्वइच्छा का दमन करते हुए खुदा की मर्ज़ी के अनुसार उसका सहचर बनकर खुदा के कार्यों को उसकी इच्छा अनुरूप करना । स्वइच्छा का अभाव इस शरणागति का प्रथम सोपान है । नाफ़रमानी करने का अर्थ है जहन्नम की आग में हमेशा-हमेशा के लिए पड़ा रहना । जो खुदा को अपना कारसाज़ स्वीकार करके कर्मों को अंजाम देना सीख लेता है खुदा उसी को स्वीकार करता है ।

खुदा उन्हीं लोगों को सुरक्षा प्रदान करता है जो ख़ालिस खुदा के लिए जीते-मरते हैं । खुदा के अज़ाब से डरते हैं और खुदा की खुशनूदी के लिए निराकाम (कामनारहित) भाव से मानवता के हित में कार्य करने और जूझने में किसी भी प्रकार की कोर-कसर बाक़ी नहीं रखते हैं । इसी सूरत में पनाह मांगने वाले को पनाह प्रदान की जाती है । न बदले की ख़्वाहिश करना और न शुक्रगुज़ारी की, इसी स्वरूप को कुरआन मजीद सच्ची शरणागति स्वीकार करता है । जो अपने सदकर्मों का बदला चाहते हुए नेक कर्मों को अंजाम देते हैं वे वास्तविक शरणागत नहीं होते हैं । बदला दुनिया की ज़िन्दगी का हिस्सा है, दुनिया की ज़िन्दगी जीने और चाह रखने वाले लोग दुनिया के ही होकर रह जाते हैं । उनमें मिलावट रहती है इसलिए खुदा रब्बुल आलमीन द्वारा स्वीकार नहीं किये जाते हैं, उन्हें उनका बदला नहीं इसी धरा पर प्राप्त करा दिया जाता है ।

परहेज़गारी शरणागत का आभूषण है । शरणागति मक़बूल हो इसके लिए आवश्यक है कि जिन-जिन विषयों से परहेज़ रखने का आदेश किया गया है उन-उन विषयों से दूरी रखी जाए । जो आदेशों को झुठलाते हैं वे परहेज़गार की परिधि से बाहर रहते हैं ।

सूरह 77 की आयत 40 बयान करती है कि, ''बेशक परहेज़गार सायों और चश्मों में होंगे ।'' इसी वजह से परहेज़गारों का ठिकाना जन्नत और झुठलाने वालों का ठिकाना दोज़ख़ रखा गया है । पनाह और परहेज़गारी तथा नेक अमल फ़र्ज़ की अदायगी परवरदीगार के पास ठिकाना

बना देती है । यही वास्तविक शरणागति हो सकती है और स्वीकार करने योग्य होती है ।

सरकशी करने वालों और दुनिया की ज़िन्दगी को मुक़द्दस मानने वालों में शरणागति भाव का अभाव रहता है, उन्हें ख़्वाहिशों की पैरवी मन भाती है ऐसे लोग ही दोज़ख़ की ओर भेजे जाते हैं । जो ख़्वाहिशों को रोकता है, दुनिया की ज़िन्दगी को अपनी ज़िन्दगी का हिस्सा नहीं बनने देता है उस शख़्स से खुदा रब्बुल आलमीन खुश होता है और उनकी इस खुशी का बदला होता है खुदा की पनाह ।

खुदा रब्बुल आलमीन की पनाह प्राप्ति वह इन्सानी कोशिश है जो उसे खुदा से जोड़ कर खुदा का बना देती है । सूरह 84 आयत 6 में खुदा आलमीन ने वादा किया है और आश्वासन दिया है कि "ऐ ! इन्सान तू अपने परवरदिगार की तरफ़ खिंचा जा रहा है उससे जा मिलेगा ।" और तू शरणागति का बदला अल्लाह की प्राप्ति है । बस स्वरूप होना चाहिए । कामयाबी ईमान और अमल करने वालों के लिए है । ईमान से प्रयोजन है पूर्णरूप से खुदा के अधीन होकर आदेशों पर अमल करना ।

आनंद शिवानंद

74/140, धनकुट्टी, कानपुर (उ०प्र०)

वृद्धजनों की समस्याएं एवं समाधान

मासिक पत्रिका 'कान्ति' का जुलाई 2012 का अंक प्राप्त हुआ । आपकी यह पत्रिका बहुत अच्छी लग रही है । कारण इसके अंतर्गत वर्तमान परिप्रेक्ष्य के अनुसार सामाजिक व धार्मिक कुरीतियों व उनका निराकरण पर अति सुन्दर ढंग से दृष्टिपात किया गया है ।

जुलाई 2012 के अंक में शीर्षक 'भारत में वृद्धजनों की समस्याएं एवं समाधान' रचित वीणा (शोधार्थी समाजशास्त्र विभाग) का मैंने सरसरी निगाह से अध्ययन किया तथा मैं उनके विचारों का पूर्णतया समर्थक हूं । आज अनेक स्थानों पर वृद्धाश्रम खोले जा रहे हैं । पश्चिमी सभ्यता व संस्कृति का प्रभाव आधुनिक युवा पीढ़ी पर ऐसा पड़ रहा है, जिसके कारण वृद्धजनों को न चाहते हुए भी वृद्धाश्रम में रहना पड़ रहा है ।

अधिकांश का मानना है कि वृद्धावस्था एक अभिशाप है, परन्तु मेरे व लेखक के व्यक्तिगत विचार से वृद्धावस्था परिवार के समस्त सदस्यों को पुरातन भारतीय सभ्यता की ओर अग्रसर कर नैतिकता व उच्च यानी उज्ज्वल चरित्र का अटूट प्रेरक अंग है । आदर्श परिवार ही आदर्श समाज का प्रतिबिम्ब है । परिवार के सदस्यों को अच्छे संस्कार देने हेतु किसी न किसी प्रकार से प्रयत्न करना होगा ही अपना व्यवहार ऐसा रखें जिससे कि परिवार व समाज के अधिकांश सदस्य आपका समुचित आदर करें । अपने व्यवहार को कसौटी पर उतारकर परिवार व समाज का उचित मार्गदर्शन करें ताकि परिवार व समाज भविष्य में आदर्श बन सके । इसलिए आदर्श परिवार व समाज ही वृद्धावस्था का प्रेरक स्तंभ माना गया है ।

मनोरंजन भी वृद्धावस्था का बेहतरीन मित्र है । संयुक्त परिवार में जहां सदस्यों में प्रेम व अपनत्व की भावना सदा बनी रहती है । वहीं एक सुदृढ़ता का एहसास भी होता है । स्नेह की भावना उमड़ने के साथ-साथ कार्य भी अच्छा होता है । समय भी कम लगता है । ख़र्च में कमी आती है । वृद्धावस्था की उत्तम चारित्रिक व्यवस्थाएं भी संयुक्त परिवार को बढ़ाने में अग्रसर हैं ।

अंत में मेरा स्पष्ट दृष्टिकोण यही है कि मैं उपरोक्त रचनाकार के सारगर्भित विचारों का पूर्णतया समर्थक हूं ।

रामस्वरूप झैवर

शास्त्रीनगर विस्तार, भीलवाड़ा (राज०)

धर्मनिरपेक्षता : देश और समाज को जोड़ने वाली शक्ति

धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र भारतीय संविधान की नींव है । इसका अर्थ है कि राष्ट्र प्रत्येक धर्म का आदर करते हुए किसी भी धर्म के मानने वालों में भेदभाव नहीं करेगा । भारतीय संविधान के अनुसार सभी धर्मों और जातियों के लोग बराबर हैं ।

हमारा देश विभिन्न धर्मों, सभ्यताओं, संस्कृतियों और भाषाओं का संगत है । गांधी जी, डॉ० अम्बेडकर, मौलाना आज़ाद वग़ैरह हमारे बुज़ुर्ग नेता अनेकता में एकता पर विश्वास रखते थे । धर्मनिरपेक्षता देश के समाज को बनाये रखने के लिए बहुत आवश्यक है ।

हिन्दू समाज विभिन्न वर्गों और जातियों में बटा है, अलग-अलग क्षेत्रों के देवी-देवता भी अलग हैं, ऐसे में हिन्दू समाज को जोड़े रखने के लिए धर्मनिरपेक्षता ज़रूरी है । धर्मनिरपेक्षता ही देश और समाज को संगठित रखे हुए है ।

हसनैन कैफ़

भंडारा, महाराष्ट्र

ہماری بعض اہم کتابوں کا پہلی بار

ہندی ایڈیشن

नमाज़ में आप क्या पढ़ते हैं? ✍मौलाना सय्यद अबुल- आला मौदूदी	[نماز میں آپ کیا پڑھتے ہیں؟]	12.00
मुस्लिम औरतों की ज़िम्मेदारियाँ ✍मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	[مسلمان خواتین کی ذمے داریاں]	20.00
भारत में इस्लाम की दावत की अहमियत और उसके तक़ाज़े ✍मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	[ہندستان میں اسلام کی دعوت اہمیت اور تقاضے]	14.00
काबा का सफ़र ✍मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	[سوے حرم چلا]	24.00
प्यारे नबी (सल्ल०) की चहेती बेटियाँ ✍फ़ज़्ले-क़दीर नदवी	[رسول اللہؐ کی صاحبزادیاں]	16.00
इस्लाम सफलता का एकमात्र रास्ता ✍मौलाना सय्यद हामिद अली	[اسلام کامیابی کا واحد راستہ]	08.00
इशदूतत्व की धारणा विभिन्न धर्मों में	[مجموعہ مضامین]	20.00
प्यारे नबी (सल्ल०) के चार साथी-3 हज़रत उस्मान ग़नी (रज़ि०) ✍इरफ़ान ख़लीली	[پیارے نبیؐ کے چار یار حضرت عثمان غنیؓ-حصہ سوم]	35.00
प्यारे नबी (सल्ल०) के चार साथी-4 हज़रत अली (रज़ि०) ✍इरफ़ान ख़लीली	[پیارے نبیؐ کے چار یار حضرت علیؓ-حصہ چہارم]	30.00
ईश्वर की रहस्यमय हस्ती ✍मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ	[خدا کی پراسرار ہستی کا تصور]	14.00
हदीस सौरभ (अनुवाद एवं व्याख्या सहित) भाग-2 ✍मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ	[کلام نبوت-جلد دوم]	350.00

MMI PUBLISHERS

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025 • Phone: 26971652, 26954341, 26946447(D) • Fax: 26947858 • E-mail:mmipublishers@gmail.com • Website: www.mmipublishers.net

ग़रीबी रेखा नहीं, अमीरी रेखा बननी चाहिए

❑ रोशन लाल अग्रवाल
(रायपुर, छत्तीसगढ़)

देश की सारी प्राकृतिक संपदा, जल, जंगल, ज़मीन, खनिज और सारी धन-संपत्ति पर देश के सब लोगों का समान मूलभूत अधिकार है जिसे घटाया या बढ़ाया नहीं जा सकता । अत: इस अधिकार का संबंध नागरिक की योग्यता, क्षमता या सक्रियता से भी नहीं है । इसलिए न्याय के आधार पर एक नागरिक का मूलभूत संपत्ति अधिकार केवल औसत सीमा तक ही होना चाहिए ।

किन्तु आज समाज गंभीर आर्थिक असमानता का शिकार है । देश के सारे प्राकृतिक संसाधनों और संपत्ति पर केवल मुट्ठी भर लोगों का ही क़ब्ज़ा हो गया है तथा सारे प्राकृतिक संसाधन खुली लूट का शिकार हैं । देश की कुल संपत्ति का 73 प्रतिशत भाग केवल 12 लाख लोगों के पास है और शेष 121 करोड़, लोगों के पास मात्र 27 प्रतिशत संपत्ति है ।

देश की सारी अर्थव्यवस्था और सत्ता पर भी इन्हीं लोगों ने अपने धन के बल पर क़ब्ज़ा जमा लिया है । आम नागरिक अपने धन और अधिकार से वंचित होकर इनका गुलाम बनकर रह गये हैं । वह नितांत, ग़रीबी बेरोज़गारी, बदहाली, अभाव, शोषण, लाचारी, अपमान और अन्याय का पशुवत जीवन जी रहे हैं ।

टैक्स प्रणाली भ्रष्टाचार की जननी

आम आदमी की इस ख़राब हालत का एक कारण हमारी भ्रष्टाचारी ग़लत अर्थव्यवस्था है । देश की सारी अर्थव्यवस्था झूठ, पाखंड, बेईमानी, षड्यंत्र और अन्याय पर टिकी है । देश की भ्रष्ट कर प्रणाली आम आदमी का ख़ून चूस रही है । देश की संपत्ति का झूठा हिसाब दिया जा रहा है । अर्थात देश के उद्योगपति व्यापारी, सांसद, मंत्री बड़े-बड़े किसान, शासक, प्रशासक व बुद्धिजीवी अपनी आय और संपत्ति का झूठा विवरण दे रहे हैं । अरबों रुपयों के मूल्य की संपत्ति को बहुत ही कम बताकर देश के बाक़ी लोगों का हक़ मार रहे हैं ।

भारत में संपन्न लोग अरबों- खरबों की संपत्ति के मालिक होते हुए भी नाममात्र का संपत्ति कर दे रहे हैं या दे ही नहीं रहे हैं, जबकि भूखे नागरिक की रोटी पर, नंगे की लंगोटी पर, भिखारी के भीख के कटोरे पर और मुर्दे के कफ़न पर भी टैक्स है । इससे जहां अमीरों की अमीरी बढ़ रही है, वहीं ग़रीबों की ग़रीबी भी बढ़ रही है । यह अन्यायपूर्ण आर्थिक असमानता समाज के सारे ताने-बाने को भी ख़त्म कर रही हैं । जिससे लोगों की आपसी विश्वास, सद्‌भाव, सहयोग और एकता नष्ट हो रहे हैं । आपसी टकराव विस्फोटक रूप ले रहा है । जघन्य अपराधों की बाढ़ आ रही है । पूरा समाज भयभीत है और असुरक्षा का भी शिकार है । यह स्थिति किसी के भी हक़ में नहीं है ।

अमीरी रेखा

इस गंभीर और भयावह समस्या का न्यायपूर्ण समाधान अमीरी रेखा है । अत: अब ग़रीबी रेखा नहीं, अमीरी रेखा बननी चाहिए और इस रेखा से अधिक संपत्ति रखने वाले नागरिकों पर ब्याज की दर से टैक्स लगाया जाना चाहिए । बाक़ी सभी प्रकार के टैक्सों को ख़त्म कर दिया जाना चाहिए । इससे न केवल मुट्ठी भर लोगों पर ही टैक्स लगाना पड़ेगा, बल्कि इससे भारी धन राशिभी प्राप्त होगी । यह टैक्स न्याय की कसौटी पर भी खरा है ।

एक अनुमान के अनुसार देश के मात्र 12 लाख अरबपतियों की संपत्ति पर ब्याज की दर से टैक्स लगाने पर एक वर्ष में कम से कम 200 लाख करोड़ रुपये की आय

हो सकती है जो आज सारे टैक्सों से होने वाली 20-25 लाख करोड़ रुपये की 8-10 गुनी है । यह देश की सारी अर्थव्यवस्था और संसाधनों से मिला शुद्ध लाभ है ।

इस लाभ में से शासन के बजट का ख़र्च काटकर शेष सारा लाभांश देश के सारे नागरिकों में बिना किसी भेदभाव के समान रूप से बांटा जाना चाहिए । इससे देश के हर नागरिक को 10 हज़ार रुपया हर माह आसानी से दिया जा सकता है ।

इस प्रकार का लाभांश पाना देश के सभी नागरिकों का जन्मसिद्ध अधिकार है क्योंकि वे ही इस देश की सारी धन संपत्ति व संसाधनों के मूल स्वामी आम नागरिक ही हैं । इसलिए इनसे मिलने वाला लाभ इन्हें मिलना ही चाहिए । अमीरी रेखा से अधिक धन रखने वाला हर आदमी इनका बटाईदार है । इसलिए नागरिकों को भागीदारी का हक़ मिलना ही चाहिए । यह विकास की न्यायपूर्ण हिस्सेदारी है ।

मालिक के दो अधिकार

मालिकों का पहला अधिकार अपने सारे संसाधनों व संपत्ति से मिलने वाले लाभ का पूरा हिसाब किताब रखना तथा दूसरा सार्वजनिक स्वामित्व के उपक्रमों, संस्थानों के शुद्ध लाभ में हिस्सेदारी लाभांश को बांटना । इसलिए अब नागरिकों को रोज़गार मांगने के बजाय ये दो अधिकार ही मांगने चाहिए । ये अधिकार मिलने पर उनकी सारी ग़रीबी, बेरोज़गारी, अभाव, अन्याय, शोषण, लाचारी और अपमान अपने आप ख़त्म हो जाएगा । इससे देश का हर नागरिक भयमुक्त, अभावमुक्त, सम्मानयुक्त, सुरक्षा व सुख शांति का जीवन जी सकेगा । अन्याय से पैदा होने वाले अनेक प्रकार के अपराध, आतंकवाद, अलगाववाद, नक्सलवाद, विवाद, टकराव और युद्ध भी समाप्त हो जाएंगे । इस अधिकार को पाने का सबसे सरल मार्ग वोट देने का 'नागरिक का अधिकार' है ।

देश के सभी मतदाता धर्म, जाति संप्रदाय, क्षेत्र, भाषा, दल या निजी संबंधों के आधार पर वोट देने की बजाय इसी अधिकार को पाने के लिए अपना वोट दें । जब देश के सारे मतदाता इसके लिए ही वोट देंगे तो, इस व्यवस्था को मानने वाले ही चुनाव जीत सकेंगे और संसद में जाकर उचित क़ानूनी बदलाव करके सब नागरिकों को उनका यह मौलिक अधिकार प्रदान कन देंगे । हिंसा के द्वारा यह अधिकार नहीं लिया जा सकता । इस बात को सबको समझाना बुद्धिजीवियों, समाजसेवियों और सभी सज्जनों व संतों की ज़िम्मेदारी है ।

गोपनीयता का काला क़ानून

देश में गोपनीयता का काला क़ानून तुरंत ख़त्म किया जाना चाहिए । यह लोकतंत्र और नागरिकों का अपमान तो है ही, सारे षड्यंत्रों, बेईमानी, झूठ, पाखंड और भ्रष्टाचार की जड़ है । यह साम्राज्यवाद का अवशेष है । अस्ली लोकतंत्र में इसका कोई औचित्य नहीं है । इससे न केवल समाज के कमज़ोर वर्गों को लाभ मिलेगा बल्कि संपन्न वर्ग को भी लाभ मिलेगा । उन्हें अपराध बोध से समाज की घृणा और अपनी असुरक्षा के भय से, मुक्ति मिलेगी । उनका भय और तनाव समाप्त होगा । षड्यंत्र रचने और झूठ बोलने की मजबूरी समाप्त होगी । समाज उन्हें अपने कमाऊ सपूत की तरह पूरा सम्मान और आत्मीयता देगा । उनकी संपन्नता, सुख में बदल जाएगी और उसमें कोई कमी भी नहीं आएगी । उनकी योग्यता प्रतिभा और कर्मठता का सही मूल्यांकन होगा और उन्हें सही भूमिका भी मिल सकेगी । इससे प्रकृति का विनाश रुक जाएगा और वह समृद्ध होगी । देश की अर्थव्यवस्था को चार-चांद लग जाएंगे । पूरा मानव समाज एक परिवार बन सकेगा । जिसमें सभी सुखी और संतुष्ट होंगे । कोई भी दुखी नहीं होगा ।

मेरा यह मानना है कि प्रत्येक नागरिक की निजी संपत्ति की गोपनीयता को समाप्त करना चाहिए क्योंकि गोपनीयता सारे षड्यंत्रों की जननी है । प्रत्येक नागरिक को औसत सीमा तक मूल्य की संपत्ति रखने का मूलभूत अधिकार होना चाहिए । प्रत्येक नागरिक पर औसत सीमा से उसकी अधिक मूल्य की संपत्ति पर ब्याज की दर से कर लगाया जाना चाहिए ।

देश में संपत्ति कर को छोड़कर सारे करों को समाप्त कर दिया जाना चाहिए । संपत्ति का मूल्यांकन बाज़ार की वर्तमान दरों पर होना चाहिए । संपत्ति की झूठी जानकारी, हेराफेरी करने पर अन्य नागरिक द्वारा 20 प्रतिशत से अधिक मूल्य प्रदान करने पर अनिवार्य विक्रय का प्रावधान करना । सरकार के सारे बजट का ख़र्च काटकर बाक़ी सारी रक़म देश वे सारे नागरिकों में भागीदारी का अधिकार देकर सामान रूप से वितरण करना चाहिए । जिससे भारत में समतामूलक समाज की स्थापना का लक्ष्य पूरा किया जा सके ।

सत्य का विरोध

❖ माहिरुल क़ादरी

सत्य को स्वीकार करने के मार्ग में पारिवारिक पक्षपात, बाप-दादों के संस्कार और रीति-रिवाज़ सदैव रोड़ा बनते हैं । अच्छी सूझ-बूझ वाले भी इस ग़लती का शिकार हो जाते हैं कि जो बात चिरकाल से चली आ रही है, वह बात ठीक है, सही है, जायज़ है । लोग सत्य और न्याय को बाप-दादा के मान-जान की कसौटी पर परखना चाहते हैं। मानव-स्वभाव की इस दुर्बलता ने सच्चाई को मानने में सदा ही रुकावटें पैदा की हैं और रोड़े अटकाए हैं । समस्त समाज-सुधारकों और सत्य के पुजारियों को प्राय: इन्हीं समस्याओं तथा कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है ।

हज़रत इब्राहीम ने जब एकेश्वरवाद का स्वर उच्चरित किया तो चांद व सितारों और मूर्तियों को पूजने वाली क़ौम इस बात पर बिगड़ गई कि हें! आज़र का यह बेटा हमारे पुरखों से भी अधिक बुद्धिमान और सत्यवादी बनता है । इतने बड़े-बड़े पदों वाले महात्मा और गुरू क्या बिल्कुल ना-समझ थे। शताब्दियों से हम जिस मार्ग पर चलते आए हैं क्या इब्राहीम के कहने पर उसे छोड़ दें ? पूरी क़ौम ने हज़रत इब्राहीम अलै॰ का उपहास किया। उनके सन्देश को झुठलाया और स्वयं उनके घर के लोग इस विरोध में आगे-आगे थे ।

हज़रत मूसा अलै॰ के साथ भी यही मेश आया, फ़िरऔन जिस क़ौम का खुदा था उसने हज़रत मूसा का घोर विरोध किया । उन लोगों को शाह परस्ती का रोग था । जो व्यक्ति सिंहासनासीन होता, खुदाई का दावेदार भी बन बैठता । बादशाहों के दरबारों में सज्दे होते, और दमन-चक्र की शिकार जनता बादशाह को खुदा का साया नहीं, बल्कि खुदा ही समझती थी ।

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ का जिस जाति से सम्बन्ध था, वह पितृ पूजा में पिछली जातियों से कोसों आगे थी । अपने पुराने संस्कारों के विरुद्ध जब उन्होंने सच्चाई की बातें सुनीं तो पूरी की पूरी जाति विरोध पर उतारू हो गई। आपका चचा अबू लहब इस्लाम के शत्रुओं और रसूल के विरोधियों का अगुवा था। इस भाग्यहीन व्यक्ति का तो दिन-रात काम ही यही था कि आप (सल्ल॰) जहां कहीं भी तशरीफ़ ले जाते, वह भी साथ-साथ हो लेता या पहले ही पहुंच जाता। आप लोगों को समझाते, सत्य और न्याय का पाठ पढ़ाते, भलाई का प्रचार करते तो अबू लहब आपका विरोध करता। क़ुरैश से कहता कि लोगो! कहीं अब्दुल्लाह के बेटे की बातों में आकर अपने प्राचीन धर्म से विमुख न हो जाना। यह मेरा भतीजा तो (अल्लाह की पनाह) विधर्मी हो गया है। यह कैसे हो सकता है कि हम अपने उपास्यों को छोड़ दें, जिन्होंने हर कठिन घड़ी में हमारा साथ दिया है। शताब्दी से हमारे पुरखे जिन मूर्तियों की पूजा करते आए हैं क्या इस एक आदमी के कहने से उनको ठुकरा दें ? यह नहीं हो सकता, कभी नहीं हो सकता । जब तक मेरी जान में जान है, लात, मनात और नस्र, हुबल की महत्ता को कम नहीं होने दूंगा । और हां ! यह मुहम्मद आख़िरत (परलोक) के अज़ाब से लोगों को प्राय: डराता रहता है । समझ में नहीं आता कि यह आख़िरत क्या बला है ? मरने के बाद फिर क्या कभी कोई जिंदा हो सकता है ? ये सब नासमझी की बातें हैं और भाइयो ! सौ बातों की एक बात यह है कि अनदेखी हुई बात को हम आख़िर कैसे मान लें ? हम तो इस बात को जब सच्चा जानें कि अपने खुदा से हमारी बातें करा दे । यह न हो सके तो कम से कम आसमान से आवाज़ें आएं कि अब्दुल्लाह का बेटा खुदा का भेजा हुआ है और उसकी बात पर दुनिया को ईमान ले आना चाहिए ।

और एक अबू लहब ही क्या, तमाम क़ुरैश यही कहते थे कि यह मुहम्मद खुदा का कैसा नबी है, जो हमारी तरह खाता-पीता और बाजारों में चलता-फिरता है । इसके बाल बच्चे भी हैं। दुनिया की ज़रूरतें भी इसके साथ लगी हुई हैं। रसूल भेजना ही था तो मक्का या तायफ़ से किसी धनी-मनी व्यक्ति को भेजना चाहिए था। अब्दुल्लाह के बेटे मुहम्मद के घर में तो बैठने के लिए चटाई भी नहीं है। कई-कई दिन का उपवास होता है उनके घरानेमें। भला ऐसे दीन-हीन

व्यक्ति को नबी मानकर हमें क्या मिल जाएगा? जिन लोगों ने मुहम्मद को अपना मार्ग-दर्शक स्वीकारा है, उनमें अधिकांश धनहीन, नीच और परेशान व्यक्ति ही हैं। किसी-किसी के पास तो शरीर ढांपने के लिए कपड़े भी नहीं हैं। क्या हम भी मुहम्मद के अनुयायियों में शामिल होकर उन्हीं जैसे बन जाएं? और भाइयो! अब्दुल्लाह के बेटे के विचारों को मानने का अर्थ यह है कि तमाम क़ुरैश का विरोध मोल ले लें, अपने नातेदारों और सगे-सम्बन्धियों से सम्बन्ध विच्छेद कर लें। यह सौदा बड़ा मंहगा पड़ेगा, बल्कि इसमें घाटा ही घाटा है।

वे लोग एक दूसरे से यह भी कहते कि निस्सन्देह मुहम्मद अति सच्चे, वायदे के पक्के और ईमानदार हैं। उनके चालीस वर्ष हमारे ही साथ बीते हैं और आज तक कोई बुरी बात उनमें देखने को न मिली। उनके आचरण पर कोई उंगली भी नहीं उठा सकता। ऐसा सज्जन, सुसभ्य और सत्यवादी व्यक्ति तो हमारे अरब में दूसरा नहीं है। मक्का की गलियां, क़बीस की चोटियां, सफ़ा की चट्टानें और काबे की मेहराबें इस अब्दुल्लाह के बेटे मुहम्मद के सदाचरण की गवाही देती हैं। उनकी अब तक की सभी बातें भली ही भली रही हैं। बड़े गुण हैं उनमें, पर कुछ दिनों से उन्होंने हमारी मूर्तियों की निन्दा करनी शुरू कर दी है, यह हमें पसन्द नहीं है।

'पर मैं कहता हूं अब्दुल्लाह के बेटे सदा से हमारी मूर्तियों के विरोधी रहे हैं,' एक क़ुरैशी ने कहा।

'नहीं यह बात नहीं है'–दूसरे व्यक्ति ने उत्तर दिया।

'अरे साहब! आप तो निरे कल्पना-लोक में विचरण कर रहे हैं। और क्षमा कीजिए अदूरदर्शी भी हैं। मुहम्मद के पिछले जीवन पर एक दृष्टि तो डालिए। स्थिति स्पष्ट हो जाएगी और आपको मानना पड़ेगा कि मैं सच कह रहा हूं।' बूढ़े व्यक्ति ने कहा।

'अच्छा, कुछ कहिए तो सही। आप तो निकाह की तरह शर्तें क़बूलवा रहे हैं।' दूसरे व्यक्तिने उत्तर दिया।

'किसी व्यक्ति के विचार, उसके कार्य, चरित्र-आचरण और जीवन से जाने-पहचाने जाते हैं। क्या आपने लड़कपन में मुहम्मद को किसी मूर्ति के पास फटकते भी देखा? (सुननेवाला 'न' के लिए सिर हिलाता रहा) और युवावस्था में यहां तक कि सफ़ा पर्वत पर इस्लाम का आह्वान करने तक मुहम्मद के ध्यान को मूर्तियों की ओर तनिक भी आकृष्ट होते देखा गया? (फिर सिरों का नकारात्मक संकेत में हिलना) तो फिर इसका अर्थ यही निकला कि मुहम्मद ने खुलकर घोषणा तो अब की है पर व्यावहारिक दृष्टि से वह सदैव ही मूर्ति पूजा का विरोधी रहा है। आपको मालूम न हो तो लाओं, मैं बताऊं! ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल ने मुहम्मद को एक बार भोज पर बुलाया था। गोश्त के डोंगे जब सामने आए तो उसने झट से यह कह कर हाथ पीछे खींच लिया कि मूर्तियों और थानों पर चढ़ाया हुआ गोश्त मैं नहीं खाता। मैं तो उस जानवर का गोश्त खाता हूं जो ख़ुदा का नाम लेकर ज़िब्ह किया गया हो।हम तो उसी दिन समझ गए थे कि यह व्यक्ति एक दिन कोई रंग लाएगा। और भाई! यह अब्दुल्लाह का बेटा तो हमारी रीतियों, संस्कारों और मेलों ठेलों तक का विरोधी रहा है। पिछले वर्षों में कैसे-कैसे गाने-बजाने होते रहे हैं! हसीन की दासी



रफ़ावा के नृत्य-गान पर नब्बे-नब्बे साल के बूढ़े झूम-झूम गए हैं और आसिम की बेटी के सरोद वादन ने आंखों की नींदें उड़ा-उड़ा दी हैं। सारा मक्का इन महफ़िलों में शरीक हुआ पर मुहम्मद की परछाई भी वहां देखने को न मिली। मंदिरापान हम अरबों की घुट्टी में पड़ा हुआ है। हम जामों की खनखनाहट के बिना एक रात भी नहीं बिता सकते पर अब्दुल्लाह के बेटे मुहम्मद को मदिरापान की किसी टोली में भी नहीं देखा गया। मैं अपने उपास्यों की सौगन्ध खा कर कहता हूं कि मुहम्मद ने आज तक शराब के जाम को छुआ तक भी नहीं। तो आख़िर इससे क्या निष्कर्ष निकलता है?'

'आप ही व्याख्या कर दें तो अच्छा है,' एक आवाज़ आयी ।

'जिस प्रकार दो ऊंट और दो ऊंट चार होते हैं, उससे न कम हो सकते हैं न अधिक, वैसे ही यह एक मान्य तथ्य है कि मुहम्मद हमारे धर्म, संस्कृति, समाज और रीति-रिवाज का सदा से विरोधी रहा है। उसे हमारी यह सभ्यता एक आंख भी नहीं भाती। उसका जीवन हम सब के जीवन से भिन्न रहा है। अपनों में रह कर यह अनजाना-पन, विरोध, विमुखता और दूरी और घृणा नहीं तो और क्या है?' कहने वालों की बातों पर एक साथ बई सिर हिले कि तुम ठीक कह रहे हो।

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने लाइला-ह इल्लल्लाह' (नहीं है कोई उपास्य अल्लाह के अतिरिक्त) का नारा लगा कर कुफ़्र के हमलों को कंपकंपा दिया। जहां-जहां यह स्वर गुंजरित हुआ, शिर्क और जुल्म के पोषक थरथरा उठे। अबूजहल और अबूलहब भड़के कि हमारी चौधराहट छिनी जा रही है। अबू सूफियान थर्राया कि मेरी सरदारी को चुनौती दी जा रही है। वंश, वर्ण और रक्त तथा रंग पर गर्व करने वाले डरे कि हमारे अभिमान को ठेस पहुंचाई जा रही है। काहिनों (भविष्य वक्ताओं), राहिबों (सन्यासियों), जादूगरों, पुरोहितों और पुजारियों को पसीना आ गया कि हमारी धर्म गुरुता को इस सूत्र ने ख़तरे में डाल दिया है। मनोकामनाओं और इच्छाओं के पुज़ारी भयभीत हुए कि उनकी मनमानियों के विरुद्ध यह मोर्चा बन रहा है। हमारे भोग-विलास के सारे सहारे टूट जाएंगे और वासनाओं के ताने-बाने बिखर कर रह जाएंगे। जो जितना अधिक बुरा और सच्चाइयों से जितना दूर थ उसे उतना ही अधिक भय लग रहा था। सच्चे ख़ुदा का नाम उच्चरित होते ही हर झूठा ख़ुदा और बनावटी उपास्य कांप कर रह गया।

मक्का के क़ुरैश, यमन व शाम (सीरिया) और दूसरे देशों में व्यापार के लिए जाते और अल्लाह के रसूल हज़रत तुहम्मद के नबी होने और आपके संदेश की चर्चा करते तो सुनने वाले आप ही आप सोच में पड़ जाते, उनके मन में यह भाव जाग्रत होता कि यह क्रांति हमारी ओर भी बढ़ी चली आ रही है, और इसकी सीमाओं से हम अछूते नहीं रह सकते।

इन तमाम विरोधों, शत्रुताओं और कठिनाइयों के बाद भी ख़ुदा का सच्चा नबी सत्य की घोषणा कर रहा था, कोई विरोध उसके दृढ़ निश्चय में तनिक भी ढील पैदा नहीं कर सकता था। वह सत्य, न्याय और दृढ़ता की प्रतिमूर्ति था। ये तमाम आंधियां उसे डिगा न सकीं। उसके संदेश का दीपक आंधियों की गोद में भी जलता रहा, और तूफ़ान की धार पर भी विकसीत होता रहा। विजय उस के पांव छू रही थी।

क़ुरैश विरोधी होने के बावजूद भी बड़े असमंजस और घुटन में पड़े थे। उनकी अन्तरात्मा से आवाज़ आती कि मूर्खो! जिसे तुम लड़कपन से सच्चा कहतें आए हो और जिसके मुख से किसी के कान ने एक अक्षर भी ग़लत व झूठ नहीं सुना, आज उसी को किस तर्क के आधार पर झुठलाते हो? यह कैसे संभव है कि एक व्यक्ति जो चालीय वर्ष तक सदा सच बोलता रहा और अब एकाएक ही झूठ बोलने लगे और वह भी किसी निजी स्वार्थ या लाभ के

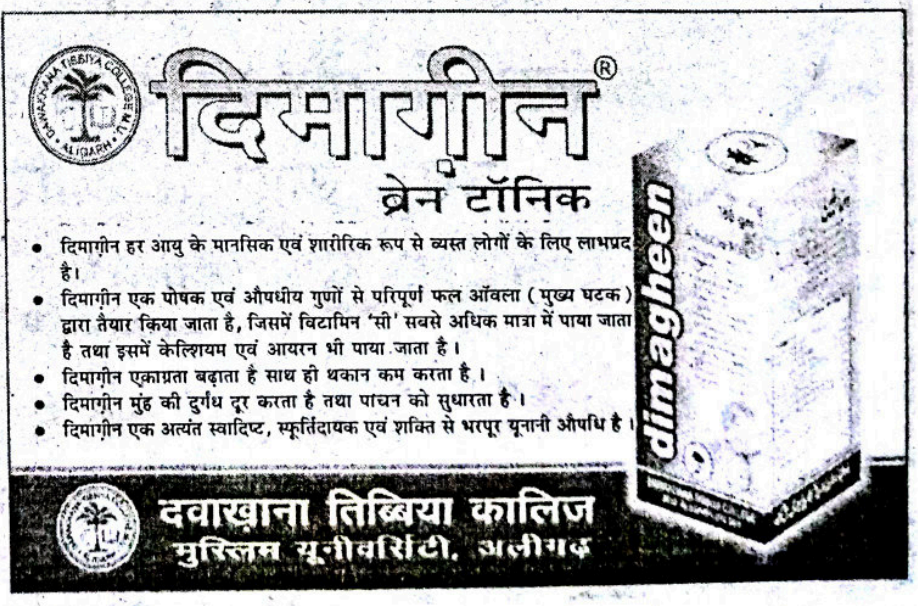

लिए नहीं? वह तुम से धन-दौलत नहीं चाहता, सरदारी और बादशाही की तलब नहीं रखता। केवल 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) के एक सूत्र पर तुम्हें जमा करना चाहता है। पर सब बाप-दादा के संस्कार और क़ौम के रस्म व रिवाज का ध्यान आता तो अन्तरात्मा से निकला हुआ यह स्वर दब कर रह जाता।

क़ुरैश ने मिल-जुल कर अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्ल० से मांग की :

1. आप जब ख़ुदा के सच्चे नबी हैं और ख़ुदा आपकी हर बात मानता है तो मक्का के सामने जो पहाड़ खड़े हैं, जिन्होंने सारे शहर को ढांप और घेर रखा है, उन्हें अपने ख़ुदा से कह कर हटवा दीजिए ताकि हमारे शहर के आस-पास का वातावरण खुला-खुला हो जाए।

2. इराक़ और शाम के निवासी कितने भाग्यवान हैं कि उनके देशों में नदियां बल खाती हुई चलती हैं जिनके कारण वहां कि धरती हरी-भरी और उपजाऊ है। आप भी अपने ख़ुदा से दुआ कीजिए कि कुछ नहरें हमारे देश में भी जारी हो जाएं।

3. आप कहा करते हैं कि मृत्यु और जीवन ख़ुदा के हाथ में है तो फिर अपने ख़ुदा से कहिए कि हमारे बाप-दादाओं को जीवित कर दे और हां! देखिए, एक बात का विशेष ध्यान रहे। वह यह कि हमारे पुरखों में क़ुसई बिन किलाब को तो जैसे-तैसे अवश्य ही जीवित करा दीजिए। क़ुसई हमारा महान नेता था। उसने क़ुरैश के मान-सम्मान को बढ़ाया था और वह सच भी बोला करता था। बस ! हम क़ुसई से भी पूछ लेंगे कि क्या अब्दुल्लाह के बेटे मुहम्मद सच-मुच ख़ुदा के रसूल हैं? क़ुसई झूठ नहीं बोल सकता। सही-सही बात बताएगा। अपनी सन्तानों को क़ुसई जैसा सज्जन पुरुष धोखे और अन्धेरे में नहीं रख सकता ।

4. और हां, मुहम्मद! जीवन की आवश्यकताओं को पूरी करने के लिए तुम्हें स्वयं बाजारों में जाना पड़ता है, अपनी पीठ पर लाद कर सौदा सामान लाना पड़ता है, रोज़ी-रोटी के लिए दौड़-धूप भी करनी पड़ती है। तुम्हारी आर्थिक स्थिति भी ठीक नहीं है और तुम्हारा मकान कच्चा और टूटा-फूटा है—न गर्मी में आराम देनेवाला और नसर्दी में ज़रूरत के लिए काफी—तो फिर तुम अपने ख़ुदा से कहो कि ऐ मुझे नबी बना कर भेजने वाले सामर्थ्यवान ! मेरे लिए शानदार महल बनवा दे। मेरे आस-पास सोने-चांदी के ढ़ेर

بسم الله الرحمن الرحيم

"जिस आदमी की यह ख़्वाहिश हो कि ख़ुदा उसको क़ियामत के दिन की घुटन और ग़म से बचाए, तो उसे चाहिए कि तंगदस्त क़र्ज़दार को मोहलत दे या क़र्ज़ का बोझ उसके ऊपर से उतार दे।"

(हदीस)

AMS Fish Merchants

Near Kadambe Bus Stand
Madel, Madgao (GOA)

लगा दे और मनोविनोद के लिए बाग़ उगा दे। और यह भी कहो अपने ख़ुदा से कि मेरे साथ एक फ़रिश्ता कर दिया जाए ताकि वह लोगों से कहे कि यह आदमी अपने दावे का सच्चा है ।

कुरैश की इन मांगों में उनके छिछोरेपन की पूरी-पूरी झलक मिलती है, उनकी संकुचित दृष्टि और दुनियापरस्ती इसमें देखी जा सकती है । सच तो यह है कि उनके मन में दुनिया की रंगीनियां और धन तथा ऐश्वर्य छाया हुआ था।ऊंचे-ऊंचे महलों, सोने-चांदी के ढेरों और लहलहाते बाग़ों को ही उन्होंने सब कुछ समझ रखा था । मानवता और उसके गुणों का मुल्य वे जानते ही न थे । उन्हें नहीं मालूम था, और अगर मालूम था, तो वे जान-बूझकर अनजान बन रहे थे कि सज्जनता, शालीनता, सत्यप्रियता और मानवता के लिए महलों की चकाचौंध और सोने-चांदी की तड़क-भड़क आवश्यक नहीं है । धन-दौलत की कसौटी पर किसी व्यक्ति की महानता को परखना सबसे बड़ी मूर्खता है और प्रकृति की यही रीति रही है कि सत्य और न्याय के दीप आरंभ में टूटे-फूटे मकानों और झोपड़ियों में ही जलते रहे हैं ।

कुरैश की इन मांगों के उत्तर में नबी के मुख से यूं निकला–'मैं इन बातों के लिए नबी बनाकर नहीं भेजा गया । मैं अपने ख़ुदा से ऐसी चीज़ें कभी न मांगूगा । मुझे अल्लाह ने अपनी ही रहमतों की शुभ-सूचना देने वाला और उसके अज़ाब से डराने वाला बनाकर भेजा है तुम मेरी बात मान लोगे तो लोक-परलोक में तुम्हारा भला होगा, वरना सब्र करूंगा और ख़ुदा के फ़ैसले का इन्तिज़ार करूंगा ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के इस उत्तर पर क़ुरैश साश्चर्य एक दूसरे का मुंह तकने लगे । फिर ससंकोच बोले–

'तुम्हें अपने सच्चे होने का इतना अभिमान है और ख़ुदा पर इतना गर्व है तो तुम आसमान का एक टुकड़ा ही हम पर गिरा दो ।'

इसके उत्तर में आपने फ़रमाया कि ख़ुदा चाहे तो ऐसा कर सकता है ।

इस पर ये लोग बोले कि जब तक तुम ऐसा न करोगे तो हम तुम पर ईमान लाने से रहे ।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा कि यह ख़ुदा के बश में है । वह चाहेगा तो ऐसा हो जाएगा ।

दर्पण





असम में विस्थापन





अनाथ लड़कों की पुकार

VOICE OF ORPHAN BOYS

यतीमख़ाना इस्लामिया (गया)

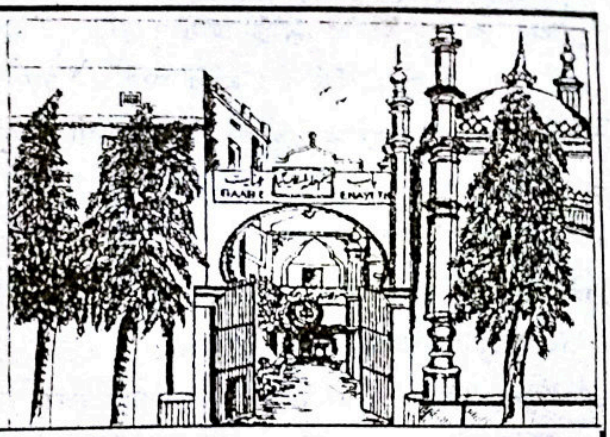

एक परिचय

● दीनी और असरी शिक्षा की अपनी तरह की जानी-मानी रिहाइशी पाठशाला ● 95 वर्षों की सेवाएं ● बहुत से विभाग ● शिक्षा के पड़ाव : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● हिफ़्ज़ का विभाग : हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक ● हर वर्ष बिहार स्कूल बोर्ड परीक्षा का 100 प्रतिशत रिज़ल्ट ● पत्राचार शिक्षा 2012-2013 के सत्र के लिए 11वीं, 12वीं और बी०ए० और लाइब्रेरी साइंस (BLIS) में प्रवेश जारी ● कंप्यूटर की भी शिक्षा ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक अनाथ छात्र पर वार्षिक ख़र्च 12000/- रुपये प्रति वर्ष ● कुल वार्षिक ख़र्च 16 लाख से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● 125 अनाथ बच्चे जिनका पूरा ख़र्च इदारा ही उठाता है ।

● जिस रूप में संभव हो मदद करके अल्लाह से बड़ा इनाम प्राप्त करें–उदाहरण के लिए ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● क़ुरबानी की खाल ● एक अनाथ बच्चे का वार्षिक ख़र्च ● अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम पर कमरा या हॉल बनवाना आदि ।

● याद रखें यहां हर वर्ष ऑडिट (Audit) भी कराया जाता है । आप ख़ुद यतीमख़ाना इस्लामिया पहुंच कर बराबरी का व्यावहारिक नमूना अपनी आंखों से देखें कि किस प्रकार अनाथ और मां-बाप वाले बच्चे मिल-जुलकर रहा करते हैं ।

इनायत पोलिटेक्निक (ENAYETH POLYTECHNIC) की इमारत के निर्माण का काम जोरो शोर से जारी है।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

नोट : यह इदारा विदेशी मुद्रा के क़ानून FCRA के तहत भी रजिस्टर्ड है ।

Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

अब आप विदेश से BANK A/c No. 300402010000187

BANK CODE NO. UBININBBJAM,

UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

में अपनी रक़म भेज सकते हैं

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

चेक, ड्राफ़्ट, मनीऑर्डर या ख़त भेजने का पता

Hon. SECRETARY, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

At+P.o : CHERKI-824237, Distt : GAYA (BIHAR) INDIA

LOCAL DONARS मक़ामी चन्दा देने वाले

BANK A/C NO. : 10581. UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

CORE BANKIN G A/C NO.: 300402010010581. ☎ 0631-2734428 ● Mobile : 9955655960

E-mail : gmocde@yahoo.co.in, Website : www.gmogaya.com

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

अध्यक्ष : डॉ० फ़रासत हुसैन **एज़ाज़ी नाज़िम : डॉ० मुहम्मद एहतिशाम रसूल**

आज़ादी का मन्तव्य क्या ?

■ डॉ॰ प्रीत अरोड़ा
(arorapreet366@gmail.com)

भारत एक आज़ाद देश है । प्रत्येक वर्ष आज़ादी का जश्न पूरे भारतवर्ष में बड़ी धूमधाम और उत्साहपूर्वक मनाया जाता है । आज़ादी से तात्पर्य है–प्रत्येक व्यक्ति को अपने मानवीय मौलिक अधिकारों को प्रयोग करने का पूर्ण रूप से अधिकार हो । चाहे वह निम्न, मध्य या उच्च वर्ग से ही संबंधित क्यों न हो । इसके साथ ही साथ एक साधारण व्यक्ति स्वयं को दूसरे व्यक्ति के कुसमक्ष दलित, दमित व उपेक्षित न महसूस करे अपितु वह अपने व्यक्तित्व और अस्तित्व को सुरक्षित रख सके ।

अब प्रश्न यह उठता है, क्या भारत में रह रहा प्रत्येक व्यक्ति सम्पूर्ण रूप से आज़ादी का जीवन व्यतीत कर रहा है ? सन 1947 को हमारा देश आज़ाद हुआ और थोड़ा-बहुत सामाजिक मूल्यों में बदलाव भी आया, परन्तु समाज को परम्परागत रूढ़ियों से आज भी आज़ादी नहीं मिल पायी । आज़ादी से पूर्व भी व्यक्ति बेबसी, यातना व गुलामी का जीवन जीने को अभिशप्त था और आज़ाद भारत में भी वह अपने मानवाधिकारों से वंचित पालकों और मालिकों पर आश्रित रहकर गुलाम ही है । यदि भारत के प्रत्येक व्यक्ति को नागरिक के रूप में समाज की महत्त्वपूर्ण इकाई व उपयोगी अंग कहा जाता है, तो उसे मानवीय अधिकारों से अपरिचित तथा वंचित क्यों रखा जाता है ? उसे प्रत्येक क्षेत्र में अपने अधिकारों का उचित उपयोग करने की स्वतंत्रता क्यों नहीं दी जाती ? वह परमुखापेक्षी बनकर जीवन व्यतीत क्यों करता है ? आज भी ऐसे कई सवाल हमारे सामने खड़े हैं । गुलामी के चक्रव्यूह में पुरुष, नारी, बच्चे व बुज़ुर्ग आदि सभी वर्ग प्रताड़ित होकर परिभाषित और प्रतिबंधित जीवन जी रहे हैं । अत्याचारों का सिलसिला कहीं रुकता ही नज़र नहीं आता ।

आज सबसे अधिक ज़रूरत है कि व्यक्ति-व्यक्ति के बीच सौहार्दपूर्ण, आत्मीय संबंधों की समानतापूर्ण स्थापना हो और एक ऐसा मानवीय समाज बने जहां कोई भी किसी के साथ बर्बतापूर्ण अमानवीय व्यवहार न करे ।

अगर गुलामी का जीवन जी रहा व्यक्ति अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होना भी चाहता है, तो परिवार व समाज द्वारा उस पर ऊंगली उठाकर प्रश्नचिन्ह लगाए जाते हैं । जब उसे शोषण, अत्याचारों, उत्पीड़नों के कटघरे में अभियुक्त बनाकर व्यापक मानवता के अनगिनत लाभों से वंचित करके मानसिक रूप से त्रस्त किया जाता है । तब उसे सुरक्षा, सम्मान और समानता का ज्ञान नहीं हो पाता । आज इस गुलामी का स्तर पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक और शैक्षणिक स्तर पर अबाध गति से बढ़ता जा रहा है ।

पारिवारिक स्तर पर सदस्यों द्वारा ही एक-दूसरे से भेदभाव करके उसे पराश्रित होने पर मजबूर किया जाता है । ख़ासतौर पर परिवार में नारी की पहचान पुरुष के साथ ही संभव मानी जाती है, यथा-आवश्यकता पड़ने पर घर से निकलने पर पाबन्दी लगाना, शिक्षा से वंचित करना, मानसिक व शारीरिक रूप से शोषित करना तथा आर्थिक अधिकारों से परावलंबी बना देना आदि गुलामी की भूमिका को और भी प्रखर कर देते हैं । इसी तरह परिवार में बुज़ुर्गों की स्थिति भी अत्यंत दयनीय होती जा रही है । वे आत्म-विस्मृति के जाल-जंजाल में फंसकर दीनहीन पतित बनकर घर की क़ैद में डर एवं भय की हथकड़ियों से

For Information On
City Shops, RoaosQ–Products, Restaurants, Magazine, Schools And much more.
Syed Shahbaz Alam Barvi
Business Development Director (09049185093)
Visit us:
www.shoppinglanes.com

बंधकर रह जाते हैं । सामाजिक स्तर में स्थिति और भी शोचनीय है । समाज में नारी-वर्ग की ओर देखें तो आये दिन भ्रूण-हत्या, बलात्कार, दहेज-उत्पीड़न व छेड़छाड़ आदि की घटनाएं दिन-प्रतिदिन अधिकाधिक बढ़ती ही जा रही हैं ।

दूसरे, समाज में बच्चों को लेकर भी ऐसे कई मामले सामने आते हैं जिनसे पता चलता है कि मासूम बच्चों को बंधक बनाकर उनसे रेलवे स्टेशनों और बस-स्टापों पर भीख मंगवाई जाती है ।

अभिभावकों द्वारा बाल-मज़दूरी करवाना भी क़ानूनी-अपराध ही है । अभिभावक ही अपने बच्चों से बाल-मज़दूरी करवाकर उसे असभ्य, अयोग्य एवं अप्रगतिशील बना रहे हैं । बच्चों की तरह बुज़ुर्ग वर्ग भी सामाजिक स्तर पर दुरावस्था का शिकार हो रहे हैं । इसलिए आज ओल्ड ऐज होम्स की संख्या तेज़ी से बढ़ती ही जा रही है । बुज़ुर्ग वर्ग अपनी हिफ़ाजत के लिए इन्हीं संस्थाओं की शरण ले रहे हैं । राजनैतिक स्तर पर योग्य व्यक्ति को उसकी क़ाबलियत के अनुसार अवसर प्रदान नहीं किये जा रहे । उसे वहां भी दूसरों के अधीन रहकर कार्य करने को मजबूर होना पड़ रहा है । आज समाज के प्रत्येक क्षेत्र में राजनीति का बोलबाला देखने को मिलता है । इसी कारण भ्रष्टाचार की समस्या भयानक रूप धारण करती जा रही है जिससे आज प्रत्येक व्यक्ति इसकी पकड़ में आ रहा है ।

धार्मिक स्तर पर कई जगहों पर आज भी उच्च जाति निम्न जाति पर क्रूर और वक्र दृष्टि डालकर उसे समाज से बहिष्कृत कर देती है । निम्नवर्गीय व्यक्ति जीवन से अभिशप्त होकर स्वयं को एक निस्तेज आभाहीन आत्मा की भान्ति महसूस करता है । आर्थिक स्तर पर भी साधारण श्रमजीवी से लेकर सम्पन्न वर्ग के व्यक्ति की स्थिति दयनीय बनती जा रही है । कार्यक्षेत्र में पुरुष-स्त्री दोनों को ही बॉस द्वारा शोषण, स्थानांतरण, कम वेतन और प्रताड़ना के भिन्न तरीक़ों से साक्षात्कार करवाकर दासता की बेड़ियों में बांधकर रखा जाता है जिससे वे आजीवन दूसरों के नियंत्रण में रहकर पराधीन बन जाते हैं । ऐसे ही पारिवारिक क्षेत्र में भी कई बार एक सदस्य द्वारा दूसरे सदस्य का सम्पत्ति पर से अधिकार छीन लिया जाता है । जब बात शैक्षणिक स्तर की होती है तो प्रत्येक व्यक्ति यह जानता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल अक्षर ज्ञान ही नहीं होता अपितु शिक्षा ही मानव में आत्म-सुरक्षा का भाव जागृत करके उसे एक कुशल नागरिक बनाती है । इस बात से भली-भांति परिचित होते हुए भी भारतीय समाज में जहां आज भी बेटियों को शिक्षा के अधिकार से वंचित रखा जाता है, वहां लिंगभेद के कारण समाज में नारी के व्यक्तित्व एवं विकास की सम्भावना ही नहीं होती ।

इस तरह व्यक्ति प्रत्येक क्षेत्र में गुलामी के साये में जीवन की बाज़ी हारकर स्वयं के लिए यथोचित निर्णय ले सकने के अभाव में अपने अधिकारों की रक्षा नहीं कर पाता और उसका मन और शरीर अमानुषिक यंत्रणाओं को सहने का अभ्यस्त बन जाता है । आज नवीन प्रगतिशील जीवन की आंकाक्षा रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के अस्तित्व का बोध उसकी स्वतंत्रता की अनूभूति में ही है । आज सबसे अधिक ज़रूरत है कि व्यक्ति-व्यक्ति के बीच सौहार्दपूर्ण, आत्मीय संबंधों की समानतापूर्ण स्थापना हो और एक ऐसा मानवीय समाज बने जहां कोई भी किसी के साथ बर्बतापूर्ण अमानवीय व्यवहार न करे ।

प्रत्येक व्यक्ति आत्मसम्मान, आत्मनिर्भरता व आत्मविश्वास की भावना के साथ आगे बढ़े । समाज में जिस व्यक्ति को कमज़ोर व असहाय समझकर अवहेलित किया जाता है वह भी दूसरों के समान समाज में अपना महत्व सिद्ध करके जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाये तभी उसे समाज में उचित आदर, सम्मान व स्थान का अधिकारी घोषित किया जा सकेगा । इसके साथ-ही-साथ उन सामाजिक मूल्यों व रूढ़िगत परम्पराओं में भी बदलाव लाना होगा जो एक व्यक्ति को दूसरे के समक्ष दास बनाने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं । जब इन सभी बातों का ध्यान रखा जाएगा तब एक स्वस्थ परिवार, समाज व राष्ट्र का निर्माण संभव हो पाएगा और प्रत्येक व्यक्ति सही मायनों में आज़ाद होगा ।

'कान्ति' के संपादक एडीटर्स गिल्ड के नये एडवाइज़र

'कान्ति' साप्ताहिक एवं मासिक के संपादक डॉ॰ मुहम्मद अहमद को दि एडीटर्स गिल्ड ऑफ़ इंडिया का एडवाइज़र निर्वाचित किया गया है । संपादकों की इस संस्था के अध्यक्ष पूर्व न्यायिक मजिस्ट्रेट श्री रामचन्द्र शुक्ल और महासचिव श्री एल॰एस॰ शर्मा हैं ।

इस्लाम और पश्चिमी जगत

❖ मरयम जमीला

यूरोप और अमेरिका सैद्धांतिक दृष्टि से दीवालिया हो चुके हैं । निष्कर्ष यह है कि उन देशों में शून्य ने जन्म ले लिया है, अतएव बहुत से भले मुसलमानों को विश्वास है कि यह प्रभाव अंततः पश्चिमी जगत को इस्लाम की मुहब्बत की गोद में पहुंचा देगा ।

निस्संदेह पश्चिम के कुछ गिने-चुने और असाधारण व्यक्तियों ने इस्लाम ग्रहण कर लिया है, लेकिन उनका ध र्म व ईमान मात्र एक निजी मामला बनकर रह गया है, जिसका पश्चिमी समाज पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा । इस्लाम ईसाइयत से बिल्कुल अलग और भिन्न धर्म है । वह न तो ईसाइयत की तरह मात्र अल्लाह और बन्दे के आपसी संबंध का नाम है और न मात्र परलोक में निजी मुक्ति की व्यवस्था है । इसके विपरीत वह इन्सान की प्राइवेट ज़िन्दगी के साथ-साथ उसकी पब्लिक ज़िन्दगी से भी संबंध रखता है वह व्यक्तिगत मामला होने के साथ-साथ सामाजिक और सामूहिक मामला भी है । इसी तरह वह मांग करता है कि समाज के सारे विभागों को एक निश्चित और मुख्य सांस्कृतिक ढांचे में ढाला जाए ।

हम मुसलमानों को इस संगीन सच्चाई से विमुख नहीं होना चाहिए कि इस्लाम के विरुद्ध पश्चिम का विद्वेष मात्र ऐतिहासिक कारणों पर आधारित नहीं है, बल्कि इससे कहीं अधिक इस विद्वेष का आधार वह मौलिक विरोधाभास है, जो दोनों संस्कृतियों के बीच पाया जाता है । इसी विरोध ाभास का यह परिणाम है कि वर्तमान पश्चिमी मानसिकता को प्रायः वास्तविक इस्लामी मूल्य, न केवल अरोचक, बल्कि स्पष्ट रूप से अनमेल, बेजोड़ नज़र आते हैं । इस्लाम का पूरे जीवन पर हावी होना और किसी दूसरी व्यवस्था को अपना साझी व साथी स्वीकार न करना, धर्म, क़ानून और शासन का एका व सामंजस्य, जिहाद की धारणा, परदा, बहुपत्नि विवाह कीखुली क़ानूनी इजाज़त, अधिसंख्य ललित कलाओं और खेल-तमाशों की रोकथाम या हतोत्साह करना इस विषय के कुछ उदाहरण हैं । नीचे का अंश एक मुस्लिम पश्चिमी महिला के पत्र से लिया गया है, जो उन्होंने मुझे लिखा था । यह महिला अपने पति के साथ सच्चे दिल से मुसलमान हुई थी । इस पत्र से स्पष्ट होता है कि पश्चिमी जीवन-पद्धति को छोड़कर इस्लामी जीवन-पद्धति को अपनाने में इस दम्पति को कैसी मनोवैज्ञानिक महरूमी (निराशा) का सामना करना पड़ा । वह लिखती हैं–

''आपके भाग्यवान व्यक्तित्व के विपरीत हम पश्चिमी जीवन से जी भरकर आनन्दित होते थे । मेरे पति ग्यारह वर्ष से प्यानो बजाते आ रहे थे । उन्हें यूरोप के क्लासिकी संगीत और अमेरिकी हब्शियों के पवित्र संगीत-वादन से प्रेम था । वह बड़े अच्छे चित्र, मुख्य रूप से जनसाधारण के चित्र खींच सकते थे । हम दोनों की नृत्य में भी रुचि थी और कभी-कभी अपने इस शौक़ को पूरा भी किया करते थे । इसी तरह हम हर प्रकार के पश्चिमी खाने खाया करते थे और हलाल व हराम में तनिक भी अन्तर न करते थे । हम दोनों अपनी साप्ताहिक छुट्टी अपने मित्रों के साथ व्यतीत करते । इन दोस्तों में मर्द भी थे और औरतें भी । समुद्र तट पर स्नान करने जाते । रेस्टोरेंटों, थियेटरों, ललित कलाओं के अजायब घरों और सिनेमाओं की सैर करते । अच्छे से अच्छा कपड़ा पहनते और छोटी-छोटी इच्छाओं पर दिल खोलकर रुपया लुटाते । हम दोनों में से किसी ने भी पूरा-पूरा अंदाज़ा नहीं किया था कि इस्लाम हमारे जीवन के अति निजी और घरेलू क्षेत्र में भी कितना गहरा दख़ल रखता है, हमने पाकिस्तान में रहने का निर्णय किया तो मेरा विचार था कि मुझे साड़ी या क़मीज़ और शलवार पहनना और दोपट्टा ओढ़ना होगा, लेकिन बुर्क़े और परदे की अनिवार्य आवश्यकता का पता उस समय चला, जब हमने अपने मुसलमान पड़ोसियों के दैनिक जीवन का अवलोकन शुरू किया । हमें कभी एहसास तक न हुआ था कि अपने घर वालों और मित्रों का चित्र खींचना भी कोई बुरी बात है या यह कि पत्नी अपने पति के साथ जब और जहां चाहे, नहीं जा सकती, सिनेमा देखना बुरा है, समुद्र के किनारे बैठने के लिए जाना ठीक नहीं, फिर भी मनोविहार की जो सामग्री हम यूरोप में छोड़ आये थे, उसकी पूर्ति हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की एक हदीस से हो गयी, जिसमें हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया है कि मर्दों को तीरंदाज़ी करने, अपने घोड़ों को सधाने और अपनी पत्नियों के साथ हंसी-दिल्लगी करने की अनुमति है । दूसरे सारे रुझानों को समय की बर्बादी समझनी चाहिए । हम दोनों स्वीकार करते हैं कि यह बात ठीक है,

लेकिन जिस मनोविहार से यूरोप में आनन्दित हुआ करते थे, उससे अलग रहना आज भी हमें जंगलीपन की हद तक दूभर मालूम होता है ।''

वास्तव में यह हमारी अपनी ग़लती है । हम इस्लाम को पूरी सत्यनिष्ठा और साहस के साथ ठीक-ठीक नहीं पेश कर सके । यही कारण है कि नवमुस्लिम पश्चिमवादियों का अधिसंख्य इस्लाम की बिगड़ी हुई धारणा से बड़ी मुश्किल में फंस जाता है, इसलिए कि वे अपने ग़ैर-मुस्लिम ज़ेहनों (सोच-विचार) को मुसलमान ज़ेहनों में बदलने में मनोवैज्ञानिक रूप से विवश रहते हैं । अतएव नये धर्म में दाख़िल होते हैं, तो बिल्कुल बेख़बरी व संज्ञाहीनता में अपने पुराने मूल्यों और विचारधाराओं को साथ लेकर आते हैं । फिर उन्हें अपने नये वातावरण के अनुकूल ढालने का विफल यत्न करते हैं । अंततः वे प्रायः कड़वी निराशाओं का शिकार हो जाते हैं, जो उन्हें कभी-कभी धर्म-विमुखता तक पहुंचा देती हैं । अगर हम सच्चे दिल से यह ईमान रखते हैं कि इस्लाम सभी जीवन-व्यवस्थाओं से उच्च व श्रेष्ठ एक ईश्वरीय जीवन-व्यवस्था है, तो हमें उन लोगों की न तो आलोचना से डरना चाहिए, न निंदा से, जिनके मूल्य हमारे मूल्यों से बिल्कुल भिन्न हैं । कल्पना कीजिये, पश्चिम की वर्तमान सभ्यता सैद्धांतिक दृष्टि से दीवालिया भी हो चुकी है, तब भी पश्चिमवासियों ने अभी तक इस वास्तविकता को स्वीकार नहीं किया और जब तक उनकी जीवन-पद्धति संसार में हर जगह छायी हुई है और विभिन्न धारणाओं की पोषक समस्त दूसरी सभ्यताएं तेज़ी से पतनग्रस्त हैं, उस समय तक वे इस वास्तविकता को स्वीकार भी नहीं कर सकते । वें अपनी जीवन-पद्धति की श्रेष्ठता और उच्चता में दृढ़ विश्वास रखते हैं । जब तक इस जीवन पद्धति का इस संसार में डंका बजता है, उनसे यह आशा ग़लत होगी कि वह अपनी सभ्यता को छोड़कर एक ऐसी सभ्यता को अपना लेंगे, जो उससे बिल्कुल भिन्न भी है और जिसका शानदार अतीत बस इतिहास के पन्नों की शोभा बन चुका है ।

हमारा एक दुर्भाग्य और भी है । मुस्लिम देशों से यूरोप और अमेरिका जाने वाले छात्रों और राजदूतों की खेप में दिन-प्रतिदिन वृद्धि हो रही है । यह वृद्धि नुक़सान के अतिरिक्त कोई चीज़ अपने दामन में नहीं रखती । पश्चिमी देशों को जाने वाले मुसलमान अपने सीनों में इस्लाम की दूसरी तमाम जीवन व्यवस्थाओं पर श्रेष्ठता का विश्वास और दूसरों की उस दौलत से लाभांवित होने का जोश व ज़ज़्बा लेकर नहीं जाते । इसके विपरीत उन्हें अपने 'पिछड़े' और 'ग़ैर-तरक़्क़ीयाफ़्ता' होने का एहसास हर वक़्त लज्जित बनाए रखता है, अतएव वे पश्चिमवादियों को यक़ीन व ईमान की रोशनी से लाभांवित करने के बजाय पश्चिम की शैक्षिक संस्थाओं में पश्चिमी सिद्धांत और तकनीक में दक्षता प्राप्त करते हैं और जब वापस आते हैं तो इन सिद्धांतों और तौर-तरीक़ों को अपने साथ लेकर आते हैं । इन सब से बदतर वे दूत हैं, जो सरकारी उत्सवों में शराब पीते और ग़ैर-महरम औरतों के साथ नाचते हैं और फिर बड़े अभिमान के साथ अख़बारों में चित्र छपवाते हैं, इस तरह वह बड़ी ढिठाई से इस्लाम के एक-एक आदेश के विरुद्ध कार्य करते हैं और अपनी अन्तरात्मा में तनिक भी खटक महसूस नहीं करते ।

अमेरिका और यूरोप वाले जब यह देख रहे हों कि वे देश जहां मुसलमान शताब्दियों से बहुमत में रहते चले आये हैं, पश्चिमी संस्कृति व सभ्यता को अपनाने और अपनी इस्लामी मीरास को तज देने के लिए अति बेचैन हैं, तो ऐसी शक्ल में उनसे यह आशा कि वे इस्लाम ग्रहण कर लेंगे, क्या सरासर अतार्किक बात नहीं है ? हम यूरोप और अमेरिका के ग़ैर-मुस्लिमों को तो इस्लाम की राजनीतिक व्यवस्था अपनाने की दावत दें, उसकी ख़ूबियों के गुण गाएं और यह नसीहत करें कि इस्लाम एक पूर्ण आर्थिक व्यवस्था है और अपने दामन में तमाम सामाजिक समस्याओं का हल रखता है, लेकिन इस्लामी जगत के किसी भाग में ऐसे समाज का व्यवहारतः अस्तित्व तक न हो । इससे बढ़कर हानिप्रद बात और क्या हो सकती है कि हम सरफिरे राष्ट्रवादी तानाशाहों के साये में नाममात्र राजनीतिक स्वतंत्रता, कलात्मक तथा औद्योगिक प्रगति, अधार्मिक शैक्षिक संस्थाओं की प्रगति और बढ़ावें, औरतों को मताधिकार, सऊदी अरब में दास-प्रथा की समाप्ति और मक्का व मदीना के पवित्र नगरों में गगनचुम्बी इमारतों के निर्माण को इस्लाम के पुनर्जागरण के साथ मिला-जुला दें । ये बातें इस्लाम के पुनर्जागरण या 'जागरूकता' की प्रतीक नहीं है, बल्कि इनसे तो मुसलमान देशों में पश्चिमी सभ्यता और सिद्धांतों के बढ़ते हुए प्रभुत्व का पता चलता है । जब तक हम स्वयं अपने व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन में अपने धर्म को लागू करने का वास्तविक, जीवित और व्यावहारिक उदाहरण पेश नहीं करते, ग़ैर-मुस्लिम दुनिया पर किसी प्रकार का निर्णायक धार्मिक और नैतिक प्रभाव डालने की आशा पूर्णतः व्यर्थ है ।

आओ, ऐसे दीप जलाएं

आओ, ऐसे दीप अलाएं
मन का अंधेरा मिट जाए

द्वेष की मोटी हटे कालिमा
जलें नेह के मधुरिम दीप
आंखों में विश्वास पले यूं
पानी में जैसे हो सीप

हाथ-हाथ को थामे कसकर
सब तेरा-मेरा मिट जाए

ऊंची-ऊंची ये इमारतें
झोंपड़ियों के आंगन आके,
अपने रेशम उजालों को
बांटें इनके बीच भी लाके

मुद्दत से फैली पीड़ा का
उलझा यह घेरा मिट जाए

अपनापन की कंदीलों से
रात अमावस की ज्योतित हो
फुलझड़ियों-सी मुस्कानें बहु
दूध धुली वाणी मुखरित हो

कुत्सित-कुंचित आचारों का
कंटकमय फेरा मिट जाए ।

अभिराम सत्यज्ञ जयशील
द्वारा श्री शंभु प्रसाद, हथुआ डाकघर-841436

कविताएं

चिड़चिड़े

बुजुर्ग चिड़चिड़े हो नहीं जाते
उनकी अवहेलना उनका अवमूल्यन
उन्हें चिड़चिड़ा बना देते हैं ।

जब कोई नहीं सुनता उनकी
न घर में न बाहर
जब अनदेखी होती है उनकी
छोटे-बड़े हर मामले में ।

जब वह भरे पूरे परिवार में
निबट अकेले होकर रह जाते हैं ।
जब वह शिद्दत से महसूस करते हैं
कि अब उनका कोई उपयोग नहीं ।

जब उन्हें अपना अस्तित्व
कोने कतरे में पड़े
किसी टीन डिब्बे जैसा
प्रतीत होने लगता है
जिसे आंख उठा कर देखना भी
कोई गवारा नहीं करता ।

जब उनके अपने ही
भुला देते हैं उनकी उपलब्धियां
जीवन भर परिवार हेतु किया गया
उनका त्याग और संघर्ष ।

तब बुजुर्गों के मन में
एक कड़वाहट पनपने लगती है
और वह हो जाते हैं चिड़चिड़े !

ओम प्रकाश बजाज
बी-2, गगन विहार, गुप्तेश्वर,
जबलपुर-482001 (म०प्र०)

Md. Rashid
9835125717

N. S. ENCLAVE

Masud Ahmad
9431107797

आप मकान,
दुकान, कोठी,
रिहाइशी मकान एवं
सस्ते और सुन्दर
प्लाट एवं फ्लैट
के लिए
संपर्क करें।



साथ में
बी॰ एड॰ कॉलेज
एवं
इंजीनियरिंग कॉलेज
की भी सुविधा
उपलब्ध है।

साथ में मस्जिद एवं क़ब्रिस्तान भी है।

नग़मा ड्रेसेज

हमारे यहां फैंसी साड़ियां, रेडिमेड ड्रेस, टी शर्ट,
बाबा सूट, फ्रॉक, मिडी, नाइटी, स्कूल ड्रेस,
जींस पैंट एवं फैंसी रेडिमेड होजरी वस्त्रों के लिए पधारें।

OFFICE CONTACT : NAGMA DRESSES
Booti Chowk, Dubey Market, Ranchi (Jharkhand)

CONTACT No. 2 Masud Ahmad, Hamid Book Depot,
Opp. Urdu Library,
Main Road, Ranchi-834001 (Jharkhand)

Mobile : 09431107797

नेता जी

चुनाव जीतते ही–
नेता जी के पर निकल आये,
और जनता के पर–
कतरने में जुट गये ।
यह सत्य–
जनता को बहुत बाद में,
पता चला
कि पांच साल के लिए,
मुफ़्त में लुट गये ।
नेता जी ने–
पुराना चोला–
राजघाट पर उतार दिया,
खादी को धार लिया,
और आज़ादी के,
अर्थ का अनर्थ करने लगे ।
शहीदों का अमूल्य त्याग–
व्यर्थ करने लगे ।
देश के टॉप घोटाले
नेता जी के हवाले से ही
संपन्न हो रहे हैं ।
रात की कौन कहे–
दौलत के नशे में
नेता जी–
सुबह से ही
टन्न हो रहे हैं ।
मीडिया ने पूछा
''दोषी कौन-कौन हैं''
नेता जी मौन थे,
मौन हैं ।
यूं नेता जी
ग़रीबों की तरह
रहते हैं अपने देश में ।
परन्तु–
करोड़ों का काला धन–
जमा है विदेश में ।
नेता जी–
किसी का उधार नहीं रखते
यदि एक हाथ से लेते हैं,
तो दूसरे हाथ से देकर,
हिसाब
बराबर कर देते हैं ।
जिस पर दिल आ जाए–
उसका घर भर देते हैं ।
यूं भाषणों,
आश्वासनों की रेल-पेल है ।
जनता को मूर्ख बनाना
नेता जी का रोज़ का खेल है ।
हां...आजकल–
विभागीय फ़ाइलों पर,
उनके अधीनस्थ–
लाल-फीता बांधने में व्यस्त हैं ।
और नेता जी–
उद्घाटनों का लाल-फीता,
काटने की बीमारी से ग्रस्त हैं ।
नेता जी–
आख़िर नेता जी ठहरे ।
जनता चिल्लाती है...
तो नेता जी हो जाते बहरे ।
नेता जी, नेता जी जो ठहरे ।।

डॉ॰ अर्चना रानी वालिया
286, स्नेहकुंज कॉलोनी, जौनपुर दक्षिण,
कोटद्वार (गढ़वाल) उत्तराखंड

पूंजीवादी दानव की पहचान

शीर्षक लेख प्रस्तुत है अरुंधति राय द्वारा लिखित और भारत भूषण द्वारा अनूदित ''पूंजीवाद : एक प्रेत कथा''। यह लेख आउटलुक से साभार लिया गया है। –संपादक

एंटिला भारत के सबसे अमीर आदमी मुकेश अंबानी का घर या मकान है। आज तक के सबसे महंगे इस आशियाने के बारे में मैंने पढ़ा था, सत्ताईस मंज़िलें, तीन हेलीपैड, नौ लिफ्टें, हैंगिंग गार्डन्स, बॉलरूम्स, वेदर रूम्स, जिम्नेजियम, छह मंज़िला पार्किंग और छह सौ नौकर-चाकर। आड़े खड़े लॉन की तो मुझे अपेक्षा ही नहीं थी–27 मंज़िल की ऊंचाई तक चढ़ती घास की दीवार, एक विशाल धातु के ग्रिड से जुड़ी हुई। घास के कुछ सूखे टुकड़े थे, कुछ आयताकार चकत्तियां टूटकर गिरी हुई भी थीं। ज़ाहिर है, 'ट्रिकल डाउन' (समृद्धि के बूंद-बूंद रिस कर निम्न वर्ग तक पहुंचने का सिद्धांत) ने काम नहीं किया था।

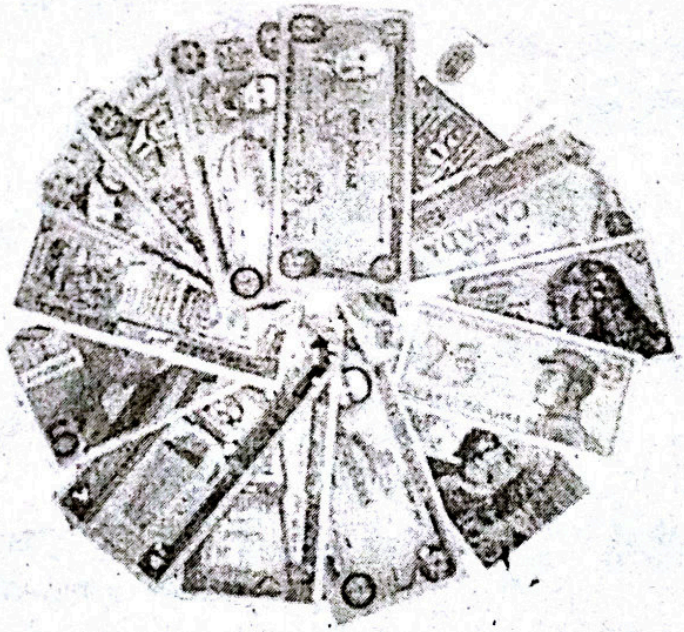

मगर 'गश-अप' (ऊपर की ओर उबल कर पहुंचने का काम) ज़रूर हुआ है। इसीलिए 120 करोड़ लोगों के देश में, भारत के 100 सबसे अमीर व्यक्तियों के पास सकल घरेलू उत्पाद (जी॰डी॰पी॰) के एक चौथाई के बराबर संपत्ति है।

राह चलते लोगों में (और न्यूयार्क टाइम्स में भी) चर्चा का विषय है, या कम-अज़-कम था, कि इतनी मशक़्क़त और बाग़वानी के बाद अंबानी परिवार एंटिला में नहीं रहता। पक्की ख़बर किसी को नहीं। लोग अब भी भूतों और अपशकुन, वास्तु और फेंगशुई के बारे में कानाफूसियां करते हैं। या शायद ये सब कार्ल मार्क्स की ग़लती है। उन्होंने कहा था, पूंजीवाद ने 'अपने जादू से उत्पादन के और विनिमय के ऐसे भीमकाय साधन खड़े कर दिये हैं कि उसकी हालत उस जादूगर जैसी हो गयी है जो उन पाताल की शक्तियों को क़ाबू करने में सक्षम नहीं रहा है जिन्हें उसी ने अपने टोने से बुलाया था।'

भारत में, हम 30 करोड़ लोग जो नये, उत्तर-आई॰एम॰एफ़॰ (अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष) 'आर्थिक सुधार' मध्य वर्ग का हिस्सा हैं उनके लिए–बाज़ार–पातालवासी आत्माओं, मृत नदियों के सूखे कुओं, गंजे पहाड़ों और निरावृत वनों के कोलाहलकारी पिशाच साथ-साथ रहते हैं : क़र्ज में डूबे ढाई लाख किसानों की मार्मिक यादें, जिन्होंने ख़ुद अपनी जान ले ली थी, और वे 80 करोड़ जिन्हें हमारे लिए रास्ता बनाने हेतु और ग़रीब किया गया और निकाला गया के साथ-साथ रहते हैं जो बीस रुपये प्रति दिन से कम में गुज़ारा करते हैं।

मुकेश अंबानी व्यक्तिगत तौर पर 2,000 करोड़ डॉलर (यहां तात्पर्य अमेरिकी से), जो मोटे तौर पर 10 लाख करोड़ रुपये से ज़्यादा ही होता है, के मालिक हैं। रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (आर॰आई॰एल॰), 4,700 करोड़ डॉलर (रु॰ 23,5000 करोड़) की मार्केट केपिटलाइज़ेशन वाली

पूंजीवाद के कुप्रभाव

और वैश्विक व्यवसायिक हितों, जिनमें पेट्रोकेमिकल्स, तेल, प्राकृतिक गैस, पॉलिस्टर धागा, विशेष आर्थिक क्षेत्र, फ्रेश फूड रीटेल, हाईस्कूल, जैविक विज्ञान अनुसंधान और मूल कोशिका संचयन सेवाओं (स्टेम सैल स्टोरेज सर्विसेज) शामिल हैं, में वे बहुतांश नियंत्रक हिस्सा रखते हैं । आर॰आई॰एल॰ ने हाल ही में इंफोटेल के 95 प्रतिशत शेयर ख़रीदे हैं । इंफोटेल एक टेलीविज़न संकाय (कंजोर्टियम) है जिसका 27 टी॰वी॰ समाचार और मनोरंजन चौनलों पर नियंत्रण है इनमें सी॰एन॰एन॰-आई॰बी॰एन॰, आई॰बी॰एन॰ लाइव, सी॰एन॰बी॰सी॰, आई॰बी॰एन॰ लोकमत और लगभग हर क्षेत्रीय भाषा का ई॰टी॰वी॰ शामिल है । इंफोटेल के पास फोर-जी ब्रॉडबैंड का इकलौता अखिल भारतीय लाइसेंस है । फोर-जी ब्रॉडबैंड ''तीव्रगति सूचना संपर्क व्यवस्था'' (पाइप लाइन) है जो, अगर तकनीक काम कर गयी तो, भविष्य का सूचना एक्सचेंज साबित हो सकती है । श्रीमान अंबानी जी एक क्रिकेट टीम के भी मालिक हैं ।

आर॰आई॰एल॰ उन मुट्ठी भर निगमों (कॉरपोरेशनों) में एक है जो भारत को चलाते हैं । दूसरे निगम हैं टाटा, जिंदल, वेदांता, मित्तल, इंफोसिस, एसार और दूसरी रिलायंस (अनिल धीरूभाई अंबानी ग्रुप अर्थात ए॰डी॰ए॰जी॰) जिसके मालिक मुकेश के भाई अनिल हैं । विकास के लिए उनकी दौड़ यूरोप, मध्य एशिया, अफ़्रीक़ा और लातिन अमेरिका तक पहुंच गयी है । उन्होंने दूर-दूर तक जाल फैलाये हुए हैं । वे दृश्य हैं और अदृश्य भी, ज़मीन के ऊपर हैं और भूमिगत भी । मसलन, टाटा 80 देशों में 100 से ज़्यादा कंपनियां चलाते हैं । वे भारत की सबसे पुरानी और विशालतम निजी क्षेत्र की बिजली पैदा करने वाली कंपनियों में से हैं । वे खदानों, गैस क्षेत्रों, इस्पात प्लांटों, टेलीफ़ोन, केबल टि॰वी॰ और ब्रॉडबैंड नेटवर्क के मालिक हैं और समूचे नगरों को नियंत्रित करते हैं । वे कार और ट्रक बनाते हैं, ताज होटल शृंखला, जगुआर, लैंड रोवर, देवू, टेटली चाय, प्रकाशन कंपनी, बुकस्टोर शृंखला, आयो-डीन युक्त नमक के एक बड़े ब्रांड और सौंदर्य प्रसाधन की दुनिया के बड़े नाम लैक्मे के मालिक हैं । आप हमारे बिना जी नहीं सकते : बड़े आराम से उनके विज्ञापन की यह टैगलाइन हो सकती है ।

ऊपर को बढ़ो वचनामृत के अनुसार, आपके पास जितना ज़्यादा है, उतना ही ज़्यादा आप और पा सकते हैं ।

कारोबारियों का साकार होता सपना

हर चीज़ के निजीकरण के युग ने भारतीय अर्थव्यवस्था को दुनिया में सबसे तेज़ी से बढ़ती अर्थव्यवस्था बना दिया है। फिर भी, किसी पुराने ढंग के अच्छे उपनिवेश की भांति, इसका मुख्य निर्यात इसके खनिज ही हैं । भारत के नये भीमकाय निगम (मेगा-कॉरपोरेशन)–टाटा, जिंदल, एसार, रिलायंस, स्टरलाइट–वे हैं जो धक्का-मुक्की करके उस मुहाने तक पहुंच गये हैं जो गहरे धरती के अंदर से निकाला गया पैसा उगल रहे हैं । कारोबारियों का तो जैसे सपना साकार हो रहा है–वे वह चीज़ बेच रहे हैं जो उन्हें ख़रीदनी नहीं पड़ती ।

कॉरपोरेट संपत्ति का दूसरा मुख्य स्रोत है उनकी भूमि के भंडार । दुनिया भर में कमज़ोर और भ्रष्ट स्थानीय सरकारों ने वॉल स्ट्रीट के दलालों, कृषि-व्यवसाय वाले निगमों और चीनी अरबपतियों को भूमि के विशाल पट्टे हड़पने में मदद की है । (ख़ैर इसमें पानी नियंत्रण तो शामिल है ही)। भारत में लाखों लोगों की भूमि अधिग्रहित करके निजी कॉरपोरेशनों को–विशेष आर्थिक क्षेत्रों (एस॰ई॰जेड॰), आधारभूत संरचना (इन्फ्रास्ट्रक्चर) परियोजनाओं, बांध, राजमार्गों, कार निर्माण, रसायन केन्द्रों, और फॉर्मूला वन रेसों के लिए 'जन हितार्थ' दी जा रही है । (निजी संपत्ति की संवैधानिक पवित्रता ग़रीबों के लिए कभी लागू नहीं होती)। हर बार स्थानीय लोगों से वादे किये जाते हैं कि अपनी भूमि से उनका विस्थापन या जो कुछ भी उनके पास है उसका हथियाया जाना वास्तव में रोज़गार निर्माण का हिस्सा है । मगर अब तक हमें पता चल चुका है कि सकल घरेलू उत्पाद की दर में वृद्धि और नौकरियों का संबंध एक छलावा है । 20 सालों के 'विकास' के बाद भारत की श्रमशक्ति

की साठ प्रतिशत आबादी स्वरोज़गार में लगी है और भारत के श्रमिकों का 90 प्रतिशत हिस्सा असंगठित क्षेत्र में कार्य करता है ।

आज़ादी के बाद, अस्सी के दशक तक, जन आंदोलन, नक्सलवादियों से लेकर जयप्रकाश नारायण के संपूर्ण क्रांति आंदोलन तक, भूमि सुधारों के लिए, सामंती ज़मींदारों से भूमिहीन किसानों को भूमि के पुनर्वितरण के लिए लड़ रहे थे । आज भूमि और संपत्ति के पुनर्वितरण की कोई भी बात न केवल अलोकतांत्रिक बल्कि पागलपन मानी जाएगी । यहां तक कि सर्वाधिक उग्र आंदोलनों तक को घटा कर, जो कुछ थोड़ी-सी ज़मीन लोगों के पास रह गयी है, उसे बचाने के लिए लड़ने पर पहुंचा दिया गया है । गांवों से खदेड़े गये, छोटे शहरों और महानगरों की गंदी बस्तियों और झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले दसियों लाख भूमिहीन लोगों का, जिनमें बहुसंख्य दलित एवं आदिवासी हैं, रेडिकल विमर्श तक में कोई उल्लेख नहीं होता ।

देश के और भी हिस्से हैं जहां से कोई ख़बर नहीं आती । बहुत ही कम जनसंख्या वाले पर सैन्यीकृत उत्तर-पूर्वी राज्य अरुणाचल प्रदेश में 168 बड़े बांध बनाये जा रहे हैं जिनमें अधिकतर निजी क्षेत्र के हैं । मणिपुर और कश्मीर में ऊंचे बांध बनाये जा रहे हैं जो समूचे ज़िलों को डुबो देंगे, ये दोनों ही अत्यंत सैन्यीकृत राज्य हैं जहां सिर्फ़ बिजली की कटौती का विरोध करने के लिए भी लोगों को मारा जा सकता है। (ऐसा कुछ ही हफ़्तों पहले कश्मीर में हुआ ।) तो वे बांध का निर्माण कैसे रोक सकते हैं ?

जब गश-अप उस चमकती पिन की नोक पर संपत्ति जमा करता जाता है जहां हमारे अरबपति घिरनी खाते हैं, तब पैसे की लहरें लोकतांत्रिक संस्थाओं पर थपेड़े खाती हैं– न्यायालय, संसद और मीडिया पर भी और जिस तरीक़े से उन्हें कार्य करना चाहिए उसे गंभीर जोखिम में डाल देती हैं । चुनावों के दौरान के तमाशे में जितना अधिक शोर होता है, हमारा विश्वास उतना ही कम होता जाता है कि लोकतंत्र सचमुच जीवित है ।

भारत में सामने आने वाले हर नये भ्रष्टाचार के मामले के सामने उसका पूर्ववर्ती फीका लगने लगता है । 2011 की गर्मियों में टू-जी स्पेक्ट्रम घोटाला सामने आया । पता चला कि कॉरपोरेट्स ने एक मददगार सज्जन को केन्द्रीय दूरसंचार मंत्री बनवाकर चार हज़ार करोड़ डॉलर (दो लाख करोड़) सार्वजनिक धन खा लिया, उन महोदय ने टू-जी दूरसंचार स्पेक्ट्रम की क़ीमत बेहद कम करके आंकी और अपने यारों के हवाले कर दिया । प्रेस में लीक हुए टेलीफ़ोन टेप संभाषणों ने बताया कि कैसे उद्योगपतियों का नेटवर्क और उनकी अग्र कंपनियां, मंत्रीगण, वरिष्ठ पत्रकार और टी॰वी॰ एंकर इस दिनदहाड़े वाली डकैती की मदद में मुब्तिला थे।

निजीकरण और दूरसंचार स्पेक्ट्रम की अवैध बिक्री में युद्ध, विस्थापन और पारिस्थितिकीय विनाश शामिल नहीं हैं । मगर भारत के पर्वतों, नदियों और वनों के मामले में ऐसा नहीं है । शायद इसलिए कि इसमें खुल्लम-खुल्ला लेखापद्धति घोटाले जैसी स्पष्ट सरलता नहीं है, या शायद इसलिए कि यह सब भारत के 'विकास' के नाम पर किया जा रहा है, इस वजह से मध्य वर्ग के बीच इसकी वैसी अनुगूंज नहीं है ।

कैसा संयोग ?

2005 में छत्तीसगढ़, ओडिशा और झारखंड की राज्य सरकारों ने बहुत सारे निजी कॉरपोरेशनों के साथ सैकड़ों समझौता-पत्रों (एम॰ओ॰यू॰) पर दस्तख़त कर मुक्त बाज़ार के विकृत तर्क को भी धता बताकर खरबों रुपये के बॉक्साइट, लौह अयस्क और अन्य खनिज उन्हें कौड़ियों के दाम दे दिये । (सरकारी रॉयल्टी 0.5 प्रतिशत से 7 प्रतिशत के बीच थी ।)

टाटा स्टील के साथ बस्तर में एक एकीकृत इस्पात संयंत्र के निर्माण के लिए छत्तीसगढ़ सरकार के समझौता पत्र पर दस्तख़त किये जाने के कुछ ही दिनों बाद सलवा जुडूम नामक एक स्वयंभू सशस्त्र अर्धसैनिक बल उभरा । सरकार

ने बताया कि सलवा जुडूम जंगल में माओवादी छापामारों के 'दमन' से त्रस्त स्थानीय लोगों का स्वयंस्फूर्त विद्रोह है । सलवा जुडूम सरकार वित्त और शस्त्रों से लैस तथा खनन निगमों से मिली सब्सीडी प्राप्त एक आधारभूमि तैयार करने का ऑपरेशन निकला । दीगर राज्यों में दीगर नामों वाले ऐसे ही अर्धसैनिक बल खड़े किये गये । प्रधानमंत्री ने घोषणा की कि माओवादी 'सुरक्षा के लिए भारत में एकमात्र और सबसे बड़ा ख़तरा हैं ।' यह जंग का ऐलान था ।

2 जनवरी, 2006 को पड़ोसी राज्य उड़ीसा के कलिंगनगर ज़िले में, शायद यह बताने के लिए कि सरकार अपने इरादों को लेकर कितनी गंभीर है, टाटा इस्पात कारख़ाने की दूसरी जगह पर पुलिस की दस पलटनें आयीं और उन गांव वालों पर गोली चला दी जो वहां विरोध प्रदर्शन के लिए इकट्ठा हुए थे । उनका कहना था कि उन्हें ज़मीन के लिए जो मुआवज़ा मिल रहा है वह कम है । एक पुलिसकर्मी समेत 13 लोग मारे गये और सैंतीस घायल हुए । छह साल बीत चुके हैं, यद्यपि सशस्त्र पुलिस द्वारा गांव की घेरेबंदी जारी है मगर विरोध ठंडा नहीं पड़ा है ।

इस बीच सलवा जुडूम छत्तीसगढ़ में वनों में बसे सैकड़ों गांवों से आग लगाता, बलात्कार और हत्याएं करता बढ़ता रहा । इसने 600 गांवों को ख़ाली करवाया, 50,000 लोगों को पुलिस कैंपों में आने और 3,50,000 लोगों को भाग जाने के लिए विवश किया । मुख्यमंत्री ने घोषणा की कि जो जंगलों से बाहर नहीं आएंगे उन्हें 'माओवादी उग्रवादी' माना जाएगा । इस तरह, आधुनिक भारत के हिस्सों में, खेत जोतने और बीज बोने जैसी कामों को आतंकवादी गतिविधियों के तौर पर परिभाषित किया गया । कुल मिला कर सलवा जुडूम के अत्याचारों ने माओवादी छापामार सेना के संख्याबल में बढ़ोत्तरी और प्रतिरोध में मज़बूती लाने में मदद की । सरकार ने 2009 में वह शुरू किया जिसे ऑपरेशन ग्रीन हंट कहा जाता है । छत्तीसगढ़, उड़ीसा, झारखंड और पश्चिम बंगाल में अर्धसैनिक बलों के दो लाख जवान तैनात किये गये ।

तीन वर्ष तक चले 'कम तीव्रता संघर्ष' के बाद जो बागियों को जंगलों से बाहर 'फ्लश' (एक झटके में बाहर निकालने) करने में कामयाब नहीं हो पाया, केन्द्र सरकार ने घोषणा की कि वह भारतीय सेना और वायु सेना तैनात करेगी । भारत में हम इसे जंग नहीं कहते । हम इसे 'निवेश के लिए अच्छी स्थितियां तैयार करना' कहते हैं । हजारों सैनिक पहले ही आ चुके हैं । ब्रिगेड मुख्यालय और सैन्य हवाई अड्डे तैयार किये जा रहे हैं । दुनियां की सबसे बड़ी सेनाओं में से एक सेना अब दुनिया के सबसे ग़रीब, सबसे भूखे और सबसे कुपोषित लोगों से अपनी 'रक्षा' करने के लिए लड़ाई की शर्तें (टर्म्स ऑफ़ एंगेजमेंट) तैयार कर रही है । अब महज़ आर्म्ड फोर्सेस स्पेशल पावर्स एक्ट (ए॰एफ॰ एस॰पी॰ए॰) के लागू होने का इन्तिज़ार है, जो सेना को क़ानूनी छूट और 'शक की बिना ' पर जान से मार देने का अधिकार दे देगा । कश्मीर, मणिपुर और नागालैंड में दसियों हज़ार बेनिशां क़ब्रों और बेनाम चिताओं पर अगर ग़ौर किया जाए तो सचमुच ही सेना ने स्वयं को बेहद संदेहास्पद बना दिया है ।

तैनाती की तैयारियां तो चल ही रही हैं, मध्य भारत के जंगलों की घेरेबंदी जारी है और ग्रामीण बाहर निकलने से, खाद्य सामग्री और दवाइयां ख़रीदने बाज़ार जाने से डर रहे हैं । भयावह, अलोकतांत्रिक क़ानूनों के अंतर्गत माओवादी होने के आरोप में सैकड़ों लोगों को क़ैद में डाल दिया गया है । जेलें आदिवासी लोगों से भरी पड़ी हैं जिनमें बहुतों को यह भी नहीं पता कि उनका अपराध क्या है । हाल ही में सोनी सोरी, जो बस्तर की एक आदिवासी अध्यापिका हैं को गिरफ़्तार कर पुलिस हिरासत में यातनाएं दी गयीं । इस बात का 'इक़बाल' करवाने के लिए कि वे माओवादी संदेशवाहक हैं उनके गुप्तांग में पत्थर भरे गये थे । कोलकाता के एक अस्पताल में उनके शरीर से पत्थर निकाले गये । वहां उन्हें काफ़ी जन आक्रोश के बाद चिकित्सा जांच के लिए भेजा गया था ।

उच्चतम न्यायालय की हालिया सुनवाई में एक्टिविस्टों ने न्यायाधीशों को प्लास्टिक की थैली में पत्थर भेंट किये । उनके प्रयासों से केवल यह नतीजा निकला कि सोनी सोरी अब भी जेल में हैं और जिस पुलिस अधीक्षक अंकित गर्ग ने सोनी सोरी से पूछताछ की थी उसे गणतंत्र दिवस पर वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक प्रदान किया गया ।

मास मीडिया की सीमाएं

हमें मध्य भारत की इन्वाइरनमेंटल और सोशल रीइंजीनियरिंग के बारे में सिर्फ़ व्यापक विद्रोह और जंग की वजह से ख़बरें मिल पाती हैं । सरकार कोई सूचना जारी नहीं करती । सारे समझौता-पत्र (एम॰ओ॰यू॰) गोपनीय हैं । मीडिया के कुछ हिस्सों ने, मध्य भारत में जो कुछ हो रहा है, उस ओर सबका ध्यान आकर्षित करने की कोशिश की है । परंतु ज़्यादातर मास-मीडिया इस कारण कमज़ोर पड़ जाता है कि उसकी कमाई का अधिकांश हिस्सा कॉरपोरेट विज्ञापनों से आता है । पर अब तो रही-सही कसर भी पूरी हो गयी है । मीडिया और बड़े व्यवसायों के बीच की विभाजक रेखा ख़तरनाक ढंग से धुंधलाने लगी है । जैसा कि हम देख चुके हैं, आर॰आई॰एल॰ 27 टी॰वी॰ चैनलों का क़रीब-क़रीब मालिक है । मगर इसका उल्टा भी सच है । कुछ मीडिया घरानों के अब सीधे-सीधे व्यवसायिक और कॉरपोरेट हित हैं । उदाहरण के लिए, इस क्षेत्र के प्रमुख दैनिक समाचार पत्रों में से एक–दैनिक भास्कर (और यह बस एक उदाहरण है)–के 13 राज्यों में चार भाषाओं के, जिनमें हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों शामिल हैं, एक करोड़ 75 लाख पाठक हैं । यह 69 कंपनियों का मालिक भी है जो खनन, ऊर्जा उत्पादन, रीयल एस्टेट और कपड़ा उद्योग से जुड़े हैं । छत्तीसगढ़ उच्च-न्यायालय में हाल ही में दायर की गयी एक याचिका में डी॰बी॰ पावर लिमिटेड (दैनिक भास्कर समूह की कंपनियों में से एक) पर कोयले की एक खुली खदान को लेकर हो रही जन-सुनवाई के परिणाम को प्रभावित करने हेतु कंपनी की मिल्कियत वाले अख़बारों द्वारा "जान- बूझकर, अवैध और प्रभावित करने वाले तरीके" अपनाने का आरोप लगाया गया । यहां यह बात प्रासंगिक नहीं कि उन्होंने परिणाम को प्रभावित करने की कोशिश की या नहीं । मुद्दा यह है कि मीडिया घराने ऐसा करने की स्थिति में हैं । ऐसा करने की ताक़त भी उनके पास है । देश के क़ानून उन्हें ऐसी स्थिति में होने की इज़ाज़त देते हैं जो हितों के गंभीर टकराव वाली स्थितियां हैं।

दुनिया की सबसे बड़ी सेनाओं में से एक सेना अब दुनिया के सबसे ग़रीब, सबसे भूखे और सबसे कुपोषित लोगों से अपनी 'रक्षा' करने के लिए लड़ाई की शर्तें (टर्म्स ऑफ़ एंगेजमेंट) तैयार कर रही है । अब महज़ आर्म्ड फोर्सेस स्पेशल पावर्स एक्ट (ए॰एफ॰एस॰पी॰ए॰) के लागू होने का इन्तिज़ार है, जो सेना को क़ानूनी छूट और 'शक की बिना ' पर जान से मार देने का अधिकार दे देगा । कश्मीर, मणिपुर और नागालैंड में दसियों हज़ार बेनिशां क़ब्रों और बेनाम चिताओं पर अगर ग़ौर किया जाए तो सचमुच ही सेना ने स्वयं को बेहद संदेहास्पद बना दिया है ।

देश के और भी हिस्से हैं जहां से कोई ख़बर नहीं आती । बहुत ही कम जनसंख्या वाले पर सैन्यीकृत उत्तर-पूर्वी राज्य अरुणाचल प्रदेश में 168 बड़े बांध बनाये जा रहे हैं जिनमें अधिकतर निजी क्षेत्र के हैं । मणिपुर और कश्मीर में ऊंचे बांध बनाये जा रहे हैं जो समूचे ज़िलों को डुबो देंगे, ये दोनों ही अत्यंत सैन्यीकृत राज्य हैं जहां सिर्फ़ बिजली की कटौती का विरोध करने के लिए भी लोगों को मारा जा सकता है। (ऐसा कुछ ही हफ़्तों पहले कश्मीर में हुआ ।) तो वे बांध का निर्माण कैसे रोक सकते हैं ?

विकृत सपने

गुजरात का कल्पसर बांध सर्वाधिक भ्रांतिकारी है । इसकी योजना खंभात की खाड़ी में एक 34 किमी लंबे बांध के रूप में बनायी जा रही है जिसके ऊपर एक दस लेन हाइवे और एक रेलवे लाइन भी होगी । समुद्र के पानी को बाहर कर गुजरात की नदियों के मीठे पानी का जलाशय बनाने का इरादा है । (यह बात और है कि इन नदियों की अंतिम बूंद तक पर बांध बना दिया गया है और रासायनिक निस्सारण से ये ज़हरीली हो चुकी हैं। कल्पसर बांध को, जो समुद्र सतह को बढ़ाएगा और समुद्र तट की सैकड़ों किलोमीटर की पारिस्थितिकी को बदल देगा, दस साल पहले ही एक हानिकारक विचार मान कर ख़ारिज कर दिया

गया था । इसकी अचानक वापसी इसलिए हुई है क्योंकि धोलेरा विशेष निवेश क्षेत्र (स्पेशल इंवेस्टमेंट रीजन या एस॰आई॰आर॰) को पानी की आपूर्ति की जा सके जो भारत ही नहीं बल्कि दुनिया भर के सबसे कम पानी वाले भूभागों में से एक में स्थित है । एस॰ई॰जेड॰ का ही दूसरा नाम है एस॰आई॰आर॰, मतलब 'औद्योगिक पार्कों, उपनगरों (टाउनशिप) और मेगाशहरों' का स्वशासित कॉरपोरेट नरक (डिस्टोपिया)। धोलेरा एस॰आई॰आर॰ को दस लेन राजमार्गों के जाल से गुजरात के अन्य शहरों से जोड़ा जाएगा । इन सब के लिए पैसा कहां से आएगा ?

जनवरी, 2011 में महात्मा (गांधी) मंदिर में गुजरात के मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी ने 100 देशों से आये 10,000 अन्तर्राष्ट्रीय कारोबारियों के सम्मेलन की अध्यक्षता की । मीडिया की रिपोर्टों के अनुसार उन्होंने गुजरात में 45,000 करोड़ डॉलर निवेश करने का वादा किया है। फ़रवरी-मार्च, 2002 में हुए 2,000 मुसलमानों के क़त्लेआम की दसवीं बरसी की शुरुआत के मौक़े पर ही वह सम्मेलन होने वाला था । मोदी पर न केवल हत्याओं की अनदेखी करने का बल्कि सक्रिय रूप से उन्हें बढ़ावा देने का भी आरोप है । जिन लोगों ने अपने प्रियजनों का बलात्कार होते, उन्हें टुकड़े-टुकड़े होते और ज़िंदा जलाये जाते देखा है, जिन दसियों हज़ार लोगों को अपना घर छोड़ने के लिए मजबूर किया गया था, वे अब भी इंसाफ़ के हल्के से इशारे के मुंतज़िर हैं । मगर मोदी ने अपना केसरिया दुपट्टा और सिंदूरी माथा चमकदार बिजनेस सूट से बदल लिया है और उन्हें उम्मीद है कि 45,000 करोड़ डॉलर का निवेश ब्लड मनी (मुआवज़े) के तौर पर काम करेगा और हिसाब बराबर हो जाएगा । शायद ऐसा हो भी जाए । बड़ा व्यवसाय उत्साह से उनका समर्थन कर रहा है । अपरिमित न्याय का बीजगणित रहस्यमय तरीक़ों से काम करता है ।

धोलेरा एस॰आई॰आर॰ छोटी मात्रियोश्का गुड़ियों में एक है, जिस नरक की योजना बनायी जा रही है उसकी एक अंदर वाली गुड़िया । ये दिल्ली मुंबई औद्योगिक गलियारे (डी॰एम॰आई॰सी॰) से जोड़ा जायेगा, डी॰एम॰आई॰सी॰ एक 1500 किमी लंबा और 300 किमी चौड़ा औद्योगिक गलियारा होगा जिसमें नौ बहुत बड़े औद्योगिक क्षेत्र, एक तीव्र-गति मालवाहक रेल लाइन, तीन बंदरगाह और छह हवाई अड्डों, एक छह लेन का बिना चौराहों (इंटरसेक्शन) वाला द्रुतगति मार्ग और एक 4000 मेगावाट का ऊर्जा संयंत्र होगा । डी॰एम॰आई॰सी॰ भारत और जापान की सरकारों और उनके अपने-अपने कॉरपोरेट सहयोगियों का साझा उद्यम है और उसे मेकिंजी ग्लोबल इंस्टिट्यूट ने प्रस्तावित किया है ।

डी॰एम॰आई॰सी॰ की वेबसाइट कहती है कि इस प्रोजेक्ट से लगभग 18 करोड़ लोग 'प्रभावित' होंगे। वास्तव में वे किस प्रकार प्रभावित होंगे यह नहीं बताया गया । कई नये शहरों का निर्माण किये जाने का अनुमान है और अंदाज़ा है कि 2019 तक इस क्षेत्र की जनसंख्या वर्तमान 23.1 करोड़ से बढ़कर 31.4 करोड़ हो जाएगी । क्या आपको याद है कि आख़िरी बार कब किसी राज्य, निरंकुश शासक या तानाशाह ने दसियों लाख लोगों की जनसंख्या को स्थानांतरित किया था ? क्या यह प्रक्रिया शांतिपूर्ण हो सकती है ?

भारतीय सेना को शायद भर्ती अभियान चलाना पड़ेगा ताकि जब उसे भारत भर में तैनाती का आदेश मिले तो शर्मिंदगी का सामना न करना पड़े । मध्य भारत में अपनी भूमिका की तैयारी में भारतीय सेना ने सैन्य मनोवैज्ञानिक परिचालन (मिलिटरी साइकोलॉजिकल ऑपरेशंस) पर अपना अद्यतन सिद्धांत सार्वजनिक रूप से जारी किया, जो 'वांछित प्रवृतियों और आचरण पैदा करने वाली ख़ास विषय वस्तुओं को बढ़ावा देने के लिए चुनी हुई लक्षित जनता तक संदेश संप्रेषित करने की नियोजित प्रक्रिया' का खाका खींचती है 'जो देश के राजनीतिक और सैनिक उद्देश्यों की प्राप्ति पर असर डालती है'। इसके अनुसार 'अभिज्ञता प्रबंधन' की यह प्रक्रिया, 'सेना को उपलब्ध संचार माध्यमों' के द्वारा संचालित की जाएगी । अपने अनुभव से सेना को पता है कि जिस पैमाने की सामाजिक इंजीनियरिंग भारत के योजनाकर्ताओं ने सोची है उसे केवल बलपूर्वक प्रबंधित और कार्यान्वित नहीं किया जा सकता । ग़रीबों के ख़िलाफ़ जंग एक बात है । मगर हम जैसे बाक़ी बचे लोगों के लिए--मध्य वर्ग, सफ़ेदपोश कर्मी, बुद्धिजीवी, 'अभिमत बनाने वाले'--तो यह 'अभिज्ञता प्रबंधन' ही चाहिए होगा । और इसके लिए हमें अपना ध्यान 'कॉरपोरेट परोपकार' की उत्कृष्ट कला की ओर ले जाना होगा ।

मदद के लिए अपील

जामिया मिस्वाहुल उलूम चौकोनियां, पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक जाना-माना तालीमी इदारा है। यह इदारा सिद्धार्थ नगर ज़िला के ग्रामीण क्षेत्र में है। यहां लगभग सभी राज्यों और पड़ोसी देश नेपाल के छात्र तालीम हासिल कर रहे हैं। यह इदारा आधी सदी से तालीम व तर्बियत के मोर्चे पर मुस्लिम समाज की सेवा कर रहा है। यहां प्राइमरी से लेकर आलिमीयत तक की तालीम का पूरा इन्तिज़ाम है। यहां दीनी और अस्री उलूम को एक ख़ास इम्तिज़ाज के साथ समोया गया है, जिसके कारण जामिया को तालीमी मैदान में एक अलग और प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त है। यहां क़याम और तआम की सारी सहूलतें उपलब्ध हैं। जामिया मिस्वाहुल उलूम की विशेषता तालीम के साथ इस्लामी बुनियादों पर छात्रों की मिसाली तर्बियत करना है।

जामिया वेफ मंसूबे

● मर्कज़ी लाइब्रेरी की तामीर ● जामिया की मस्जिद के अधूरे कामों को पूरा करना ● लड़कियों के लिए अलग दर्सगाह की तामीर ● टेक्निकल सेन्टर का क़याम ● होस्टल की तामीर ● अनाथालय की तामीर ● फैमिली क्वार्टर्स की तामीर

अह्ले ख़ैर हज़रात से दरख़्वास्त है कि जामिया की दिल खोलकर मदद करें और अल्लाह वेफ यहां उसका बदला पाएं।

—: भेजने का पता :—

जामिया मिस्बाहुल उलूम

चौकोनियां भारत भारी, सिद्धार्थनगर-272191

फ़ोन : 09670641947, 09451097177

जामिया का बैंक खाता नं०

A/c No. 30290663653 S.B.I. डुमरियागंज, कोड-1250

A/c No. F.C.R. CD-149 सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया बेवॉ चौराहा

आर्थिक जीवन के विविध पक्ष और इस्लाम

■ मुहम्मद क़ुत्ब

पूंजीवादी व्यवस्था में सरकार धन के जमाव के मामले में बिल्कुल विवश होती है, पर इस्लामी व्यवस्था में सरकार इस मामले में यूं विवश या उदासीन तमाशायी नहीं होती, बल्कि इस बात की गारंटी होती है कि धन सिमट कर इस तरह से केवल कुछ परिवारों में सीमित न हो जाए कि शेष समूचा देश ग़रीबी और महरूमी का शिकार हो जाए । ऐसी स्थिति का पैदा होना इस्लामी शरीअत की मंशा के विरुद्ध है, क्योंकि वह चाहती है कि धन का प्रसार कुछ लोगों तक ही सीमित न हो, बल्कि इतना अधिक हो कि तमाम लोग उससे लाभ उठा सकें ।

इस्लाम में शासक का यह कर्तव्य है कि वह किसी पर ज़्यादती और जुल्म किये बिना इस्लामी शरीअत लागू करे । इस उद्देश्य के लिए उसको अल्लाह की निर्धारित मर्यादाओं में रहते हुए पर्याप्त अधिकार मिले होते हैं, ताकि वह ख़ुदा के उस क़ानून को लागू कर सके, जिसे के लागू होने के बाद धन कुद व्यक्तियों के हाथों में सिमट कर रह ही नहीं सकता । इस्लाम का विरासत का क़ानून इस्लामी शरीअत के इसी स्वभाव को व्यक्त करता है, जिसका तक़ाज़ा यह है कि एक नस्ल अपने पीछे जो धन और सम्पत्ति छोड़े, वह बाद में आने वाली नस्ल में यथोचित ढंग से वितरित हो । यही हाल ज़कात का है, जिसमें वार्षिक आय और लाभ का ढाई प्रतिशत भाग ग़रीबों के हित के लिए मुख्य कर दिया जाता है ।

इसके अलावा इस्लाम खुले और स्पष्ट शब्दों में धन के जमाव को मना करता है और साथ ही ब्याज को भी जो धन के जमाव का कारण बनता है, हराम क़रार देता है । यही नहीं बल्कि इस्लाम समाज के विभिन्न व्यक्तियों के आपसी संबंधों को पारम्परिक शोषण के बजाय आपसी ज़िम्मेदारी की बुनियाद पर मज़बूत बनाता है ।

बुनियादी ज़रूरतों की गारंटी

यहां यह बात भी समझ लेनी चाहिए कि नबी (सल्ल०) के मुताबिक़ इस्लामी राज्य अपने कर्मचारियों की ज़िंदगी की बुनियादी ज़रूरतों को जुटाने का ज़िम्मेदार होता है । आपका कथन है–

'जो व्यक्ति हमारी (अर्थात इस्लामी राज्य की) किसी सेवा पर नियुक्त है, अगर वह अविवाहित है, तो उसका विवाह कराया जाएगा । अगर उसके पास रहने को मकान न हो, तो मकान दिया जाएगा, सेवक न हो, तो सेवक दिया जाएगा और अगर सवारी के लिए उसके पास कोई जानवर न हो, तो उसकी सवारी के लिए जानवर भी जुटाया जाएगा ।'

ज़िंदगी की बुनियादी ज़रूरतों की यह गारंटी राज्य के कर्मचारियों तक ही सीमित नहीं है, क्योंकि यह तो हर इंसान की ज़िंदगी की ज़रूरतें हैं । और हर वह व्यक्ति इसका अधिकारी है, जो इस्लामी राज्य या समाज की कोई सेवा किसी भी हैसियत में अंजाम देता है, इसलिए अगर इस्लामी राज्य सरकारी ख़ज़ाने से उन तमाम व्यक्तियों का ख़र्चा सहन करता है जो बुढ़ापे, बीमारी या अल्पायु के कारण अपनी रोज़ी आप कमाने के योग्य नहीं होते । इस तरह उन लोगों को भी सरकारी ख़ज़ाने से आर्थिक सहायता दी जाती है, जिनकी आमदनी के साधन सीमित और अपर्याप्त होते हैं ।

ये तमाम हक़ीक़तें सिद्ध करती हैं कि इस्लामी राज्य अपनी सीमाओं में रहने वाले तमाम व्यक्तियों की ज़िंदगी की बुनियादी ज़रूरतें जुटाने का ज़िम्मेदार होता है । इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वह जो कार्य-विधि अपनाता है, वह अधिक महत्वपूर्ण नहीं । मूल महत्व इस्लामी राज्य के उस बुनियादी उसूल का है, जो राष्ट्रीय लाभ-हानि में राष्ट्र के तमाम व्यक्तियों को बराबर का भागीदार ठहराता है । इसके कर्मचारी और मज़दूर न सिर्फ़ दूसरों के शोषण से बच जाते हैं, बल्कि साफ़-सुथरा जीवन भी गुज़ार सकते हैं ।

आर्थिक मामलों में इस्लाम सिर्फ़ अच्छे-अच्छे क़ानून और विधान बना देने को ही काफ़ी नहीं समझता, बल्कि इनके साथ-साथ वह इंसान की उन नैतिक तथा आध्यात्मिक भावनाओं से भी अपील करता है, जिन्हें कम्युनिस्ट केवल इसलिए उपहास का निशाना बनाते रहते हैं कि यूरोप का

इतिहास उस की व्यावहारिक उपयोगिता के तमाम चिन्हों से ख़ाली है । बहरहाल इस्लाम के नज़दीक नैतिक और आध्यात्मिक मूल्य इंसान के व्यावहारिक जीवन से अलग नहीं होते । इस्लाम उस दृष्टि से ऐ विशिष्ट जीवन-व्यवस्था है कि वह रूह की पाकी और समाज के गठन को आपस में एक दूसरे से सम्बद्ध तथा एक रूप कार देता है । वह न समाज को नज़रअंदाज़ करता है और न व्यक्ति को शून्यता में छोड़ता है कि सिद्धांत और व्यवहार में संयोग पैदा करना उसके लिए सम्भव ही न रहे ।

इस्लाम के क़ानूनों की नींव नैतिकता पर उठती है, यही कारण है कि इस्लाम में क़ानून और नैतिकता में कभी टकराव नहीं पैदा होता, बल्कि वे एक-दूसरे से एक रस होते हैं, कंधे से कंधा मिलाकर चलते हैं और एक पहलू में जो कमी रह जाती है, वह दूसरे से पूरी हो जाती है और इन में कभी कोई संघर्ष या टकराव की स्थिति पैदा ही नहीं होती ।

भोग-विलास और अपव्यय पर पाबन्दी

इस्लामी नैतिकता की दृष्टि से भोग-विलास और वासनावृति की वे तमाम शक्लें, जो धन के कुछ हाथों में जमा होने का अनिवार्य फल हैं, सिरे से वैध ही नहीं हैं । इस्लाम उन तमाम बातों को वर्जित घोषित करता है और साथ ही मालिकों को ताकीद करता है कि वे अपने कर्मचारियों से अन्याय न करें और उनके जायज़ मुआवज़ों में कोई कमी न करें, बल्कि उन्हें उन का पूरा-पूरा हक़ दें । धन का जमाव भी कर्मचारियों पर जुल्म व ज़्यादती ही की एक शक्ल है, इसलिए अन्याय को ख़त्म करने के लिए उसकी रोक-थाम भी ज़रूरी है, चुनांचे इस्लाम इसलिए भी धन के जमाव के ख़िलाफ़ है । इस्लाम लोगों के अन्दर ख़ुदा की राह में माल ख़र्च करने का भाव जगाना चाहता है, चाहे उसके लिए उन्हें अपना सभी कुछ लुटा देना पड़े । जिस समाज में खुशहाल लोग इस तरह ख़ुदा के लिए दूसरों पर ख़र्चा करते रहते हैं, वहां ग़रीबी और महरूमी बाक़ी रह ही नहीं सकती, क्योंकि ये दोनों तो स्वार्थपरता की पैदावार हैं, जिसके कारण समाज के समृद्ध व्यक्ति अपनी सारी दौलत अपनी निजी सुख-सुविधा पर ख़र्च कर डालते हैं ।

आध्यात्मिक श्रेष्ठता और ख़ुदा का सान्निध्य

इसके अलावा इस्लाम इंसान को जिस आध्यात्मिक ऊंचाई पर ले जाना चाहता है, उससे उन्हें ख़ुदा का सान्निध्य प्राप्त होता[1] और अल्लाह की ख़ुशी हासिल करने और आख़िरत के अज्र की उम्मीद में वह सहर्ष दुनिया के तमाम सुखों और फ़ायदों से महरूमी भी गवारा कर लेते हैं । सच तो यह है कि इस तरह का इंसान जो ख़ुदा से राज़ी होता है और आख़िरत और सज़ा व जज़ा पर ईमान रखता है, वह कभी जमाख़ोरी के रोग का शिकार नहीं हो सकता और न कभी अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए दूसरों को अपने जुल्म व ज़्यादती और शोषण को निशाना बना सकता है ।

स्वेच्छा से क़ानून की पाबंदी

इस्लाम इंसान को जिस आध्यात्मिक ऊंचाई पर ले जाता है, वह ऐसे आर्थिक क़ानूनों को लागू करना आसान बना देती है, जिनसे पूंजीवाद के तमाम दोषों की जड़ काटी जा सकती है । इस्लामी समाज में जब व्यवहारतः क़ानूनों को लागू किया जाता है, तो समाज के व्यक्ति उन पर राज़ी-ख़ुशी से अमल करते हैं । उनके इस अमल का प्रेरक सज़ा का कोई डर नहीं होता, बल्कि उनका अपना नैतिक भाव होता है, क्योंकि जो उनकी अन्तरात्मा की आवाज़ होती है, वही क़ानून का तक़ाज़ा भी होता है ।

इस्लाम के नज़दीक यह विचार सही नहीं है कि दुनिया में जुल्म व ज़्यादती और अन्याय की अस्ल वजह निजी सम्पत्ति है । यूरोप और दूसरे ग़ैर-मुस्लिम देशों में अन्याय की जो मिसालें मिलती हैं, उनकी वजह वास्तव में यह थी कि इन देशों में सरकार और विधान निर्माण के सारे अधिकार खुशहाल वर्गों के हाथों में थे, जिनसे काम लेकर उसने निश्चित रूप से ऐसे क़ानून बनाए, जिनका अस्ल मंशा पूंजीपतियों के स्वार्थों की सुरक्षा थी, चाहे उनके लिए दूसरे वर्गों के साथ जुल्म व ज़्यादती करनी पड़े या उनके हितों को हानि पहुंचे ।

इस्लाम किसी शासक वर्ग का सिरे से क़ायल ही नहीं है । इस्लामी व्यवस्था में विधान-निर्माण का काम एक विशेष श्रेष्ठ वर्ग नहीं करता, बल्कि उसके सारे अधिकार अल्लाह के पास होते हैं, जो तमाम इंसानी वर्गों का पैदा करने वाला है । और सारे इंसान उसकी निगाह में बराबर हैं । कोई इन्सान या वर्ग उसका चहेता नहीं है कि वह उनके

लिए दूसरों से अन्याय करने पर तैयार हो ।

इस्लामी व्यवस्था में सब मुसलमान स्वतंत्र चुनावों द्वारा अपने शासकों का चुनाव करते हैं । उसे मात्र इस कारण शासक नामज़द नहीं कर दिया जाता कि वह एक विशेष वर्ग या गिरोह से ताल्लुक़ रखता है । शासनाधिकार पाने के बाद भी एक मुसलमान शासक अपने बनाये हुए क़ानून को लागू नहीं करता, बल्कि अल्लाह के इलहामी क़ानून की इताअत करता है और उसको लागू करता है और मुसलमान उसकी इताअत (आज्ञापालन) के सिर्फ़ उस समय तक पाबंद होते हैं, जब तक कि वह ऐसा करते रहें । इस सिलसिले में पहले ख़लीफ़ा हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰) का यह कथन कितना स्पष्ट है–

'मेरा आज्ञापालन करो, जब तक मैं तुम्हारे बारे में ख़ुदा की इताअत करता रहूं । अगर मैं ख़ुदा की नाफ़रमानी करूं, तो तुम पर मेरी कोई इताअत नहीं ।'

इस्लाम शासक को विधान-निर्माण के अधिकार नहीं देता कि वह स्वयं क़ानून बनाए या किसी दूसरे को इसका अधिकार सौंप सके ।

क़ानून की बराबरी

इस्लामी व्यवस्था में समृद्ध वर्गों को अपनी इच्छानुसार क़ानून बनाने का अधिकार न होगा । इस्लाम के नज़दीक इंसानों में अधिकारों की दृष्टि से किसी प्रकार का भेदभाव करना सही नहीं है, बल्कि वह इन सबके साथ इस्लामी क़ानून के अनुसार समान बर्ताव करता है । अगर इस्लामी क़ानून के कुछ पहलुओं की व्याख्या और अर्थ-निरूपण की ज़रूरत पड़ जाए, तो जैसा कि दुनिया के हर क़ानून में होता है । इस्लामी क़ानून के विशेषज्ञों की राय क़तई समझी जाएगी । इस्लामी क़ानून विशेषज्ञों का गर्व किये जाने योग्य कारनामा यह है कि उन्होंने ख़ुशहाल लोगों के लिए कभी इस्लामी क़ानून को तोड़-मरोड़ कर इस तरह पेश नहीं किया कि यह उन के स्वार्थों की पूर्ति का और दूसरे वर्गों पर ज़ुल्म व सितम का मुच बनकर रह जाए । इसके विपरीत उनकी हमेशा यह कोशिश रही है कि मज़दूर-पेशा वर्गों की बुनियादी ज़रूरतों पर पूरा-पूरा ध्यान दिया जाए, यहां तक कि कुछ धर्मशास्त्रियों ने तो मज़दूर और किसान को लाभ में मालिक के साथ बराबर का शरीक क़रार दिया है ।

एक स्वस्थ समाज

यहां पर हमें यह बात भी ख़ूब समझ लेनी चाहिए कि इस्लाम का मंशा यह कदापि नहीं है कि इंसान मात्र काल्पनिक जगत में मग्न रहे । चुनांचे इस्लाम सामूहिक स्वार्थ को मात्र 'सदभावनाओं' की दया-कृपा पर नहीं छोड़ देता । आत्मा की पवित्रता के इस तमाम महत्व के बावजूद जो इस्लाम के नज़दीक उसे प्राप्त है, इस्लाम जीवन की व्यावहारिक समस्याओं से कभी आंखें नहीं चुराता ।

इस्लाम क़ानून के ज़रिए इस बात की व्यवस्था करता है कि समाज में धन का वितरण न्याय-आधारों पर हो । रूहानी पाकीज़गी जुटाने के साथ-साथ वह हमें न्यायोचित क़ानून भी देता है और इस तरह एक स्वस्थ इंसानी समाज की दाग़-बेल डालता है । शायद यही वह सच्चाई थी जिसे तीसरे ख़लीफ़ा हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान (रज़ि॰) ने अपने इस कथन से स्पष्ट किया है–

'बेशक अल्लाह शक्ति द्वारा उन चीज़ों की रोक-थाम करता है, जिनकी रोक-थाम क़ुरआन से नहीं हो सकती ।'

सामूहिक कल्याण और इस्लाम

आजकल सामूहिक कल्याण के संरक्षण की जो व्यवस्था चल रही है, वह मानवता के सदियों के कटु तजुर्बों और सामाजिक अन्याय के एक लम्बे इतिहास के बाद अपनायी गयी है । इस्लाम की महत्ता व महानता की एक बहुत बड़ी दलील सामूहिक कल्याण की इस व्यवस्था को एक ऐसे दौर में स्थापित करना है, जबकि यूरोप सामाजिक दृष्टि से अभी अंधियारियों में भटक रहा था । पर जो लोग पूर्व या पश्चिम से आयातित व्यवस्थाओं की प्रशंसा करते नहीं अघाते, उनकी मानसिक दासता का यह हाल है कि अगर इस्लाम उनकी किसी प्रिय व्यवस्था को अपना ले, तब भी इस्लाम से उनका दुष्भ्रम दूर नहीं होगा, बल्कि वे अपनी उन प्रिय व्यवस्थाओं को भी, असभ्यता तथा प्रतिक्रियावाद की उपज कहने लगेंगे ।

ज़कात का नियम

इस्लाम ने अपने आरंभिक काल में उस समय की विशेष परिस्थितियों को सामने रखकर ज़रूरतमंदों के पास खुद जाकर नक़द या जिंस की शक्ल में ज़कात वसूल करने को वैध कर रखा था, पर इसका यह अर्थ कदापि नहीं है

कि इस्लाम के नज़दीक ज़कात के विवरण का यही एक अकेला तरीक़ा था कि ज़रूरतमंद खुद जाकर ज़कात वसूल करते फिरें और कोई दूसरा तरीक़ा अपनाया ही नहीं जा सकता । इस्लामी क़ानून में कोई ऐसी चीज़ मौजूद नहीं है, जिससे ऐसा नतीजा निकाला जा सके । इस्लाम ज़कात के रुपये से जन-कल्याण की संस्थाएं, जैसे स्कूल और अस्पताल, क़ायम करने से नहीं रोकता और न उसको इसके रुपये से सहकारी समितियों और कारख़ानों के निर्माण पर ही कोई आपत्ति हो सकती है । दूसरे शब्दों में ज़कात की रक़म सामाजिक कल्याण के सारे फ़ायदे मंद कामों पर ख़र्च की जा सकती है । ज़कात के माल में से नक़द इमदाद सिर्फ़ बीमारों, बूढ़ों और बच्चों को दी जाती है, लेकिन दूसरे तमाम लोगों की सहायता उनके लिए रोज़गार जुटाने या उनके हित की किसी योजना की पूर्ति की शक्ल में भी हो सकती है, क्योंकि इस्लामी समाज एक ऐसा समाज है जिसमें सिर्फ़ ज़कात पर गुज़ारा करने वाले किसी धनहीन वर्ग का कोई स्थायी वजूद नहीं पाया जाता ।

इस्लामी समाज का आदर्श युग

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ख़िलाफ़तकाल भी इस्लामी समाज का आदर्श युग था । इस युग में लोगों की ख़ुशहाली का यह हाल था कि ज़कात जमा करके शासक वर्ग ज़रूरतमंदों को ढूंढ़ते थे, पर उन्हें कोई उसका लेने वाला न मिलता था । हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के ज़कात वसूल करने पर नियुक्त एक कर्मचारी यह्या बिन सईद कहते हैं–हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने मुझे ज़कात की वसूली के लिए अफ़्रीक़ा भेजा । मैंने ज़कात जमा करके ग़रीबों की तलाश की, पर मुझे कोई ग़रीब न मिला और न कोई और ज़रूरतमंद मिला, जो उसे लेता क्योंकि हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रज़ि॰) ने लोगों को ख़ुशहाल बना दिया था ।' निस्संदेह हर समाज में ग़रीब भी होते हैं और ज़रूरतमंद भी, इसलिए उनकी समस्याओं को हल करने के लिए ज़रूरी क़ानून का मौजूद होना अनिवार्य है । इस्लाम को समय-समय प जिन क़ौमों से वास्ता पड़ता रहा है, वे भौतिक प्रगति और धन की दृष्टि से भिन्न-भिन्न चरणों में थीं । इसलिए यह बिल्कुल स्वाभाविक था कि वह एक ऐसा क़ानून बनाता, जिसके नतीजे में क्रमागत हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रज़ि॰) का-सा आदर्श समाज वजूद में आ जाता ।

दान-पुण्य की हक़ीक़त

यह है ज़कात और उसकी हक़ीक़त । इसके विपरीत जहां तक सदक़ों (दान-पुण्य) और ख़ैरात का ताल्लुक़ है, वह वास्तव में उस दौलत का नाम है, जो अमीर और ख़ुशहाल लोग अपनी ख़ुशी से ख़ैरात करते हैं । इस्लाम ने दान-पुण्य और ख़ैरात को पसन्दीदा कहकर उनको प्रोत्साहन दिया है । ख़ैरात विभिन्न तरीक़ों से दी जा सकती है । यह अपने मां-बाप और अज़ीज़ों और रिश्तेदारों की सहायता की शक्ल में भी हो सकती है और आम ज़रूरतमंदों की ज़रूरत पूरी करने की शक्ल में भी । यही नहीं, बल्कि सत्कर्म और मीठे बोल भी सदक़ा बन सकते हैं ।

अगर हम अपने नाते-रिश्तेदारों से हमदर्दी करते हैं और उनकी सहायता करते हैं, तो ज़ाहिर है कि इससे उनकी भावनाओं या स्वाभिमान को कोई ठेस नहीं पहुंच सकती । अपने रिश्तेदारों से इस तरह का उदारतापूर्ण व्यवहार तो मुहब्बत, हमदर्दी और प्रेम-स्नेह का फल होता है । इस तरह अगर कोई व्यक्ति अपने भाई को उपहार देता है या अपने रिश्तेदारों को भोज पर निमंत्रित करता है, तो स्पष्ट है कि वह उनका अनादर नहीं करता कि बाद में उसे उनकी घृणा और विरोध का निशाना बनना पड़े ।

रोज़गार और इस्लामी राज्य

इसके अलावा इस्लामी राज्य पर यह ज़िम्मेदारी भी आती है कि वह काम के योग्य तमाम व्यक्तियों को रोज़गार जुटा कर दे । इस्लामी राज्य की इस ज़िम्मेदारी का स्पष्टीकरण पैग़मबरे इस्लाम (सल्ल॰) की इस हदीस से आसानी से होता है, जिसमें कहा गया है कि 'एक आदमी

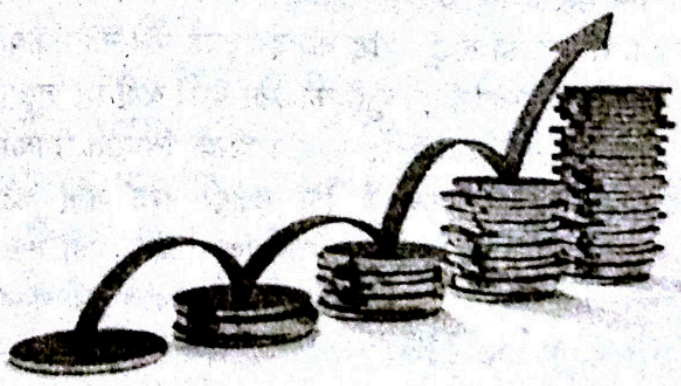

हुज़ूर (सल्ल॰) के पास आया और आप से गुज़र-बसर के लिए सहायता चाही । आपने उसको एक कुलहाड़ी और एक रस्सी दी और हुक्म दिया कि वह जंगल में जाकर लकड़ियां तोड़े और उनको बेच कर गुज़ारा करे । आपने उसको यह हिदायत भी दी कि कुछ दिनों बाद आपको अपनी हालत की ख़बर दे ।

हो सकता है कुछ सन्देही क़िस्म के लोग इस हदीस को मात्र एक व्यक्तिगत मामला कहकर टाल दें, जिसका वर्तमान बीसवीं सदी से कोई ताल्लुक़ नहीं, क्योंकि इस हदीस में कुल्हाड़ी, रस्सी और एक बिल्कुल बेकार आदमी का उल्लेख है जबकि वर्तमान युग में हमारा वास्ता बड़े-बड़े कारख़ानों, लाखों बेकार मज़दूरों, संगठित सरकारों और उनके अनेकों विभागों से है, पर इस तरह की बातें करना केवल मूर्खता है, क्योंकि पैग़म्बरे इस्लाम का यह काम नहीं था कि आप हज़ारों वर्ष पहले, जबकि कारख़ानों का दुनिया में कहीं वजूद ही न था, उनको अपनी वार्ताओं का विषय बताते या उनसे पैदा होने वाली समस्याओं के लिए क़ानून तैयार करते । अगर आप ऐसा करते, तो उस वक़्त का कोई आदमी आपकी बात न समझता ।

इस रीति को अपनाने के बजाय पैग़म्बरे इस्लाम (सल्ल॰) ने ज़िन्दगी के क़ानून की बुनियादों को तय करने को काफ़ी समझा और जीवन की व्यावहारिक समस्याओं में उनके लागू करने के मामले को आपने आने वाली नस्लों पर छोड़ दिया, ताकि वे उन बुनियादी नियमों की रोशनी में ज़िन्दगी की तफ़्सीलात ख़ुद तय कर सकें ।

कल्याणकारी ज़िम्मेदारियां

ऊपर जिस हदीस का हवाला दिया गया है, उससे इस्लामी राज्य की निम्न बुनियादी ज़िम्मेदारियों पर रोशनी पड़ती है–

1. पैग़म्बरे इस्लाम (सल्ल॰) (अर्थात इस्लामी राज्य के प्रधान) को यह एहसास था कि बेरोज़गार आदमी को रोज़गार जुटाना आपकी ज़िम्मेदारी है ।

2. हुज़ूर (सल्ल॰) ने हालात के अनुसार उस आदमी के लिए रोज़गार जुटाया ।

3. पैग़म्बरे इस्लाम (सल्ल॰) ने जब आदमी को वापस आने और दोबारा अपने हालात से सूचित करने का हुक्म दिया, तो वह भी वास्तव में ज़िम्मेदारी के इसी एहसास का पता देता था ।

राज्य के प्रधान के ज़िम्मेदारी के जिस एहसास की झलक इस्लाम ने दुनिया को आज से तेरह सौ वर्ष पहले दिखायी थी, आधुनिकतम आर्थिक और राजनीतिक सिद्धांतों से यह पूर्ण एक रसता रखती है ।

बहरहाल अगर इस्लामी राज्य बेकार नागरिकों को रोज़गार न जुटा सके, तो राजकोष पर यह ज़िम्मेदारी आ पड़ती है कि वह उनकी आर्थिक स्थिति के सुधारने तक उनका भरण-पोषण करे, क्योंकि मुसलमान तो चाहे उनका अपना मामला हो या राज्य और दूसरे नागरिकों का, सबके साथ उदारतापूर्ण व्यवहार करते आये हैं ।

SHATABDI FOUNDATION, GAYA

- Started Shatabdi Public School in 2001 with primary classes, has now developed into a 10+2 CBSE affiliated educational institution with quality education in modern subjects with moral orientation.
- Presently there are around 1000 students who are provided modern teaching facilities. The Foundation also adopts poor/ orphan students
- Under Upwardbound scheme, another project has been launched for preparation of +2 students to compete in Entrance Test for Engineering, Medical and other professional & technical courses.
- Our immediate needs are — Purchase one more school bus, Construction of Prayer Hall & Purchase of 30 Computers.

Ahle Khair Hazrat are Requested to Donate.

Kindly send your cheque/draft in favour of "Shatabdi Foundation, Gaya".

(ProfZ.H.Khan) Chairman — *(Prof M. B. Zaman)* Secretary

Shatabdi Public School, Katari Hill Road, Gaya-823001 (Bihar) INDIA

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और बाज़ार-नियमन

■ डॉ० फ़रहत हुसैन
(रामनगर, नैनीताल)

इस्लाम एक पूर्ण जीवनयापन पद्धति (Complate System of Life) है जो इन्सान को सही अर्थों में इन्सान बनाने के लिए उसको आध्यात्मिक और वैचारिक आस्था में बांधता है अर्थात अपने रचयिता और पालनहार पर ईमान लाओ, उसके द्वारा नियुक्त संदेशवाहक का अनुसरण करो, यह ध्यान रहे कि सांसारिक मृत्यु के पश्चात ईश्वर के दरबार में हिसाब-किताब होना है । इस वैचारिक बुनियाद के बाद इस्लाम मनुष्य के जीवन के प्रत्येम क्षेत्र में मार्गदर्शन प्रदान करता है ।

आर्थिक क्षेत्र एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है इस्लाम उसमें बड़े मूल्यवान सिद्धांत प्रस्तुत करता है । इस अति लघु चर्चा में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) द्वारा मदीना के बाज़ार के नियमन की प्रक्रिया प्रस्तुत करना है, क्योंकि इसी से आगे चलकर आर्थिक क्षेत्र में अहम निर्णय लिए गये जिनसे अर्थव्यवस्था में आश्चर्यजनक उन्नति हुई ।

आर्थिक क्षेत्र एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है इस्लाम उसमें बड़े मूल्यवान सिद्धांत प्रस्तुत करता है । इस अति लघु चर्चा में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) द्वारा मदीना के बाज़ार के नियमन की प्रक्रिया प्रस्तुत करना है, क्योंकि इसी से आगे चलकर आर्थिक क्षेत्र में अहम निर्णय लिए गये जिनसे अर्थव्यवस्था में आश्चर्यजनक उन्नति हुई ।

जब मक्का में विरोधियों ने अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का रहना कठिन कर दिया तो आपने और आपके अनुयायियों ने मदीना में शरण ली । शरणार्थियों का मसला आपने अनूठे ढंग से हल किया, जिसे 'भाईचारा पद्धति' कहा जा सकता है । आपने मक्का के एक शरणार्थी को मदीने के एक अंसार का भाई घोषित कर दिया । तुम अमुक-अमुक के भाई हो । मदीना वाले कृषक थे जबकि मक्का से आये मुहाजिर व्यापार, व्यवसाय या मज़दूरी-पेशा थे । उस समय मदीना के बाज़ार पर यहूदियों का नियंत्रण था । बाज़ार-स्थल उनके निकट था, नियम और तौर-तरीक़े भी उनके चलते थे । वे सूदी कारोबार पसन्द करते थे ।

ईश्वर के आदेश से सूद अवैध घोषित हुआ । कुरआन में है–"अल्लाह ने व्यवसाय को वैध तथा ब्याज को अवैध घोषित किया ।"

ईशदूत (सल्ल०) ने इस क़ानून की पूर्ण व्याख्या भी कर दी कि सूद लेना, देना, दस्तावेज़ लेखन, उसकी गवाही सब प्रतिबंधित हैं । इसके अतिरिक्त व्यापार, व्यवसाय, लेन-देन के नियम भी घोषित किये गये ।

मगर जो बड़ा क्रांतिकारी क़दम आप (सल्ल०) ने उठाया वह मदीना में नयी मार्केट की स्थापना थी । मार्केट स्थल वादी-ए-बतहान बना जो नगर के बीच और मस्जिद-ए-नबवी के समीप था तथा पुराने बाज़ार से कुछ दूरी पर स्थित था । इस मार्केट की अन्य विशेषताएं ये थी–

1. मार्केट में व्यापारियों को अपना सामान बेचने की आम आज़ादी थी । प्रतिदिन अपना टेंट लगाकर शाम तक कारोबार कर सकते थे । हां, स्थायी दुकान नहीं लगा सकते थे, अर्थात प्रतियोगी (Competitive) माहौल बना रहे और एकाधिकार स्थापित न हो ।

2. इसमें यहूदियों को भी कारोबार की छूट थी, मगर उन्हें हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) द्वारा लागू नियमों के तहत ही कार्य करना होता था ।

3. इस मार्केट में किसी प्रकार का टैक्स नहीं लिया जाता था ।

4. सड़कें चौड़ी थी, सड़क के बीच कारोबार की मनाही थी, जिससे यातायात बाधित न हो ।

5. बाज़ार सामग्री के अनुसार अलग-अलग भाग थे जैसे–अनाज, सब्ज़ी, कपड़ा आदि ।

6. शराब, नशे की चीज़ें तथा अन्य अवैध घोषित वस्तुएं जैसे सूअर का मांस बेचने की अनुमति नहीं थी ।

7. नाप-तौल पूरी-पूरी करना अनिवार्य थी अन्यथा दंड का प्रावधान था ।

इस बाज़ार पर आप स्वयं नज़र रखते थे । इतिहास की पुस्तकों में उल्लेख है कि एक बार आपने अनाज मंडी का निरीक्षण किया और एक व्यापारी के अनाज के ढेर में हाथ डालकर देखा तो आपने पाया कि अन्दर का अनाज गीला है जबकि बाहर सूखा नज़र आ रहा है । जब आपने पूछा तो व्यापारी ने कहा कि वर्षा से भीग गया है । आपने कहा, फिर उसे ऊपर क्यों नहीं रखा, जो लोग धोखा दें वे हम में से नहीं हैं ।

पवित्र क़ुरआन के आदेशों के तहत ब्याज, जुआ, अवैध घोषित हो चुके थे । उधार लेन-देन हेतु दस्तावेज़ का लेखन अनिवार्य कर दिया गया था । उसी के आलोक में आप (सल्ल०) धोखे के सौदों की मनाही की।

वस्तु विनिमय यानी एक सामान के बदले दूसरा सामान या सेवा वैध थी । ऐसे सौदे प्रतिबंधित किये जो मात्र अनुमान पर आधारित हों जैसे पेड़ों पर लगे फल का सौदा करना या तालाब की मछलियों का सौदा करना । शराब हराम होने के बाद उसका क्रय-विक्रय और उसे लाने-ले जाने पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया । आपने बचत और निवेश को प्रोत्साहित किया । साझेदारी को बढ़ावा दिया और उसके उसूल तय किये जो बड़े विस्तार से हदीस की पुस्तकों में उपलब्ध हैं । स्वयं साझेदार होने और केवल धन लगाकर साझे में शरीक होने दोनों रीतियों को जायज़ रखा और लाभ-हानि के वितरण फूलप्रूफ़ ढंग को बड़े विस्तार से नियमबद्ध कर लागू किया । इस प्रकार हम देखते हैं कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने मदीना के बाज़ार का ही नियमन नहीं किया वरन क्रय-विक्रय तथा लेन-देन को सुव्यवस्थित किया तथा उस बिगाड़ को दूर किया जो उस समय व्याप्त था ।

"हज़रत इब्न उमर (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने कहा : सबसे बड़ी नेकी यह है कि आदमी अपने बाप के दोस्तों के साथ अच्छा सलूक करे ।"

(मुस्लिम)

एक हमदर्द

जयपुर

हमारी कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें

इस्लाम एक सामान्य परिचय	80.00	शैख़ अली तंतावी	90.00	اسلام کا عام فہم تعارف
इस्लाम एक स्वयंसिद्ध.....	25.00	राजेन्द्र नारायण लाल	25.00	اسلام ایک خدائی نظام حیات
इस्लामी सभ्यता	05.00	मुन्शी प्रेम चंद	05.00	اسلامی تہذیب
इंसानी भाईचारा और इस्लाम	05.00	मौलाना फ़ारूक़ ख़ाँ	05.00	انسانی اخوت اور اسلام
प्यारे नबी की पाक ज़िन्दगी	25.00	ऐजाज़ुल हक़ क़ुद्दूसी	25.00	پیارے نبی کی پاک زندگی
इतिहास के साथ यह अन्याय!	07.00	बी॰ एन॰ पाण्डे	05.00	تاریخ پر یہ ستم !
मेरे दावती तजुर्बात (प्रथम)	25.00	नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	20.00	میرے دعوتی تجربات (اول)
ग़लत फ़हमियों का निवारण	25.00	डॉ॰ ज़ाकिर नाईक	25.00	غلط فہمیوں کا ازالہ !
क़ुरआन और हम मुसलमान	15.00	नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	15.00	قرآن اور ہم مسلمان
क़ुरआन का पैग़ाम	10.00	ख़ुर्रम मुराद	10.00	قرآن کا پیغام
क़ुरआन पर अनुचित आक्षेप	15.00	नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	15.00	قرآن مجید پر اعتراضات کی حقیقت
हमें ख़ुदा कैसे मिला?	100.00	अब्दुल ग़नी फ़ारूक़	120.00	ہمیں خدا کیسے ملا ؟
इस्लाम आतंक या आदर्श?	40.00	स्वामी लक्ष्मी शंकराचार्य	40.00	اسلام دہشت گردی یا مثالی دین؟
इस्लाम और इनसान (1-6)	84.00	डॉ सैयद शाहिद अली	15.00	اسلام اور انسان
दलित समस्या जड़ में कौन?	120.00	इन्तज़ार नईम	140.00	دلت مسئلہ جڑ میں کون؟
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) और भारतीय धर्मग्रन्थ	18.00	डॉ॰ एम॰ ए॰ श्रीवास्तव	18.00	حضرت محمد ﷺ اور ہندوستانی مذہبی کتابیں

इस्लामी लिट्रेचर, दावती किताबों और मर्कज़ी मक्तबा की किताबों और हमारी पुस्तक सूची के लिए सम्पर्क करें। दावती काम करने वालों के लिए विशेष छूट

MADHUR SANDESH SANGAM

E-20, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025

e-mail: madhursandeshsangam@yahoo.co.in 09212117559, 011-26953327 :فون

रात का सफ़र

● इक़बाल अंसारी

''जीवन के फ़ैसले भालों से कब तक होते रहेंगे ?' बड़ी-बड़ी आंखों, मज़बूत कंधों और भारी-भरकम सीनों वाली फ्रासिया ने बड़े दुख के साथ शिगाली से पूछा । उसकी बाहें उसके घुटनों पर थीं और वह बाएं हाथ पर ढूढ़ी रखे ज़मीन पर बैठी थी । शिगाली भी उससे ज़रा हटकर उसी तरह बैठा था । छोटी-सी नदी नाटो का पानी धीमी गति से बह रहा था । पूर्णिमा की रात थी और चांद पश्चिम की ओर झुकने लगा था । मौसम बहुत सुहाना था । वैसे घाना में रात का मौसम बहुत सुहाना होता है । उन दोनों के पीछे लंबी-लंबी घास थी और घास के मैदान के बाद उनका गांव-योमा था, जिसमें तीस झोंपड़ियां थीं । चारों ओर सन्नाटा था । नदी की दूसरी ओर कांटेदार झाड़ियां थीं, जिन पर कभी-कभी कोई पक्षी अपने पंख फड़फड़ाता और सन्नाटा थोड़ी देर के लिए घायल हो जाता ।

शिगाली ने फ्रासिया की बात का कोई उत्तर नहीं दिया । जहां जीवन के फ़ैसले भालों से होते हों वहां किसी प्रश्न या किसी उत्तर का क्या महत्व !

फ्रासिया ने फिर चुप्पी तोड़ी–''देश को स्वतंत्र हुए दो वर्ष हो चुके हैं, सुना है कुछ विकास हो रहा है । यह विकास उत्तर में कब पहुंचेगा । सवाना क्षेत्र शताब्दियों से विकास की राह देख रहा है...शिक्षा हमारी इस भूमि पर कब आएगीं ?

शिगाली ने एक लंबी सांस ली और बोला,''अच्छी ही है कि शिक्षा हमारी भूमि पर अभी तक नहीं आयी है, जब तक न आये अच्छा है ।''

''तुम शिक्षित होकर ऐसा कह रहे हो ?' फ्रासिया ने आश्चर्य से पूदा ।''

''हां शिक्षा ने ही तो मुझे यह विवेक दिया है कि मैं कह सकूं कि जब तक शिक्षा हमारी भूमि पर न आये अच्छा है । जब शिक्षा आ जाएगी तो यहां भी जीवन में परिवर्तन आ जाएगा । भालों का स्थान दृष्टिकोण ले लेंगे । फिर झूठ होगा, धोखा होगा, मक्कारी होगी । जो जितना मक्कार होगा उसके हाथ में उतना ही घातक हथियार होगा और जिसके हाथ में जितना विध्वंसक हथियार हो वह समाज में उतना ही सम्मानित और प्रतिष्ठित होगा उतना ही सफल होगा । इसलिए शिक्षा को दूं । रहने दो और भालों से किये जाने वाले फ़ैसलों को स्वीकार करनी चलो ।''

''तुम्हारी बातों में वज़न है शिगाली, लेकिन क्या तुम यह कहना चाहते हो कि शिक्षा जीवन की शत्रु है, जबकि शिक्षा ने ही हमें तुम्हें और सबको नयी समझ दी है, नयी ज्योति दी है ।'' फ्रासिया ने पूछा ।

नहीं फ्रासिया शिक्षा जीवन की शत्रु नहीं है...वह तो मित्र है । शिक्षा जीवन को संवारती है । सारी ख़राबी तो कुशिक्षा से है । जो शिक्षा आयी है उसने मनुष्य को समझदारी से अधिक नासमझी दी है और उसे अच्छा मनुष्य बनाने के बजाय उसे धोखेबाज़ बना दिया है ।''

''ठीक कहते हो'' फ्रासिया ठंडी सांस लेकर बोली । आज हमारी दोस्ती की आख़िरी रात है, कल मुझे किसी सूरमा के हवाले कर दिया जाएगा आओ हम इस छोटी-सी नदी 'नाटो' को देखेंगे जो उसे भी पानी देती है जो इसमें पत्थर फेंकता है । पश्चिम में झुकते हुए उस चांद को देखें, जो सभी पर अपनी चांदनी उंडेलता है ।''

हां फ्रासिया, कल तुम सरोगा या मासो में से किसी एक की हो जाओगी । कुछ देर चुप्पी रही फिर वह धीरे से बोला, ''फ्रासिया आज मेरा जी चाह रहा है कि मैं तुम्हें छू लूं ।''

नहीं, तुमने आज तक मुझे नहीं छुआ है, आज भी मत छुओ, तुमने तो मेरे अन्दर की उस चीज़ को छुआ है जिसे ईसाई 'सोल' और मुसलमान 'रूह' कहते हैं । उसे केवल तुमने छुआ है, उसे कभी कोई और छू भी नहीं सकेगा ।

नाटो का पानी अपने संगीत के साथ बहता रहा, चांदनी बरसती रही । रात का सफ़र अपनी अंत की ओर जारी रहा । दोनों चुपचाप बैठे रहे और उनकी चुप्पियां बातें करती रहीं । जब रात का तीसरा पहर भी आधा से अधिक बीत गया तो दोनों एक लंबी सांस लेकर उठे और वापसी के लिए चल पड़े । दोनों ने मैदान पर किया । दोनों ने एक-दूसरे को

देखा हाथ उठा कर अलविदा के लिए हिलाया और विपरीत दिशा में चल दिये ।

इन दोनों ने जीवन के कई वर्ष कमासी में बिताये थे और शिक्षा प्राप्त की थी । फिर अपने गांव थोमा वापस आ गये थे । फ्रासिया जब योमा से 500 मील दूर कमासी गयी थी तो दुबली-पतली, लंबी-सी मामूली रंग रूप की बच्ची थी ।

12 वर्ष बाद जब वहां से वापस आयी तो इतनी सुन्दर और आकर्षक थी कि गांव के दो सबसे बलवान जवान जो आपस में दोस्त भी थे...उसे देखते ही रह गये और दोनों ने एक साथ उस पर अपने अधिकार की घोषणा कर दी । दोनों का संबंध डागोम्बा क़बीले से था । थोमा के सभी लोग डोगाम्बा थे ।

येम और बाजरा उगाते थे, बकरियां और जेबू (सांड और गाय) पालते थे, शी आ के पेड़ों से मक्खन इकट्ठा करते थे और उसे मकई और मोटे कपड़ों के बदले कमासी से आने वाले व्यापारियों के हाथ बेच देते थे । कमासी में वह मक्खन खाया भी जाता था और उससे मोमबत्तियां और साबुन भी बनाये गये थे । तापमान कभी 29 डिग्री से ऊपर नहीं जाता था इसलिए मौसम सुहाना रहता था, आवश्यकताएं न के बराबर थी ।

जीवन शांत था । कहीं कोई तनाव नहीं था । लेकिन फ्रासिया के आने के बाद दो सबसे शक्तिशाली जवानों सरोगा और मासो के बीच तनाव उत्पन्न हो गया । फ़ैसला जब जुबानों से नहीं हो सका तो भालों के हवाले कर दिया गया ।

''जिसके जीवन का फ़ैसला किया जा रहा है उससे भी तो पूछो कि वह क्या चाहती है...? कमासी से शिक्षा प्राप्त कर लौटी फ्रासिया ने चिल्लाकर कहा था और उसके पिता का थप्पड़ उसके गाल पर पड़ा था ।

''महिला के जीवन का फ़ैसला पुरुष करते हैं, उसके बाप से गुर्रा कर कहा था, ''तेरी मां को भी मेरे थाले ने जीता था ।'' गांव के सरदार का फ़ैसला भी यही था कि मासो और सरोगा अपने-अपने भालों का मुक़ाबला करें जो जीते उससे फ्रासिया का विवाह हो । मुक़ाबले का दिन निर्धारित कर दिया गया ।

मासो और सरोगा के भालों की चमक और धार दिन-ब-दिन बढ़ती रही लेकिन उनमें शत्रुता नहीं थी । वे अब भी एक दूसरे के मित्र थे ।

सरदार के फ़ैसले के केवल दो लोगों ने स्वीकार नहीं किया था ये फ्रासिया और शिगाली थे, लेकिन वे भी मुंह नहीं खोल सके । क़बीले की परंपरा क़ानून थी ।

निर्धारित दिन गांव के सभी लोग मैदान में जमा हो गये । ढोल पीटे जा रहे थे लड़कियां नाच-गा रही थी । सरदार के आते ही सबने खड़े होकर उसका सम्मान किया । एक ओर मासो और दूसरी ओर सरोगा अपना भाला लिए बैठे थे । सुबह की धूप में उनके भाले चमक रहे थे । कुछ महिलाएं फ्रासिया को लेकर आ गयीं । उसने कच्ची घास का घुटनों तक का स्कर्ट और उसी घास का टॉप पहना हुआ था । बबूल के फूलों का मुकुट उसके सर पर था, जिसके नीचे उसके चेहरे का काला रंग और अधिक काला लग रहा था । सवाना क्षेत्र की यह लड़की वैसे ही बहुत सुन्दर थी । इस समय वह घास की राजकुमारी लग रही थी । उसे एक ओर बिठा दिया गया ।

मासो और सरोगा अपना-अपना भाला लेकर उठे । झुक कर सरदार से आशीर्वाद लिया । इसके बाद मुक़ाबला शुरू हुआ और 15 मिनट तक जारी रहा । फिर अपने आप समाप्त हो गया । मासो और सरोगा की लाशें मैदान में पड़ी थी । दोनों के शरीर से निकला हुआ ख़ून ज़मीन पर फैल कर सूखने लगा था ।

चारों ओर सन्नाटा छा गया था, लोग सांसें रोके खड़े थे । सरदार की आंखों में एक चमक थी अब वह फ्रासिया को अपनी पांचवीं पत्नी बना सकेगा ।

''सरदार'' अचानक शिगाली की आवाज़ सन्नाटे को चीड़ती हुई निकली...''भालों से फ़ैसला नहीं होगा...जीवन के फ़ैसले भालों से हो भी नहीं सकते । जब भी किसी समस्या को भालों से हल करने की कोशिश की गयी और समस्याएं पैदा हुई हैं ।

''क्या बक रहा है लड़के'', सरदार ने कठोर स्वर में कहा । ठीक कह रहा हूं, भालों को सुरक्षा के लिए होना चाहिए, सत्ता के लिए नहीं ।

''शिगाली'' सरदार गरजता हुआ खड़ा हो गया ।

''हां सरदार !'' शिगाली ने उससे प्रभावित हुए बिना ही कहा-''क़ानून अगर ताक़त है तो शांति और मानवता पनपती है, लेकिन ताक़त अगर क़ानून हो जाए तो अत्याचार बर्बरता और शोषण का जन्म होता है ।'' (शेष पृष्ठ 44 पर)

आज के कथित नेता और उनकी राजनीति

❖ डॉ॰ रमाशंकर जैतली
(रिटायर्ड प्रोफ़ेसर राजस्थान विश्वविद्यालय)

नेता का मूलत: अर्थ है आगे ले चलने वाला, ठीक राह दिखाने वाला, सही दिशा की ओर लोगों का मोड़ने वाला और आवश्यकता पड़ने पर आत्मोत्सर्ग के लिए भी तत्पर रहने वाला । आजकल यह अर्थ–भावना बहुत कुछ दबकर अप्रासंगिक होती चली जा रही है । भाषाशास्त्र का यह नियम है कि कभी-कभी शब्दों का अर्थ बिल्कुल बदल जाता है । कुछ के अर्थ संकुचित हो जाते हैं और कुछ के अर्थों में बहुत विस्तार आ जाता है । ''नेता'' शब्द इस अर्थ–विस्तार का एक अनुपम उदाहरण है । इतिहास इस बात का साक्षी है कि ''नेता'' ने जाने कितने और कैसे-कैसे अर्थ बदले हैं और उनमें से मतलब के न जाने कितनों को उसने अपने दामन में समेट रखा है । वह आज दावा तो यही करता है कि यह सब उसने ''लोककैषणा'' की सिद्धि (लोगों की सेवा करने और उनको राहत पहुंचाने) के लिए किया है । परन्तु आप्तवचन (शास्त्रों में लिखी और बहुज्ञों से सुनी बातें) और आत्मानुभव सर्वथा इसके विपरीत जाते हैं ।

आज की राजनीति और उसके अनन्य आराधक नेता दोनों ही अत्यधिक चिंता के विषय हैं । राजनीति ने तो इतने रूप और तेवर बदले हैं कि उसे उसके सही रूप में पहचान पाना संभव ही नहीं रहा । यूं तो उसमें अनभीष्ट बहुत कुछ है, पर उसकी अभीष्टम राजदृष्टि और नीति-दृष्टि का सर्वथा उसमें अभाव रहा । असाधारण प्रतिभा व अनुभव के धनी भर्तृहरि नें आज की राजनीति की बड़ी सटीक व्याख्या की है । उसे उन्होंने वारांगना (वेश्या) जैसी अनेक रूपवाली (वारांगनेच नृपनीतिर नेक रूपा) बतायां है । वारांगना सच और झूठ की गठरी से लदी-फंदी रहती है । दोनों का अपने स्वार्थ के लिए उपयोग करने तथा सच को झूठ और झूठ को सच बनाने की कला में माहिर होती है । वह अत्यंत कठोर भी हो सकती है और प्रियवादिनी भी । वह हिंसा और दयालुता दोनों को जमकर अपना सकती है । लोभ अर्थपरायणता तो उसके जीवन का ध्येय है, और यदि काम बनने को हो तो अति उदार भी हो सकती है । वह धन लुटाना भी जानती है और बटोरना भी । कोठे पर पहुंचे कामदासों और चामदासों को इस क़दर सम्मोहित कर देती है कि उनमें से हर एक को यह विश्वास हो जाता है वह उसी की है और उसी के लिए है, फलत: वह उसके लिए मर मिटने को आमादा रहता है । वह चूसने के हुनर में इतनी निपुण होती है कि बड़े से बड़े धनी-मानी लोगों और सेठ-साहूकारों को अकिंचन-दरदर का भिखारी बना देती है । यह सब होने पर भी उसके आकर्षण का जादू बरक़रार रहता है और वह हमेशा सुर्ख़ियों में रहती है ।

शब्दशास्त्र के क्षेत्र में भी इन नेताओं का बहुत बड़ा योगदान होने जा रहा है । शब्दों के सिद्ध अर्थ बदले ज़ा रहे हैं । अभी तो शुरुआत है । कुछ दिनों में ऐसे शब्दों की संख्या भारत की जनसंख्या से भी अधिक हो जाएगी । नये शब्दकोश के निर्माण की अनिवार्यता आ पड़ेगी । कुछ उदाहरण लीजिए । जब ये कहते हैं कि अमुक कार्य के लिए ये प्रतिबद्ध हैं तो प्रतिबद्ध से इनका इरादा कुछ और ही होता है । प्रति उपसर्ग के मूलत: दो अर्थ होते हैं । एक अर्थ (टूवर्ड्स) (कार्य) की दिशा में, उस ओर । प्रतिबद्ध का अर्थ है कार्य को पूरा करने के लिए उससे बंधे रहना, उसके लिए समर्पित हो जाना, जी-जान से जुट जाना । इसी अर्थ में यह शब्द प्रयुक्त होता है । यह प्रतिबद्धता सामाजिक राजनीतिक चेतना की लक्ष्योन्मुखी जागृति है । यह व्यक्ति की अस्मिता बनकर जब जगती है, दायित्वबोध पैदा करती है । ''प्रति'' का दूसरा अर्थ है बात के विपरीत जाना–बात तो उलट देना । प्रति उपसर्ग बद्ध के साथ इस अर्थ में नहीं जुड़ता, पर नेता तो शब्द को अपने स्वार्थ का मतलब देने में निपुण होता है ।

जनता, शब्द का पहला सकारात्मक अर्थ समझकर संतुष्ट हो जाती है, पर प्रयोक्ता उसके दूसरे नकासत्मक अर्थ से अपना काम निकाल ले जाता है । यही हालत ''वचनबद्ध'' और कृतसंकल्प जेसे शब्दों की है । ये धड़ल्ले से प्रयुक्त किये जाते हैं । वचन से बंधने और संकल्प लेने का दावा

पेशकर जनता को ये नेता खुश कर देते हैं पर कर्म से ये स्वयं कभी नहीं बंधते, क्योंकि इनके मन में कुछ और होता है, वचन में कुछ और कर्म में कुछ और । जब ये सुरक्षा की बात करते हैं, असुरक्षा हाथ लगती है, इस व्यवस्था को स्थापित करना चाहते हैं, अव्यवस्था से जूझना पड़ता है, जब विश्वास दिलाते हैं, अविश्वास उभरता है और जब ये औचित्य का सहारा लेते हैं, उसका अनौचित्य में पर्यवसान होता है । जब ये बोलने लगते हैं, तो श्रोताओं के लिए संकट की घड़ी आ खड़ी होती है, क्योंकि इनका आत्मविहीन प्रत्येक शब्द दुर्गन्धि से भरा होता है ।

आज यह नेताओं का युग है । कोई ऐसा क्षेत्र नहीं, जहां इनकी राजनीति ने पैर न पसारे हों । ज्ञान, विज्ञान, धर्म अध्यात्मक, कला, संस्कृति तक को इसने अपना अनुगामी बना लिया है । वैसे भारतवासी गुणगान व स्तुतिगान करने में अत्यंत उदार रहे हैं । यहां महापुरुषों की स्तुतियों का विशाल भंडार मिलेगा । अपनी भावभक्ति के अनुसार किसी ने स्त्रोत्र पंचक लिखा, किसी ने अष्टक लिखा, किसी ने दशक लिखा, किसी ने चालीसा और किसी ने शतक । विष्णु के लिए सहस्रनाम लिखा गया । पर ये सब अब ''आउट ऑफ़ डेट'' हो चुके हैं । आवश्यकता आ पड़ी है नेता सहस्रनाम लिखने की । यह कृति कला की दृष्टि से सर्वोत्तम श्रेणी में जाएगी । पिछली कृतियों में अतिशयोक्ति व अत्युक्ति का काफ़ी सहारा लिया जाता रहा । यहां सब कुछ यथार्थ होता है असंभव तक संभव हो गया है । यहां कल्पना की उड़ाने नहीं मिलेंगी। जो कुछ मिलेगा सच ही मिलेगा–बिल्कुल निपट सच । यह कहना वस्तुस्थिति का तक़ाज़ा है कि यदि काजल (रोशनाई) के विशाल पर्वत को समुद्र के पात्र (दवात) में घोल दिया जाए, धरणीतल से काग़ज़ का काम लिया जाए और कल्पतरु की लेखनी से शारदा अविराम रूप से हमेशा लिखती जाए, फिर भी वह नेताओं के गुणों का पार नहीं पा सकती । अंत में यही कहकर इन पर श्रद्धा के समुन चढ़ा रहा हूं : ''नमोह्य-नन्तरूपाय नायकाय महात्मने''।

(पृष्ठ 42 का शेष)

''चुप हो जा शिगाली'' सरदार चीख़ा–शिक्षा ने तेरा दिमाग़ ख़राब कर दिया है । एक शब्द भी अगर तेरे मुंह से निकला तो मेरा भाला तेरे सीने के पार होगा ।''

''एक बात और'' शिगाली ने जैसे उसकी बात सुनी ही न हो–अपने जीवन का फ़ैसला करने का अधिकार प्रत्येक व्यक्ति को होना चाहिए...चाहे वह पुरुष हो या महिला ।''

''तेरी बात विद्रोह है और हमारे क़बीले के क़ानून के अनुसार विद्रोह की सज़ा मौत है'' सरदार ने गरज कर कहा और अपना भाला शिगाली के सीने में उतार दिया ।''

''अत्याचारी, कमीने''...फ्रासिया ने चिल्ला कर कहा और खड़ी हो गयी–''यह क़ानून नहीं है पागलपन है, बर्बरता है ।

''गोमी'' सरदार ने चिल्ला कर कहा, ''तूने अपनी बेटी को शिक्षा दिलाकर अपराध किया है । तुझे इसकी सज़ा अवश्य मिलेगी । यह कहकर उसने अपना भाला गोमी की ओर फेंक दिया, फ्रासिया झपट कर अपने बाप के सामने आ गयी । भाला उसके सीने में उतर गया ।

Prop : Abid Hussain
09413037652
09252235194

Shop : Mujahid Hussain
09214747172

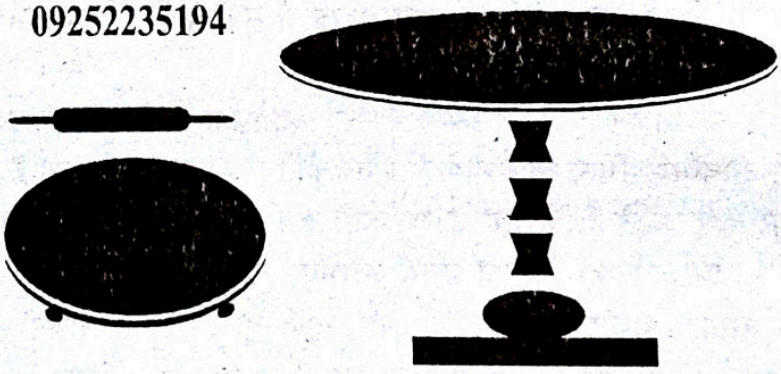

कान्ति मार्बल हैंडीक्राफ्ट

सभी प्रकार के वन पीस और ज्वाइंट पीस चकलों के निर्माता व थोक विक्रेता, मार्बल के फव्वारे तथा टेबल, टेलीफ़ोन स्टेंड, नोजल लैंप, गमले, घड़ी व फैंसी आइटम

Shop : Hotel Moti Mahal, Manglana Road, Makrana-341505
Fact : Bypass Mor, Opp : Sai Kirpa Petrol Pump, Makrana Road, Borawad (Raj.)

क्या लोगों की धार्मिक आस्था एवं विश्वास पर कुठाराघात 'देशद्रोह' नहीं है ?

■ तीर्थसिंह आर्य
(स्वतंत्र पत्रकार, रोहतक हरियाणा, मो॰ : 9992099210)

देश के पाखंडी बाबाओं, गुरुओं, योगियों और धर्मोपदेशकों की बाढ़ आयी हुई है । लगभग सभी धर्म के नाम पर गोरखधंधा कर रहे हैं । जो जितना बड़ा संत, बाबा, गुरु अथवा योगी के रूप में उभरता है, थोड़े दिन बाद उसकी काली करतूतों का लंबा-चौड़ा पिटारा खुलकर सामने आ जाता है । इस समय निर्मल बाबा की अपार कृपा का काला सच सबके सामने उजागर हो रहा है । एक आम इन्सान की भांति ग़रीबी, बेकारी और बेरोज़गारी के साथ-साथ पारिवारिक चुनौतियों की दलदल में घिरा निर्मलजीत सिंह नरुला उर्फ़ निर्मल बाबा, न तो ईंट-भट्ठे के काम में सफल हो पाता है, न लकड़ी के ब्यापार में कामयाब हो पाता है और न कपड़े की दुकानदारी ही चला पाता है और वही बेबस आदमी, गिने-चुने दिनों में सालाना करोड़ों कमाने लगता है, कोठियों, बंगलों, कारों आदि का मालिक बन जाता है और देश के सिरमौर तीन-चार दर्जन समाचार चैनलों पर सुबह-शाम अपनी कृपा बरसाने में लगा रहता है । कितने बड़े कमाल की बात है कि ईमानदारी और मेहनत वाले हर काम में असफल रहने वाला नाकारा व्यक्ति, देश के करोड़ों कर्मठ लोगों का भाग्य-विधाता बन बैठा ।

यह कोई एक निर्मल बाबा का क़िस्सा नहीं है । देश में करोड़ों सुहृदयी आस्तिक लोगों की भावनाओं पर कुठाराघात करके ऐशोआराम का जीवन जीने वाले संतों, स्वामियों, सतगुरुओं, धर्माचार्यों, धर्मोपदेशकों और योगियों की एक लंबी फ़ेहरिस्त बन चुकी है । आज कोई भी संत निर्मल नज़र नहीं आता है ।

सितम्बर 2010 में 'आज तक' समाचार चैनल ने एक स्ट्रिंग ऑपरेशन के ज़रिये देश के कई प्रख्यात धार्मिक गुरुओं की पोल खोलकर देश में सनसनी मचाकर रख दी थी । इस स्ट्रिंग ऑपरेशन में देश भर में साढ़े तीन सौ से अधिक आश्रमों का संचालन करने वाले आध्यात्मिक गुरु आशाराम बापू को आर्थिक धोखेबाज़ी, डकैती और संगीन आपराधिक प्रवृत्ति के लोगों को अपने आश्रम में शरण देने और उनका बाल भी बांका न होने देने का ठोस आश्वासन देते हुए दिखायी दिये । उनके अहमदाबाद स्थित आश्रम में जुलाई 2008 में दो छात्र रहस्यमयी परिस्थितियों में मृत पाये जा चुके हैं और उन पर तांत्रिक क्रिया करने जैसे गंभीर आरोप भी लग चुके हैं । उनके 200 अनुयायियों को नवम्बर 2009 में पुलिस पर पथराव करने के आरोप में गिरफ़्तार भी किया गया था । इसके अगले महीने दिसम्बर 2009 में उनके सबसे क़रीबी पूर्व अनुयायी राजू चांडक ने यह खुलासा करके भयंकर सनसनी मचाकर रख दी थी कि आशाराम बापू का कई महिलाओं से अवैध संबंध है और यह संत के वेश में हवस का पुजारी है । ये आध्यात्मिक गुरु गत 11 अप्रैल 2012 को इंदौर में अपने 72वें जन्मशती समारोह में प्रवचन करते-करते अमर्यादित व शर्मनाक आचरण पर उतरते नज़र आये ।

उन्होंने सत्संग के दौरान लोगों को पानी पिला रहे एक सेवक को सरेआम अभद्रता की चरमसीमा लांघते हुए 'नीच आदमी', 'गन्दे कहीं के', 'पागल सेवादार' और 'बेशर्म कहीं के' जैसे अनैतिक शब्दों से संबोधित किया और उसे 'नंगा करके घर भेजने' तक की घुड़की दे डाली । क्या यह सब कारनामें एक आध्यात्मिक गुरु के लिए अति शर्मनाक नहीं है ?

'आज तक' समाचार चैनल के स्ट्रिंग ऑपरेशन में प्रख्यात सद्गुरु सुधांशु महाराज रिपोर्टर को मॉरीशस से काला धन लाने के उपायों के साथ-साथ काले धन को सफ़ेद कैसे बनाया जाए, जैसे ईजाद किये गये तरीक़े बताने का वादा करते नज़र आये । इसके अलावा भी उन पर कई तरह के गंभीर आरोप लग चुके हैं । वर्ष 2009 में नागपुर से प्रकाशित हिन्दी समाचार पत्र 'दैनिक-1857' के एक

विज्ञापन ने देश भर में ख़ूब तहलका मचाया । इस विज्ञापन में सुधांशु जी महाराज के क़रीबी रहे महावीर प्रसाद मानसिंघका ने उनसे 22 गंभीर सवाल पूछे । इन सवालों के ज़रिये महाराज द्वारा संस्थापित एवं संचालित विश्व जागृति मिशन के माध्यम से समृद्ध दानदाताओं से हासिल मोटी रक़म के गोलमाल और नक़ली आयकर रसीदों को जारी करने जैसे अनेक गंभीर आरोप लगाये । इसके साथ ही उन्होंने महाराज को स्वलंकृत धार्मिक चेतना के पुरोधा, श्रद्धापर्व के प्रस्तोता, अनाथों के नाथ, दुखियों के मसीहा, मानवसेवा के अग्रदूत, आदिवासी वन बंधुओं के कर्णधार, तरुणों के सांस्कृतिक रक्षक, युगऋषि, कलयुग के अवतार, परम पावन सद्गुरु जैसे अलंकार को उनके कृत्यों के एकदम उलट बताते हुए, अपनी वास्तविक सच्चाई बताने के लिए भी कहा । विज्ञापन के ज़रिये महाराज से उनके श्रीमुख से उच्चारित गुरुओं के बारे में भेद खोलने का आग्रह किया गया । वर्ष 2010 में शाजापुर की एक अदालत ने फ़र्ज़ी आयकर मामले में विश्व जागृति मिशन संस्था एवं चेयरमैन सुधांशु महाराज सहित दस व्यक्तियों के विरुद्ध भी धोखाधड़ी के आरोप में आपराधिक प्रकरण पर ग़ैर-ज़मानती वारंट जारी किये थे । क्या इस तरह के लांछन और आपराधिक कृत्य किसी संत को शोभा देते हैं ।

स्ट्रिंग ऑपरेशन में स्वामी सुमनानन्द तो उत्तराखंड में 150 करोड़ का एक पॉवर प्रोजेक्ट दिलवाने की एवज में 10 से 20 प्रतिशत तक का कमीशन मांगते साफ़ दिखायी दिये । इतना ही नहीं उन्होंने अपनी राजनीतिक पहुंच के बलबूते यह प्रोजेक्ट दिलवाने के ठोस आश्वासन के साथ ही पूरी तरह काले शीशे वाली एक गाड़ी, एक समझदार, तगड़ा व भरोसेमन्द ड्राइवर और एक विदेशी पिस्तौल की मांग तक कर डाली । क्या यह सब स्वामी के चेहरे और चरित्र की असलियत का सहज अंदाज़ा लगाने के लिए काफ़ी नहीं है ? इनके अलावा शनिदेव के कथित महाभक्त और 'नमो नारायण' की टी॰वी॰ चैनलों पर भयंकर गर्जना करके लोगों की नींद हराम करने वाले बहुचर्चित दाती महाराज समाचार चैनल के स्ट्रिंग ऑपरेशन में शनि के प्रकोप से बचाने के लिए 10 से 15 लाख रुपये की रक़म मांगते नज़र आये । इन्होंने दक्षिणी दिल्ली के छत्तरपुर इलाक़े में विराट और भव्य आश्रम बना रखा है । क्या यह सब नेक कमाई से संभव हो सकता है ? इससे भी बढ़कर स्ट्रिंग ऑपरेशन में तांत्रिक भैरवानन्द उर्फ़ महाकाल का चेहरा, चाल व चरित्र बेनक़ाब हुआ । ये तांत्रिक तंत्र-मंत्र के ज़रिये किसी भी व्यक्ति का एक्सीडेंट आसानी से करवाने, किसी भी व्यक्ति को रास्ते से हटाने के साथ-साथ पूर्व में ऐसे ही कारनामों को अंजाम दिये जाने जैसे चौंकाने वाले दावे करते नज़र आये । इसके साथ ही वे दावे के साथ कहते नज़र आये कि देश के बहुत सारे प्रधानमंत्रियों और राष्ट्रपतियों से न सिर्फ़ उनकी पहचान है, बल्कि वे सब उनके चरण छूते रहे हैं । यदि इन सब दावों में ज़रा भी सच्चाई है तो क्या किसी लोकतांत्रिक देश पर यह गहरा बदनुमा दाग़ नहीं है ?

अप्रैल, 2010 में दक्षिण भारत के प्रमुख टी॰वी॰ समाचार चैनल 'सन' ने अपने स्ट्रिंग ऑपरेशन के तहत दुनिया भर में विख्यात स्वामी नित्यानन्द को दक्षिण भारत की प्रसिद्ध अभिनेत्री रंजिता के साथ हमबिस्तर होते दिखाया तो देश व दुनिया में भूचाल-सा आ गया । कभी खदानों का धंधा करने वाले स्वामी नित्यानन्द का यह शैतानी चेहरा व चरित्र जानकर उनके भक्तों का आक्रोश फूट पड़ा और उन्होंने न केवल स्वामी के पुतले जलाये, बल्कि उनके फ़ोटो पर सरेआम जूते-चप्पल भी चलाये । गत मार्च 2012 में उन्हीं स्वामी नित्यानन्द पर अपने एक विदेशी भक्त पर ज़बरदस्ती समलैंगिक संबंध स्थापित करने के आरोप लगे । सी॰आई॰डी॰ ने उनके ख़िलाफ़ रामा नगरम अदालत में चार्जशीट तक दाख़िल की । क्या स्वामी नित्यानन्द जैसे संतों के ऐसे घटिया कारनामे देशवादियों की धार्मिक श्रद्धा, भक्ति, आस्था और विश्वास पर गहरा कुठाराघात नहीं है ? क्या ऐसे संत व आध्यात्मिक गुरु सबसे बड़े देशद्रोहियों की श्रेणी में नहीं गिने जाने चाहिए ?

आज देश के कोने-कोने में, हर गली व हर नुक्कड़ में कोई न कोई पाखंडी व देशद्रोही संत, योगी, सतगुरु और धर्माचार्य मौजूद है । मार्च 2010 में कॉमनवेल्थ खेलों से ठीक पहले जब एक इच्छाधारी बाबा उर्फ़ भीमानन्द उर्फ़ राजीव रंजन द्विवेदी उर्फ़ शिवमूरत के सेक्स रैकेट का पर्दाफ़ाश हुआ तो पूरा देश सकते में आ गया । बाद में पता चला कि यह इच्छाधारी बाबा संत के चोले में सेक्स रैकेट चलाता था और देश-विदेश की पांच सौ से अधिक लड़कियों को अपने चक्रव्यूह में फंसाये हुए था । यह ढोंगी बाबा ऐसी लड़कियों का फांसता था, जो शार्टकट तरीक़े से अकूत धन-दौलत कमाने की ख़्वाहिश रखती थी । उसके सेक्स रैकेट में ज़्यादातर ऐसी लड़कियां पायी गयी जो एम॰बी॰ए॰, एयरहोस्टेस, अभिनेत्री आदि बनने की इच्छा

रखती थीं । यह बाबा इन लड़कियों से कालगर्ल के रूप में इस्तेमाल करता और उनकी काली व गन्दी कमाई का साठ प्रतिशत खुद रखता और चालीस प्रतिशत उन लड़कियों को देता था । कई धनी व बड़े व्यावसायी बाबा के उपभोक्ता थे । बाबा अपनी निजी डायरी में न केवल लड़कियों की सप्लाई का पूरा हिसाब रखते थे, बल्कि कंडोमों के प्रयोग का भी बराबर लेखाजोखा रखते थे । इस समय संगठित अपराधियों के लिए लगने वाले क़ानून मकोका के तहत यह इच्छाधारी बाबा हवालात की हवा खा रहा है । पुलिस का मानना है कि यह बाबा पकड़ में आने से पहले 25 हज़ार करोड़ से भी अधिक कमाई कर चुका था ।

डेरा सच्चा सौदा के संत गुरमीत राम रहीम सिंह, सतलोक आश्रम संचालक व कथित तत्वदर्शी संत रामपाल, प्रख्यात चन्द्रास्वामी ने पूर्व रसोइये स्वामी सदाचारी, बंगाली कापलिक बाबा आदि असंख्य बाबा, योगी, सतगुरु और धर्मोपदेशक गंभीर आरोपों के घेरे में रहे हैं । आजकल धार्मिक चैनलों की भी बाढ़-सी आयी हुई है । इन सभी चैनलों पर ये कथित संत, योगी, गुरु व धर्माचार्य चौबीसों घंटे अलौकिक ज्ञान का बखान करते देखे व सुने जा सकते हैं । आश्चर्य का विषय है कि इन सभी संतों की पदवियों और उपाधियों के नाम एक से बढ़कर एक श्रेष्ठ मिलते हैं और सभी स्वयं को सबसे बड़ा चिंतक, विद्वान और दिग्दर्शी कहलाते मिलते हैं । इन कथित गुरुओं ने धार्मिक चैनलों के साथ-साथ देश के सिरमौर समाचार चैनलों पर भी विज्ञापन कार्यक्रमों के ज़रिये अपनी घुसपैठ कर ली है । देश की 80 प्रतिशत जनता, जो मात्र 20 रुपये में गुज़ारा करने को विवश है, अपने दुखों, कष्टों और पीड़ाओं के निवारण की आशा से इन ढोंगी बाबाओं के झूठे व छल से भरे दावों के मकड़जाल में फंस जाती है । इस मकड़जाल में एक बार फ़ंसने के बाद कोई भी बाहर नहीं निकल पाता, क्योंकि इसके बाद ढोंगी बाबा उनकी आंखों पर ऐसी काली पट्टी बांध देते हैं कि वे चाहकर भी उसे उतार नहीं पाते ।

जब तक धर्म की आड़ में सरेआम धंधा करने वाले, अय्याशी करने वाले, अंधविश्वास फैलाने वाले, डराने-धमकाने वाले, धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने वाले, सच्ची श्रद्धा व विश्वास को भंग करने वाले, अनैतिक व ग़ैर-क़ानूनी आचरण करने वाले, साम्प्रदायिकता को भड़काने वाले, अधर्म पर चलने वाले, पाखंड व ढोंग रचने वाले, मिथ्या ज्ञान बांटने वाले, असंभव छावे करने वाले, चमत्कारों के नाम पर ठगी करने वाले और इन्सानियत के साथ बलात्कार करने वाले ढोंगी संत, गुरु, धर्मोपदेशक, धर्माचार्य पीठाधीश और बाबा जेल की सलाखों के पीछे नहीं पहुंचाये जाएंगे, तब तक स्थिति में कोई सुधार नहीं होगा । आम जनमानस को भी एकदम सचेत होना होगा और अपने विवेक से काम लेना होगा ।

(सा० : 'आर्य प्रतिनिधि', रोहतक, 21 मई 2012)

Jamaat-e-Islami Social Service Society (Regd), Gaya

The Society is in service in the field of education, health and Islamic understanding for the last 34 years. Our resources are limited, our task is tremendous. We seek your co-operation in the following activities:-

1. **IQRA PUBLIC SCHOOL :** Besides 800 paying students, about 150 poor or orphan girls & boys are provided free education upto Matriculation with Islamic Carriculam.
2. **MILLAT HOSPITAL :** Every year about 15000 poor & needy patients are provided with free medical treatment & medicine besides other services.
3. **INTEREST-FREE SOCIETY :** Provides short-term loan without interest to needy people.
4. **ISLAMIC INFORMATION CENTRE :** Established at Bodh-Gaya, where lakhs of foreigners visit every year during Nov - March. The Centre provides reading materials on Islam, distributes Islamic literature and invites interested visitors for discussion besides inter-faith dialogue on regular basis.

Kindly send your cheque/draft in favour of the society

(Q. Hoda) Chairman — *(Prof. M. B. Zaman)* Secretary

JISSS, Millat Campus, Leitch Road, Gaya-823001

अनाथ लड़कियों की पुकार

VOICE OF ORPHAN GIRLS

मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया)

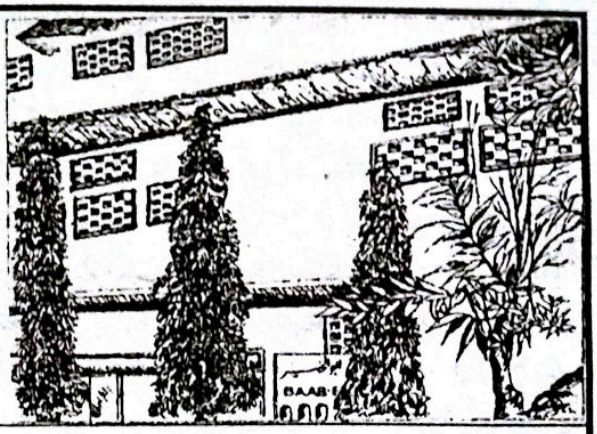

संक्षिप्त परिचय

लड़कियों के लिए आधुनिक और इस्लामी तालीम से लैस राष्ट्रीय स्तर का एक आदर्श रिहाइशी इदारा

संस्था ने अपनी उम्र के 25 वर्ष दिसम्बर 2011 में पूरे कर लिए मगर अब तक माली दुश्वारियों के सबब अपना सिल्वर (Silver Jubilee) भी नहीं मना सका ।

● 25 वर्षीय सेवाएं ● 19 विभाग ● शिक्षा : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● पत्राचार शिक्षा I,A,BA एवं Library Science ● 6 छात्राओं ने हिफ़्ज़ के साथ मैट्रिक पास किया ● प्रौढ़ शिक्षा ● वोकेशनल सेन्टर ● कटिंग और सिलाई : 6 बैच 70 छात्राएं ● ज़री वर्क्स : 3 बैच 40 छात्राएं ● 1993 ई॰ से 2011 ई॰ तक 66 अनाथ बच्चियों और 41 मां-बाप वाली बच्चियों ने मैट्रिक पास किया ● वार्षिक ख़र्च : 22 लाख रुपये से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● इदारा 120 अनाथ बच्चियों का सारा ख़र्च पूरा करता है ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक यतीम बच्ची का वार्षिक ख़र्च 12,000/- रुपये है–आप भी एक अनाथ बच्ची का ख़र्च उठा कर सवाब में शरीक हों ।

सहायता के विभिन्न रूप : ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● दीनी किताबें ● ज़मीन की ख़रीदारी और क़र्ज़ की अदायगी ● स्टाफ़ की मासिक आय के लिए 1,00,000/- रुपये से अधिक ● मां-बाप या रिश्तेदारों के नाम कमरा या हॉल बनवाना और निर्माण कार्यों के लिए ईंटें, सीमेंट, सरिया और अन्य सामग्री या उसका मूल्य देना ● यहां प्रतिवर्ष हिसाब चेक किये जाते हैं और ऑडिट होता है । ● इदारा में खुद आकर बराबरी का नमूना देखें कि अनाथ बच्चियां और वे बच्चियां जिनके मां-बाप हैं किस तरह मिलकर रहा करती हैं ।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

विदेशी चन्दा देने वाले : भारत सरकार से "मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया) को विदेशों से चन्दा लेने का इजाज़तनामा प्राप्त हो गया है ।

Forcign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

विदेशों में रहने वाले अब BANK A/c No. 300402010009042

BANK CODE NO. UBININBBJAM में अपनी रक़म भेज सकते हैं ।

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–"THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"

Address for correspondence : रक़म भेजने और संपर्क करने का पता

GENERAL SECRETARY, THE GAYA MUSLIM GIRLS' ORPHANAGE

At : KOLOWNA, P.O.: CHERKI-824237, Distt.: GAYA (BIHAR) INDIA, ☎ 0631-2734437 ● Mobile : 9934480190

E-mail : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, Website : www.gmgo.org

LOCAL DONORS मक़ामी चन्दा देने वाले

BANK CODE-UBI No. 530042 UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

CORE BANKING A/C NO.: 300402010007752

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

संस्थापक महासचिव : इक़बाल अहमद ख़ां

सन्देश प्रकृति का

तुम्हारी जिज्ञासा और मेरा कौतूहल
एक दिन पहुंचे क्षितिज के पास
अठखेलियां करती फ़ज़ाएं जहां
सतरंगे इन्द्रधनुष के साथ
पुज्य आत्माएं बसती वहां
शुभ बादलों के साथ
सभी जगहों के प्राणी मिलकर
ख़ूब रंग जमाते एक साथ ।
सूरज देता उजला सन्देश
अपने स्नेह-प्रेम के साथ
सर्वत्र बसता है जहां
अटूट प्रेम का संसार ।
तुम्हारी जिज्ञासा और मेरा कौतूहल
वापस आकर दोनों ने सोचा
सूरज, चांद, तारे, बादल
सब मिलकर हमको भी देते
प्रेम का सन्देश
फिर क्यों न बसाएं हम भी
इस धरती पर ऐसा ही संसार
प्रेम और घृणा दोनों मिलकर
जहां करें आपस में प्यार ।

शील निगम
(यू०के०)

वहम

कैसे कैसे वहम हम ने पाल रखे हैं
मन-मस्तिष्क में तान मकड़जाल रखे हैं,

फटा हुआ पोस्टकार्ड अनिष्ट दर्शाता है
हाथ में आते ही चेहरा उतर जाता है ।

बिल्ली रास्ता काटे तो हम थम जाते हैं
कुछ भी हो जाए पग आगे नहीं बढ़ता है

छींक भी अमंगल का संकेत होती है
कौआ सिर पर बैठे तो असमय मौत होती है,

आंख फड़के तो सत्यानाश होता है
दिशाशूल राहू केतू से विनाश भारी है

तेरह की संख्या अशुभ अनिष्टकारी है
न जाने कितनों पर शनीचर भारी है

बेकार के अंधविश्वास पाले हुए हैं
बुद्धि पर अलीगढ़ी ताले डाले हुए हैं

पढ़े-लिखे भी इन वहमों से नहीं उबरते हैं
बात-बात में 'टच वुड' पिंड नहीं छुड़ाएंगे ?

ओमप्रकाश पजाज
बी-2, गगन विहार, गुप्तेश्वर, जबलपुर-482001

'कान्ति' (मासिक) का अगला अंक

मानवता को इस्लाम की देन

तरह-तरह की दौड़

● विद्या प्रकाश

यूं तो बच्चों के लिए अनेक क्रीड़ा प्रतियोगिताएं होती हैं मगर कुछ प्रतियोगिताएं इतनी दिलचस्प तथा मनोरंजक होती हैं कि खिलाड़ियों से ज़्यादा लुत्फ़ दर्शक लेते हैं ।

जलेबी रेस

इस रेस में एक पतली रस्सी बांध कर उस पर थोड़े-थोड़े अन्तर पर जलेबियां लटका दी जाती हैं । कहीं-कहीं जलेबी के स्थान पर रस्सी पर अंगूर भी लटका दिये जाते हैं । प्रतिभागियों के हाथों को पीठ की तरफ़ रूमाल से कसकर बांध दिया जाता है । अब उन्हें उचक कर मुंह में जलेबी या अंगूर दबाये हुए निर्धारित समय तक पहुंचना होता है । जो प्रतिभागी सर्वप्रथम गंतव्य तक पहुंच सकने में सफल हो जाता है, उसी के सिर पर विजय का सेहरा बंधता है तथा वही जीत का हक़दार माना जाता है । इस खेल में शर्त यह है कि जलेबी या अंगूर न मुंह के नीचे गिरे और न ही खिलाड़ी उसे खा जाए ।

चम्मच रेस

इस रेस में एक चम्मच को मुंह से पकड़ना होता है । चम्मच में कांच का कंचा रखा रहता है । संकेत पाते ही रेस शुरू हो जाती है । जो चम्मच से कंचे को गिराये बिना सर्वप्रथम गंतव्य तक पहुंच सका, वही विजयी घोषित किया जाता है।

बोरा रेस

इस रेस में एक बोर में प्रतिभागी की दोनों टांगें बांध दी जाती है तथा उसे मेंढक की तरह कूद-कूदकर लक्ष्य तक पहुंचना होता है । जो किसी प्रकार गिरते-पड़ते मंज़िल तक पहुंच सकने में कामयाब हो जाता है, उसे ही विजय की ट्राफ़ी मिलती है ।

मैच रेस

इस रेस में प्रतिभागियों को काग़ज़ तथा पेंसिल थमा दी जाती है तथा ब्लैक बोर्ड पर दो पंक्तियों की जोड़ या घटाना लिखा होता है । दौड़ते हुए जो निश्चित समय पर सर्वप्रथम गणितीय प्रश्न हल कर लेता है, उसे विजयी मान लिया जाता है ।

पतली चोंच वाले गिद्ध

पतली चोंच वाले गिद्ध शक्ल सूरत में परंपरागत भारतीय गिद्ध से काफ़ी मिलते-जुलते हैं । रायल सोसायटी फॉर द प्रोटेक्शन ऑफ़ द बर्ड्स ने वर्ष 2009 में इनकी संख्या 1000 से भी कम बतायी थी । अब इस पक्षी के विलुप्त होने की आशंका जतायी जा रही है । इस प्रजाति के गिद्ध को लंबी चोंच वाला गिद्ध भी कहा जाता है ।

यह पक्षी स्वदेश के हिमाचल प्रदेश, उड़ीसा और असम जैसे राज्यों के अलावा बंगलादेश, नेपाल, बर्मा तथा कम्बोडिया जैसे देशों में भी पाया जाता है ।

यह पक्षी वृक्षों पर घोंसला बनाकर रहता है और लगभग 95 सेंटीमीटर लंबा मटमैले रंग का होता है । लेकिन सिर काला तथा नुकीला होता है । इसकी काली चोंच बीच में संकरी होती है । यह मृत जानवरों तथा चिड़ियों को शौक़ से खाता है ।

आजकल खेतों में खाद्यान्न की पैदावार में इज़ाफ़ा के लिए जिस प्रकार रासायनिक उर्वरकों का अंधाधुंध इस्तेमाल किया जा रहा है, इन पक्षियों पर उसका बुरा प्रभाव पड़ रहा है तथा इनकी संख्या दिन-प्रतिदिन घट रही है ।

दरअस्ल खेतों में दाना चुगने वाली चिड़ियों का भक्षण करने की वजह से रासायनिक उर्वरकों का अंश गिद्ध के शरीर में आ जाता है तो उसके लिए ख़तरनाक, हानिकारक तथा प्राणघातक सिद्ध होता है । इस पक्षी को विलुप्त होने से बचाने के लिए हमें आवश्यक रूप से सावधानी बरतनी होगी ।

● विद्या प्रकाश

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से मुद्रित ।
फोन: 011-26949430
संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।

कान्ति

KANTI Weekly

Since 1958

Mechanical Data

Over all size	40 x 27
Printed area	36 x 23
Length of the columns	36 cm
Width of the columns	4 cm
Number of columns in a page	5
Printing Process	offset

Subscription *(in India)*

1 year	₹ 250.00
2 years	₹ 450.00
3 years	₹ 700.00
5 years	₹ 1,000.00
Life membership	₹ 8,000.00

Overseas	1 year	210.00 (Saudi Riyal)

Advertisement Tariff *(Size 36 x 23) in cms*

	Colour	B / W
Front Page	₹ 50.00	₹ 25.00
Back Page	₹ 40.00	₹ 23.00
Public Notice & Company - Prospectus etc.	₹ 40.00	₹ 25.00
Full Page	₹ 25,000.00	₹ 15,000.00
Half Page	₹ 12,000.00	₹ 8,000.00
Quarter Page	₹ 7,000.00	₹ 5,000.00

On contract basis also, advertisement are welcome, rates on contract basis differ from regular rates according to the number of insertions.

Term & Condition

- Advertisements containing obscene matters, feminine sketches, interest dealings. Liquor, cinema and film, etc. Will not be entertained.
- The management of Kanti reserve the right to reject any advertisement for publishing without assigning any reason at any stage.
- in case of any dispute jurisdiction will be at Delhi.

Posted on 20-21 August 2012
September 2012
E-mail: kantimonthly@hotmail.com
Publishing Date: 18.08.2012

हिन्दी महिलाओं की मासिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2012-2014
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2012-14

आप

कान्ति

साप्ताहिक एवं मासिक में
इश्तिहार क्यों दें ?

इस लिए कि:

- यह आपका लोकप्रिय अखबार है और हिन्दी इलाकों में कसरत से पढ़ा जाता है।
- यह इंसानी कद्रों (मूल्यों) का महाफिज़ और सेहतमन्द सहाफत (पत्रकारिता) का प्रतीक है।
- इसमें छपने वाले तथ्य और सामग्रियां स्तरीय एवं निश्पक्ष (गैर जानिबदार) होती हैं। इसलिए इसके इश्तिहारात विश्वसनीय समझे जाते हैं।
- यह खिदमते खल्क का सशक्त माध्यम है अत: प्रचार का बेहतरीन और भरोसेमन्द जरिया है।